अंक-12

वर्ष 2024

राजभाषा स्मारिका

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

पूर्वोत्तर राज्यों की क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में श्री शैलेश कुमार सिंह, सचिव (ग्रामीण विकास) महोदय का स्वागत करते हुए अधिकारी

पूर्वोत्तर राज्यों की क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री शैलेश कुमार सिंह, सचिव (ग्रामीण विकास)

सिविल सेवा परीक्षा 2023 के माध्यम से चयनित नव नियुक्ति अधिकारियों को संबोधित करते हुए श्री शैलेश कुमार सिंह, सचिव (ग्रामीण विकास)

अगरतला में आयोजित क्षेत्रीय समीक्षा बैठक में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री अमित शुक्ला, महानिदेशक

लखनऊ में एफडीआर पर आयोजित कार्यशाला के छायाचित्र

पीएसयू पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रदीप अग्रवाल, निदेशक

वर्ष 2023 के लिए डाटा सेंटर चैंपियन पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रदीप अग्रवाल, निदेशक

नववर्ष 2024 के आगमन पर आयोजित समारोह के छायाचित्र

भारतीय रोड कांग्रेस के वार्षिक सत्र के छायाचित्र

आईसीएएस (ICAS), (OTs) अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम के छायाचित्र

राजभाषा स्मारिका

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी की वार्षिक गृह पत्रिका

राजभाषा हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार

- मुख्य संरक्षक का जीवन वृत्त
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेख
- जनमानस के लिए लोक रूचि के विषय
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विविध पहलू
- समसामयिक की जानकारी
- विभिन्न यात्रा वृतांत
- पैराणिक कथाएं एवं कविताएं

मुख्य संरक्षक
श्री अमित शुक्ला
महानिदेशक, एन.आर.आई.डी.ए.

संरक्षक
श्री देविंदर कुमार
निदेशक (वित्त एवं प्रशासन)

मुख्य संपादक
श्री सुनील कुमार गुप्ता
उप निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

संपादन समिति के सदस्य
सभी प्रभागों के निदेशकगण

संकलनकर्ता
रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

पत्रिका आंतरिक परिचालन हेतु है

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	नाम/पदनाम	पृष्ठ सं.
1.	महानिदेशक, एवं दो अधिकारियों के व्यक्तित्व की झलक	श्री सुनील कुमार गुप्ता, उप निदेशक (वि.एवं प्र.)	1
2.	महानिदेशक महोदय के साथ की गई छत्तीसगढ़ यात्रा का संस्मरण	श्री कृष्ण मुरारी सिंह, निदेशक, ग्रामीण विकास	2
3.	खुश और संतुष्ट कैसे रहें : जीवन के हर पहलू में संतोष का मार्ग	श्री प्रदीप अग्रवाल, निदेशक (परियोजना–I)	7
4.	जॉर्डन यात्रा– एक संस्मरण	श्री देविंद्र कुमार, निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	11
5.	जब आज आप दूसरों से बात करते समय सोचते है कि आप उनसे अधिक होश्यिार है	श्री विशाल श्रीवास्तव, आईसीटी परियोजना निदेशक	16
6.	पीएमजीएसवाई : ग्रामीण जीवन को बदलने वाली चौबीस वर्ष की यात्रा	श्री आशीष श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक (तकनीकी)	17
7.	हिमाचल प्रदेश के सेतु पुरुष (ब्रिज मैल)	श्री भवेश चतुर्वेदी, उप निदेशक (पी– I)	18
8.	डिजीटलीकरण से लाभ एवं हानियाँ	श्री राजकुमार अरोड़ा, सहायक निदेशक (वि.एवं प्र.)	19
9.	डिजीटल विभाजन एवं ज्ञान सूचना केन्द्र	श्री रजनीश कुमार, सहायक निदेशक (वि.एवं प्र.)	21
10.	मधुबनी चित्रकला	श्री जीतेन्द्र झा, सहायक निदेशक (वि.एवं प्रशा.)	23
11	ग्रामीण विकास में ग्रामीण सड़कों की भूमिका	श्री पंकज कुमार सिन्हा, सहायक निदेशक (वि.एवंप्र.)	26
12	प्रथम गुरु माँ की शिक्षा	श्री दीपक गुप्ता, लीड प्लानिंग एण्ड जीआईएस, आईसीटी	28
13.	पीएमजीएसवाई– ग्रामीण विकास धारा (कविता)	श्री सुरेन्द्र चौधरी, युवा सिविल अभियन्ता (परि-III)	29
14.	मेरे पापा (कविता)	श्री वरूण शाक्य, युवा सिविल अभियन्ता (परि-I)	29
15.	उभरती तकनीकः कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हमारे जीवन में उसकी निर्भरता	श्री शिवम गोस्वामी, परि. अभियन्ता (आईसीटी)	30
16.	रामेश्वरम की यात्रा	श्री अक्षय कागला, युवा सिविल अभियन्ता (तक.)	31
17.	इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी): डिजिटल युग में अद्वितीय प्रौद्योगिकी	श्री सोनू कुमार, परियोजना अभियन्ता (आईसीटी)	32
18.	क्वांटम कंप्यूटिंगः भविष्य की कंप्यूटिंग क्रांति	सुश्री अनु ठाकुर, उत्पाद प्रबंधक (आईसीटी)	33
19.	स्वच्छ बने भारत (कविता)	श्री विशाल कुमार, युवा सिविल अभियन्ता (परि.-III)	34
20	मेहनत और किस्मत	श्री पंकज शर्मा युवा सिविल अभियन्ता(परि.-III)	34
21.	गांधी नगर के दांडी कुटीर की यात्रा	श्री उत्सव मोढ़, युवा सिविल अभियन्ता (परि.-I)	35
22.	रोबोटिक ऑटोमेशनः विश्वास की नई ऊँचाईयां	श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़,उत्पाद प्रबंधक (आईसीटी)	36
23.	सड़कों का जाल पर्यावरण के साथ	श्री अभिषेक कुमार, यु.सि. अभियन्ता (आईसीटी)	37
24.	कुलदेवी एवं कुलदेवता का महत्व	श्री विजय शर्मा, टैक्नीकल लीड (एनआईसी)	38
25.	पीएमजीएसवाई सड़कों में स्टील स्लैग का उपयोग	श्री शुभम चौरसिया, युवा सिविल अभियन्ता(परि.-II)	40
26.	शिक्षा के क्षेत्र में जीआईएस का उपयोग	सुश्री दिव्या गौतम, युवा सिविल अभियन्ता(तक.)	42
27.	मौत से हम नहीं, मौत हमसे डरती है:कैप्टन मनोज पाण्डे	श्री मोहित माथुर, सहायक प्रबंधक (तकनीकी)	45
28.	सफलता की कुंजी	श्री नवीन जोशी, सहायक प्रबंधक (परियोजना-I)	47
29.	नई प्रौद्योगिकी से सड़क निर्माणः देश की प्रगति का प्रमाण	श्री विजय इंग्ले, प्रोग्रामर	48
30.	देवभाषा : संस्कृत	सुश्री निधि मगलानी, सहायक प्रबंधक (परि.-II)	49
31.	अद्भुत कहानी 'करमाबाई'	श्री प्रदीप चितौड़, लेखापाल (वि.एवं प्रशा.)	50

क्र.सं.	रचना	नाम/पदनाम	पृष्ठ सं.
32.	मेरे गाँव की सुबह (कविता)	श्री सचिन कटियार, का. सहायक (वि.एवं प्र.)	52
33.	विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर बने रहने की प्रेरणा	श्री देवीसिंह बैंसला, निजी सहायक (वि.एवं प्र.)	52
34.	दांपत्य जीवन के सुखद 25 वर्ष	श्री रामकृष्ण पोखरियाल, नि. सहायक (वि.एवं प्र.)	53
35.	तिरुपति बालाजी मंदिर के दर्शनलाभ	श्री रोहित कुमार, निजी सहायक (तकनीकी)	57
36.	संत का ज्ञान	सुश्री प्राची बिष्ट, कार्यकारी सहायक (परि.-III))	59
37.	किसान की समस्या	सुश्री गुलशन, निजी सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	60
38.	पहाड़ी जीवन	सुश्री रेखा जुयाल, कार्यकारी सहायक (तकनीकी)	62
39.	समय की कीमत	श्री चौधरी ललित मोहन का. सहायक (वि.एवं प्र.)	63
40.	भक्त और भगवान	श्री पवन, कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)	64
41.	संघर्ष	श्री नितिन कुमार, कार्यालय सहायक (वि. एवं प्र..)	65
42.	बड़प्पन (कविता)	श्री लवली सूदन, कार्यालय सहायक (परि.-III)	66
43.	अंगदान, कार्य महान (कविता)	श्री दीपांकर कुमरा, कार्यालय सहायक (परि.I-III)	66
44.	आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है	मोहम्मद जावेद, कार्यालय सहायक (परि.-II)	67
45.	सफलता की कुंजी	सुश्री दीपिका दीवान, वरि.का.सहायक(परि.-III)	68
46.	मेरी माँ (कविता)	सुश्री सेंटी एंटोनी, सहायक प्रबंधक (परि.-III)	69
47.	क्यों होता है, ऐसा.....?(कविता)	सुश्री तन्वी सक्सेना, कार्यालय सहायक (वि.एवं प्र.)	69
48.	श्री जगन्नाथ पुरी यात्रा वृतान्त	सुश्री शिपी गुप्ता, कार्यालय सहायक (वि. एवं प्र.)	70
49.	शब्दावली	1.श्री भूपाल सिंह, सहायक प्रबंधक (वि.एवं प्र.)	72
		2.श्री हिशांत कुमार गोयल, का. सहायक (वि.एवंप्र.)	72
50.	समय की महत्ता	श्री सुनील कुमार, आईटी	73
51.	उत्तराखंड की एक खास झलक (कविता)	श्री प्रदीप सिंह, ऑफिस बॉय (परियोजना-II)	73
52.	परिवार की एकता	श्री संजय चौहान, संदेशवाहक	74
53.	अनमोल वचन	श्री अनिल कुमार, प्रेषक	75
54.	महाभारत चक्रव्यूह	श्री भवानी मिश्र, एमटीएस (वि.एवं प्र.)	76
55.	पारिवारिक मतभेद को जग जाहिर ना करे	मो. आसिफ (वि.एवं प्र.)	78
56.	डर है यदि अगर गिर जाने का तो शिखर तुम्हारे (कविता)	मो. शाहिद, स्टोर स्टेशनरी इंचार्ज	78
57.	शापित हवेली	श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह, एमटीएस	79
58.	देवभूमि उत्तराखंड का रहस्य	श्री उमेश सिंह, एमटीएस (वित्त एवं प्रशा.)	80
59.	दोस्ती (कविता)	श्री संजय कुमार, ऑफिस बॉय (परियोजना-III)	81
60.	घमंडी का सिर नीचा	मो. आदिल, (वित्त एवं प्रशा.)	81
61.	खुद को ज्ञानी मानने वाला सबसे बड़ा अज्ञानी है	श्री अर्जुन कुमार, सुरक्षा गार्ड	82
62.	गलती से सीखकर, सुधारना ही सुखद जीवन का आधार है	श्री सुन्दर राय, सुरक्षा गार्ड	82
63.	आन की बात	श्री निजूम बोरो, सुरक्षा गार्ड	83
64.	उत्तराखंड (कविता)	श्री बिशन सिंह, कैंटिन इंचार्ज	83
65.	कुछ काम करो (कविता)	श्री मनीष कुमार, सफाई कर्मचारी	84
66.	मेहनत (कविता)	श्री रवि, सफाई कर्मचारी	84
67.	शेर और हिरण की कहानी	श्री रंजीत कुमार, माली	84
68.	सुप्रसिद्ध साहित्यकार : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर"	राजभाषा अनुभाग	85

महानिदेशक की कलम से.....

मुझे यह जानकर विशेष हर्ष की अनुभूति हुई है कि राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी द्वारा 2023–24 में हिन्दी पत्रिका – **"राजभाषा स्मारिका" का 12वां अंक** प्रकाशित किया जा रहा है। यह और भी प्रशंसनीय कार्य है कि पत्रिका के इस अंक में विभिन्न विषयों का समावेश करके इसकी रोचकता को बढ़ा दिया है तथा इसके पाठकों और पठनीय क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि करने का एक सफल प्रयास किया गया है। साथ ही, ग्रामीण विकास के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी द्वारा किए गए और किए जाने वाले कार्यों को भी जानकारी देने का सफल प्रयास किया गया है।

मुझे बताया गया है कि कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की प्रगामी प्रगति के लिए भी वर्षभर अनेक कदम उठाए गए हैं। विगत वर्ष में कार्यालय के स्टाफजनों के लिए 4 हिन्दी कार्यशालाओं और हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक तिमाही में हिन्दी की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। कार्यालय के सभी कंम्प्यूटरों में हिन्दी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई। कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपना अधिकतम काम–काज हिन्दी में ही करते हैं। हिन्दी माह के दौरान 8 हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और नियमानुसार पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। कार्यालय से प्रति वर्ष प्रकाशित **हिन्दी गृह पत्रिका –राजभाषा स्मारिका के 11वें अंक** का विमोचन किया गया। राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति में सुधार के लिए किए गए प्रयासों के फलस्वरूप कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। वर्तमान में कार्यालय में हिन्दी पत्राचार, धारा 3(3) के अनुपालन एवं नोटिंग/ड्राफ्टिंग की स्थिति उत्तम है।

कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति के मूल्यांकन के आधार पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा कार्यालय को **उत्कृष्ट कार्यालय** की श्रेणी में रखा गया है।

पत्रिका में प्रौद्योगिकी और तकनीक संबंधी लेख/कविता/कहानी /चुटकुले/यात्रा वृत्तांत प्रस्तुत कर पत्रिका की उपयोगिता बढ़ाने के लिए सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

मेरी शुभकामना है कि इस पत्रिका की सामग्री सभी के लिए लाभप्रद और कार्यालय के कार्यों को करने में सहायक सिद्ध हो और संतुष्टि प्रदान करने वाली बने।

अमित शुक्ला
संयुक्त सचिव (आरसी)
एवं
महानिदेशक, एन.आर.आई.डी.ए

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

आप सभी के पूर्ण सहयोग के परिणामस्वरूप, अपने कार्यालय की गृहपत्रिका – राजभाषा ने अपनी 11 वर्ष की यात्रा पूरी कर ली है। अब इसने शैशव काल से निकलकर 12 वर्ष की किशोर अवस्था में प्रवेश कर लिया है। इसलिए इस वर्ष इस पत्रिका का 12वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

यह प्रयास किया गया है कि पत्रिका के इस अंक में संकलित सामग्री में ग्रामीण विकास, सामाजिक, यात्रा वृतांत, कहानियाँ, कविताएँ, प्रशासनिक एवं समसामयिक लेखों का समावेश किया जाए, जिससे इसकी सामग्री सभी वर्गों के पाठकों के लिए पठनीय रहे। आपसे पुनः अनुरोध है कि आप अपनी लेखनी की प्रतिभा ऐसे ही प्रदर्शित करके लेख भेजते रहें। पत्रिका आपके लेखन को पूर्ण सम्मान देगी।

मेरी शुभकामना है..

"आपकी लेखनी का काम कभी भी न बंद हो,
लिखते रहें कविता, कहानी, लेख या कोई छंद हो।
लेखन ही तो पत्रिका का मान है,
पत्रिका को हर लेख पर अभिमान है।
लेखनी से ज्ञान की गंगा अनवरत बहती रहे,
और हर लेखनी यूँही सदाँ चलती रहे।
हमें आपके लेख ऐसे ही मिलते रहें,
पत्रिका प्रकाशन में योगदान देते रहें।

(सुनील कुमार गुप्ता)
मुख्य संपादक

हम सभी के मुख्य संरक्षक, मार्गदर्शक एवं पथप्रदर्शक आदरणीय महानिदेशक महोदय एवं कार्यालय में कार्यभार संभालने वाले नए अधिकारियों के **व्यक्तित्व की एक झलक ।**

श्री अमित शुक्ला

संयुक्त सचिव (आरसी)

एवं

महानिदेशक, राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

हम सभी के मुख्य संरक्षक, मार्गदर्शक एवं पथप्रदर्शक, **श्री अमित शुक्ला, संयुक्त सचिव (आरसी) एवं महानिदेशक,** राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी ।

श्री अमित शुक्ला का जन्म उत्तर प्रदेश के शहर बरेली में परमपूज्य पिताजी श्री अर्जुन प्रसाद शुक्ला एवं परमपूज्या माताजी श्रीमती अर्चना शुक्ला के यहाँ दिनांक 20.07.1973 को हुआ। 10वीं एवं **माध्यमिक शिक्षा प्रथम श्रेणी** में उत्तीर्ण। बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि के इस बालक ने **'भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर'** से **'सामग्री एवं धातुकर्म अभियन्त्रण (मेटीरियल एण्ड मैटेलर्जीकल इंजीनियरिंग)'** में वर्ष 1995 में **बी.टेक.** की उपाधि प्राप्त की।

'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी' से 'वानिकी' विषय में 'आई.सी.एन.एफ.ए. एसोसिएट' उपाधि भी प्राप्त की।

वर्ष 1999 में 'भारतीय वन सेवा' में चयन। अपनी कार्यकुशलता, सफल नेतृत्व तथा आत्मविश्वास के कारण निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किए हैं:–

- वन्य जीव संरक्षण, शहरी वानिकी पहलों का कार्यान्वयन।
- शिक्षा विभाग में सुधार तथा विश्वविद्यालय नीति 'सीएसएस' का कार्यान्वयन ।
- परिवहन को सुगम बनाना एवं इनहाउस एमआईएस और जीआईएस क्षमताओं को उन्नत करना।
- जलजीवन मिशन कार्यान्वयन एवं आईटी पारिस्थितिकी तंत्र की व्यवस्थित देखभाल करना।
- ग्रामीण कनेक्टिविटी, पीएमजीएसवाई एवं पीएम–जनमन सड़क संपर्क योजना का कार्यान्वयन।

उपलब्धियां / प्राप्त पुरस्कार :

इंदिरा गांधी वन अकादमी में वर्ष 2002 में प्राप्त पुरस्कार

- अकादमिक उत्कृष्टता के लिए 'केपी सग्रेया' पुरस्कार प्राप्त।
- बहुमुखी प्रतिभा (ऑल राउंड) वन संरक्षक पुरस्कार।
- वन्य जीव प्रबंधन के लिए 'ईपी जी' पुरस्कार।

लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए 2021 में 'मुख्यमंत्री पुरस्कार'

हमारी शुभकामनाएँ है कि भविष्य में वे सर्वोच्च पद को सुशोभित करें।

श्री श्रीधर मणि त्रिपाठी, संयुक्त निदेशक (पी– I)

श्री श्रीधर मणि त्रिपाठी ने आईआईटी, दिल्ली से निर्माण अभियन्त्रण एवं प्रबंधन में एम टेक**ए** एनटीपीसी स्कूल ऑफ बिजनेस, नोएडा से पीजीडीएम और भारतीय विधि संस्थान से कॉरपोरेट विधि और प्रबंधन में स्नातकोतर डिप्लोमा प्राप्त किया। इन्होंने 2005 में एनटीपीसी में कार्यपालक प्रशिक्षु के रूप में सेवा प्रारंभ की। हिमाचल प्रदेश स्थित कोलडैम हाइड्रो पावर परियोजना में अपनी पहली तैनानी के दौरान अर्थ एवं रॉकफिल बांध के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एनटीपीसी खारगोन परियोजना में अपनी तैनाती के दौरान निर्माण संबंधी अवसरंचना कार्यों (संयत्र के नेटवर्क) के सिविल निर्माण का नेतृत्व किया। इन्हें परियोजना प्रबंधन और सिविल निर्माण में 19 वर्ष का दीर्घकालीन अनुभव है।

श्री भवेश चतुर्वेदी, उपनिदेशक (पी– I)

श्री भवेश चतुर्वेदी को नगर निगम, शिमला एवं लोक निर्माण विभाग, हि.प्र. में कनिष्ठ अभियंता के रूप में, प्रदेश की सभी सड़कों के रख–रखाव के लिए प्रबंधन प्रणाली का प्रयोग कराने के लिए सहायक अभियन्ता के रूप में एवं हिमाचल प्रदेश ग्रामीण सड़क विकास एजेंसी में अधिशासी अभियन्ता के रूप में कार्य करने का अनुभव है। इन्होंने रख–रखाव नीति बनाने में, ई–मार्ग लागू कराने में, लोक निर्माण विभाग में वर्क एंड अकाउंट मैनेजमेंट इनफॉर्मेशन सिस्टम (वामिस) लागू कराने में एवं अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन में पीबीएमसी आधारित तथा सामुदायिक निविदा आधारित सड़कों के रख–रखाव के लिए पायलट प्रोजेक्ट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्हें विभिन्न पदों पर कार्य करने का 25 वर्ष का दीर्घकालीन अनुभव प्राप्त है।

(सुनील कुमार गुप्ता)
मुख्य संपादक

महानिदेशक महोदय के साथ की गई छत्तीसगढ यात्रा का संस्मरण

परिचय

मध्य भारत में स्थित छत्तीसगढ़ इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता से समृद्ध राज्य है। मुझे अपने प्रभाग के संयुक्त सचिव और महानिदेशक (एनआरआईडीए) महोदय श्री अमित शुक्ला जी के साथ हाल ही में दिनांक 20.8.24 से 22.8.24 तक इस राज्य की यात्रा करने का अवसर मिला। हम उस दौरे का अपना अनुभव आपके साथ साझा कर रहे हैं।

भौगोलिक स्थिति

छत्तीसगढ़ भारत के मध्य में स्थित है, जिसकी सीमा उत्तर–पश्चिम में मध्य प्रदेश, उत्तर में उत्तर प्रदेश, पूर्व में झारखंड, दक्षिण–पूर्व में ओडिशा, दक्षिण–पश्चिम में तेलंगाना और महाराष्ट्र से लगती है। राज्य की राजधानी रायपुर है।छत्तीसगढ़ भारत में सबसे तेजी से विकास करने वाले राज्यों में से एक है। इसका सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) रु.5.09 लाख करोड़ (यूएस$61 बिलियन) (2023–24 अनुमान) है, प्रति व्यक्ति जीएसडीपी रु.152,348 (यूएस$1,800) (2023–24 अनुमान) है। संसाधन संपन्न राज्य, इसमें देश का तीसरा सबसे बड़ा कोयला भंडार है और यह देश के बाकी हिस्सों को बिजली, कोयला और इस्पात प्रदान करता है। मध्य प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश के बाद यह देश का तीसरा सबसे बड़ा वन क्षेत्र भी है, जिसमें राज्य का 40% से अधिक भाग वनों से आच्छादित है।

व्युत्पत्ति

छत्तीसगढ़ नाम की उत्पत्ति के बारे में कई सिद्धांत हैं, जिसे प्राचीन काल में दक्षिण कोसल के नाम से जाना जाता था, जो कीराम की माँ कौशल्या का मूल स्थान था। ''छत्तीसगढ'' को बाद में मराठा साम्राज्य के समय में लोकप्रिय बनाया गया और पहली बार 1795 में एक आधिकारिक दस्तावेज में इसका प्रयोग किया गया।

सबसे लोकप्रिय सिद्धांत का दावा है कि छत्तीसगढ़ का नाम क्षेत्र के 36 प्राचीन किलों (छत्तीस से जिसका अर्थ है छत्तीस और गढ़ का अर्थ है किला) से लिया गया है। पुराने राज्य में 36 डेमेस्नेस (सामंती क्षेत्र) थे: रतनपुर, विजयपुर, खरौंद, मारो, कौतगढ़, नवागढ़, सोंधी, औखर, पदरभट्ठा, सेमरिया, चंपा, लाफा, छुरी, केंदा, मातिन, अपरोरा, पेंड्रा, कुरकुटी–कांड्री , रायपुर, पाटन, सिमागा, सिंगारपुर, लवन, ओमेरा, दुर्ग, सारधा, सिरासा, मेंहदी, खल्लारी, सिरपुर, फिंगेश्वर, राजिम, सिंघनगढ़, सुवरमार, टेंगनागढ़ और अकलतरा। हालाँकि, अधिकांश इतिहासकार इस सिद्धांत से असहमत हैं क्योंकि 36 किलों की खोज या पहचान नहीं की जा सकी है।

यह भी कहा जाता है कि एक समय इस क्षेत्र में 36 गढ़ थे, इसीलिए इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। लेकिन गढ़ों की संख्या बढ़ने के बाद भी नाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, छत्तीसगढ़ भारत का वह राज्य है जिसे 'महतारी' (माँ) का दर्जा दिया गया है। भारत में दो क्षेत्र ऐसे हैं जिनका नाम विशेष कारणों से पड़ा है – एक 'मगध' जो बौद्ध विहारों की अधिकता के कारण "बिहार" बन गया और दूसरा 'दक्षिण कोसल' जो छत्तीस गढ़ों के समावेश के कारण "छत्तीसगढ़" बन गया। विशेषज्ञों और इतिहासकारों में एक और मत अधिक प्रचलित है कि छत्तीसगढ़ चेदिसगढ़ का अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ है राज या "चेदियों का साम्राज्य" प्राचीन काल में छत्तीसगढ़ क्षेत्र आधुनिक ओडिशा में कलिंग के चेदियों राजवंश का हिस्सा था। मध्यकाल में 1803 तक, वर्तमान पूर्वी छत्तीसगढ़ का एक बड़ा हिस्सा ओडिशा के संबलपुर साम्राज्य का हिस्सा था।

अतीत और वर्तमान इतिहास

छत्तीसगढ़ में सातवाहन और कलचुरी के प्राचीन साम्राज्यों से जुड़ी एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यह क्षेत्र मराठा साम्राज्य के दौरान सत्ता का एक प्रमुख केंद्र था और बाद में ब्रिटिश भारत का हिस्सा बन गया। स्वतंत्रता के बाद, छत्तीसगढ़ 2000 में अलग राज्य बनने तक मध्य प्रदेश का हिस्सा रहा।

पर्यटन परिप्रेक्ष्य

छत्तीसगढ़ पर्यटकों के आकर्षण का खजाना है, जिसमें शामिल हैं:

– भोरमदेव मंदिर और रतनपुर किला जैसे प्राचीन मंदिर और स्मारक

– कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान और चित्रकोट जलप्रपात जैसी आश्चर्यजनक प्राकृतिक सुंदरता

– बस्तर दशहरा जैसे जीवंत आदिवासी संस्कृति और त्यौहार

– मैनपाट और जगदलपुर जैसे खूबसूरत हिल स्टेशन

यात्रा कार्यक्रम

हमने 20 अगस्त से 22 अगस्त 2024 तक छत्तीसगढ़ का दौरा किया, ताकि पीएमजीएसवाई, आरसीपीएलडब्ल्यूईए और पीएम–जनमन के तहत स्वीकृत कार्यों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की जा सके और साथ ही राज्य में विभिन्न ग्रामीण विकास योजनाओं के कार्यान्वयन की भी संयुक्त सचिव महोदय द्वारा समीक्षा की जा सके। 20 अगस्त को रायपुर पहुंचने के तुरंत बाद, छत्तीसगढ़ ग्रामीण विकास एजेंसी के सीईओ और पीडब्ल्यूडी के सचिव के साथ एक विस्तृत समीक्षा बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता संयुक्त सचिव महोदय की गई । राज्य के पुलिस महानिरीक्षक और छत्तीसगढ़ ग्रामीण विकास एजेंसी और पीडब्ल्यूडी के अन्य अधिकारी भी बैठक में मौजूद थे। राज्य ने यह सूचित किया की इन सड़कों की सर्वोच्च स्तर पर निगरानी की जा रही है और इन कार्यों को निर्धारित समय–सीमा तक पूरा करने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। राज्य ने यह भी सूचित किया कि पीएम–जनमन के अंतर्गत 333 स्वीकृत कार्यों में से 321 की निविदाएं जारी की जा चुकी हैं।

संयुक्त सचिव महोदय ने राज्य के ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दे पर पंचायती राज और ग्रामीण विकास सचिव के साथ भी विस्तृत बैठक की।

इसके बाद मैंने संयुक्त सचिव तथा राज्य के वरिष्ट अधिकारियों के साथ धमतरी जिले में पीएम–जनमन के तहत बनाई जा रही एक सड़क का भी निरीक्षण किया और उस गाँव का भी दौरा किया, जिसे कनेक्टिविटी प्रदान करने का प्रस्ताव है। इसके अलावा, कुछ नवनिर्मित पीएम–जनमन घरों का निरीक्षण किया गया और मुझे काम की गुणवत्ता संतोषजनक लगी। मैंने लाभार्थियों से भी बातचीत की और वे योजनाओं से खुश थे। जो सड़कें बनाई जा रही हैं, वे अच्छी गुणवत्ता की हैं क्योंकि रैंडम गुणवत्ता जांच के दौरान उनकी गुणवत्ता विनिर्देशों के अनुसार पाई गई।

इसके बाद वहाँ से लौटते समय जिले के कलेक्टर से भी संयुक्त सचिव के साथ शिष्टाचार मुलाकात हुई।

द्वितीय दिन (22 अगस्त 2024)

22 अगस्त को संयुक्त सचिव महोदय और मैंने कांकेर और आस–पास के इलाकों का दौरा किया और महिला स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों और आरडी योजनाओं के अन्य लाभार्थियों से बातचीत की। सभी इस बात की काफी सराहना कर रहे थे कि इन योजनाओं से लोगों को काफी लाभ हुआ है।बाद में हमलोगों ने नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ क्षेत्र का दौरा किया और पीएम–जनमन के तहत बनाई जा रही सड़कों की प्रगति देखी। आरसीपीएलडब्ल्यूईए और पीएमजीएसवाई के तहत बनाई गई कई अन्य सड़कों का भी निरीक्षण किया गया और उनकी समग्र गुणवत्ता संतोषजनक पाई गई। पीएमजीएसवाई छत्तीसगढ़ राज्य में ग्रामीण संपर्क प्रदान करने वाली सबसे महत्वपूर्ण सड़क शृंखला है । नारायणपुर में जिला मजिस्ट्रेट और ग्रामीण विकास योजनाओं को लागू करने वाले अन्य अधिकारियों के साथ विस्तृत बातचीत विमर्श किया गया । यह बताया गया कि सुरक्षा परिदृश्य में सुधार हो रहा है और स्वीकृत किए जा रहे सड़क कार्य आने वाले दिनों में संतोषजनक रूप से आगे बढ़ेंगे। हमने भारतीय स्टेट बैंक द्वारा संचालित एक आरएसईटीआई संस्थान का भी दौरा किया और देखा कि बहुत सी महिलाएँ सिलाई का प्रशिक्षण ले रही हैं। वे योजनाओं के प्रति काफी उत्साहित थीं और उन्होंने कहा कि उनकी शिक्षा को स्मरण करने के लिए एक और पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम होना चाहिए। उचित रोजगार की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। हमने जगदलपुर में, पंचायती राज और अन्य ग्रामीण विकास अधिकारियों के साथ बातचीत की और योजनाओं के कार्यान्वयन के संबंध में चर्चा हुई ।

यात्रा के दौरान ही हमने लुभावने चित्रकोट और तीरथगढ़ झरने का भी दौरा किया, जिसे अक्सर **'भारत का नियाग्रा'** कहा जाता है। झरने तक एक छोटी सी यात्रा की और सुंदर दृश्यों का आनंद लिया।

छत्तीसगढ़ की हमारी दो दिवसीय यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव था, जिसमें राज्य के अविश्वसनीय इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता को देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। हमने छिपे हुए रत्नों की खोज की, स्थानीय लोगों के साथ घुलमिल गए और आजीवन की स्मृतियाँ संजोकर रख लीं।

सिफारिशें

- यात्रा के लिए सबसे अच्छा समयः अक्टूबर से मार्च
- अवश्य आजमाए जाने वाले व्यंजनः माड़िया, चौसेला और फर्रा
- आकर्षण के केंद्र : चित्रकोट जलप्रपात, कांगेर घाटी, राष्ट्रीय उद्यान और भोरमदेव मंदिर

उपरोक्त यात्रा से संबंधित कुछ छायाचित्रः

पर्यटन की संभावनाओं की तलाश में बस्तर जिले के तीरथगढ़ जलप्रपात का दौरा करते हुए संयुक्त सचिव (आरसी) एवं महानिदेशक (एनआरआईडीए) और ग्रामीण विकास मंत्रालय के निदेशक

नारायणपुर : आरएसईटीआई की स्थापना अक्टूबर 2010 में नारायणपुर में हुई और इसने अब तक 5383 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया है

प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत निर्मित भवनों का निरीक्षण और लाभार्थियों से वार्तालाप करते हुए महानिदेशक, एनआरआईडीए

महानिदेशक, एनआरआईडीए एवं निदेशक, ग्रामीण विकास का स्वागत करते हुए महिला स्वयं सहायता समूह की पदाधिकारी

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना/पीएम जनमन/ मनरेगा के तहत निर्मित/निर्माणाधीन सड़कों का निरीक्षण करते हुए महानिदेशक, एनआरआईडीए एवं निदेशक, ग्रामीण विकास

रेशम उत्पादन विभाग द्वारा नारायणपुर में किए गए कोसा वृक्षारोपण के समय अधिकारियों के साथ महानिदेशक, एनआरआईडीए एवं निदेशक, ग्रामीण विकास

➢प्रस्तुतिः कृष्ण मुरारी सिंह
निदेशक, ग्रामीण विकास

खुश और संतुष्ट कैसे रहें: जीवन के हर पहलू में संतोष का मार्ग

हमारे जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य क्या है? क्या यह केवल धन, सफलता, या प्रसिद्धि का पीछा करना है? नहीं, इन सभी चीजों से भी अधिक मूल्यवान है वह अदृश्य लेकिन अनमोल खजाना जिसे हम 'संतोष' कहते हैं। संतोष वह भाव है जो हमें शांति और स्थायित्व के साथ जीवन जीने का मार्ग दिखाता है। यह न केवल हमारी आत्मा को तृप्त करता है, बल्कि हमारे कार्यों में भी स्थिरता और समर्पण लाता है। संतोष वह प्रकाश है, जो हमारे जीवन के अंधेरे कोनों को उजागर करता है, हमें स्थिर और संतुलित बनाए रखता है। यह वह पुल है, जो हमें व्यर्थ की दौड़ से निकालकर वास्तविक आत्म–संतोष के मार्ग पर ले जाता है। इस लेख में, हम संतोष और खुशी के मार्ग को समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों पर विचार करेंगे और प्राचीन भारतीय शास्त्रों से मिली सीखों को भी इस संदर्भ में समझेंगे।

संतोष का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पहलू

संतोष का महत्व केवल व्यक्तिगत अनुभव तक सीमित नहीं हैय इसका व्यापक मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पहलू भी है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें, तो संतोष वह मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट रहता है। यह स्थिति उसे तनाव, चिंता, और असंतोष से मुक्त करती है। सामाजिक दृष्टिकोण से, संतोष का प्रभाव हमारे संबंधों पर भी पड़ता है। एक संतुष्ट व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सुखी रहता है, बल्कि वह अपने आस–पास के लोगों के साथ भी मधुर संबंध बनाए रखता है। इससे समाज में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है, जो कि सामूहिक संतोष और सामूहिक खुशहाली की ओर ले जाता है।

सकारात्मक सोच और संतोष का सम्बन्ध

महाभारत का एक प्रसंग इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब अर्जुन, जो कि एक महान योद्धा थे, युद्ध के मैदान में अपने कर्तव्यों को लेकर संशय में पड़ जाते हैं, तब उन्हें जीवन के वास्तविक अर्थ की समझ होती है। अर्जुन के मन में यह द्वंद्व था कि वह अपने ही संबंधियों के खिलाफ युद्ध क्यों करें। उनके मन में यह सवाल था कि क्या यह युद्ध उन्हें सच्ची खुशी दे पाएगा? ऐसे समय में भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें भगवद गीता का उपदेश दिया। गीता का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह था कि हमें फल की चिंता किए बिना अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। श्रीकृष्ण का यह उपदेश न केवल अर्जुन के लिए बल्कि हम सभी के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। यह सिखाता है कि सकारात्मक सोच और निःस्वार्थ कर्म जीवन में शांति और संतोष लाते हैं। जब हम अपने कार्यों को सही भाव से करते हैं, तब हमें वास्तविक खुशी और संतोष का अनुभव होता है। यह सकारात्मक दृष्टिकोण न केवल हमारे मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता है, बल्कि हमें जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने की क्षमता भी प्रदान करता है।

समय प्रबंधन और उसका संतोष पर प्रभाव

समय प्रबंधन का महत्व और उसका संतोष पर प्रभाव समझने के लिए एक और गहरी और प्रेरक कथा महाभारत से ली जा सकती है। यह कथा स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि समय का सही उपयोग कैसे जीवन में सफलता, शांति और संतोष का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

यह कथा महाभारत के सबसे महत्वपूर्ण पात्रों में से एक, कर्ण, की है। कर्ण जन्म से ही बहुत योग्य और बलशाली थे, लेकिन उन्हें समाज द्वारा हमेशा तिरस्कार का सामना करना पड़ा। उनकी सारी योग्यताएं और क्षमताएं उस समय सही रूप में सामने नहीं आ सकीं, जब उन्हें सबसे अधिक जरूरत थी।

कर्ण को समय–समय पर कई अवसर मिले जब वे अपनी योग्यता को सही तरीके से साबित कर सकते थे, लेकिन हर बार किसी न किसी कारण से वे चूक गए। सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण उस समय का है जब कर्ण को भगवान परशुराम ने श्राप दिया कि वे उनके सिखाए गए दिव्यास्त्रों को उस समय भूल जाएंगे जब उन्हें उनकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी। यह श्राप कर्ण को इसलिए मिला क्योंकि उन्होंने परशुराम से अपना सच्चा परिचय नहीं दिया था। कर्ण ने यह सीखने के लिए समय का सही उपयोग नहीं किया कि उन्हें कब, किसके सामने और क्या प्रस्तुत करना चाहिए।

जब महाभारत का युद्ध अपने चरम पर था, और कर्ण अर्जुन के साथ युद्ध कर रहे थे, तब उनका रथ का पहिया धरती में धंस

गया। यह वही समय था जब कर्ण को अपनी दिव्य शक्तियों की सबसे अधिक जरूरत थी, लेकिन वे परशुराम के श्राप के कारण सब कुछ भूल गए। समय पर सही निर्णय न लेने की वजह से कर्ण इस निर्णायक क्षण में असफल रहे और अंततः उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

यह कथा हमें यह सिखाती है कि समय प्रबंधन केवल कार्यस्थल पर ही नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू में बेहद महत्वपूर्ण है। कर्ण जैसे महान योद्धा, जिन्होंने जीवन में कई मौके गंवाए, केवल इसलिए कि उन्होंने समय का सही प्रबंधन नहीं किया और सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाए। यदि उन्होंने अपने समय का सही उपयोग किया होता और सही समय पर अपने कार्यों को समझदारी से अंजाम दिया होता, तो शायद उनका जीवन और उनके अंत का परिणाम कुछ और होता।

समय का सही उपयोग न केवल हमारे कार्यों में उत्कृष्टता लाता है, बल्कि यह हमें मानसिक शांति और संतोष भी प्रदान करता है। कर्ण की इस कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि समय की अहमियत को समझना और उसका सही उपयोग करना ही हमें वास्तविक संतोष और सफलता की ओर ले जा सकता है।

इस प्रकार, समय प्रबंधन और संतोष के बीच का संबंध स्पष्ट है। जब हम अपने जीवन में समय का सही उपयोग करते हैं और सही समय पर सही निर्णय लेते हैं, तो हमें न केवल सफलता मिलती है, बल्कि हम संतोष और मानसिक शांति का भी अनुभव करते हैं। कर्ण की इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि समय की सही पहचान और उसका उचित प्रबंधन जीवन में कितनी बड़ी भूमिका निभाता है।

जीवन में संतुलन का महत्व

जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखना एक महत्वपूर्ण कला है। काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाना, स्वास्थ्य और आनंद के बीच संतुलन रखना, यह सभी संतोष प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं। रामायण में भगवान श्रीराम का जीवन एक उत्कृष्ट उदाहरण है। श्रीराम ने अपने जीवन में विभिन्न जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। वे एक आदर्श पुत्र, पति, और राजा बने। उन्होंने अपने राज्य और परिवार दोनों के प्रति अपने कर्तव्यों का समान रूप से पालन किया। यह हमें सिखाता है कि जीवन में संतुलन बनाना कितना महत्वपूर्ण है। जब हम अपने काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखते हैं, तो हमें संतोष का अनुभव होता है। इससे न केवल हमारा मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर होता है, बल्कि हमारे रिश्ते भी मजबूत होते हैं।

आज के संदर्भ में, जीवन के इस संतुलन को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। तेजी से बदलती हुई दुनिया, कार्यस्थल पर बढ़ते दबाव, और व्यक्तिगत जीवन की मांगों के बीच संतुलन बनाए रखना एक चुनौती है। लेकिन यह संतुलन ही हमें मानसिक शांति और संतोष प्रदान करता है। संतुलन बनाए रखने के लिए हमें समय प्रबंधन, प्राथमिकताओं का निर्धारण, और आत्म–अनुशासन की आवश्यकता होती है। जब हम इन सिद्धांतों का पालन करते हैं, तो हम जीवन में संतोष और शांति का अनुभव कर सकते हैं।

छोटे–छोटे सफलताओं का महत्व

जीवन में छोटी–छोटी सफलताओं का महत्व समझना भी संतोष प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। महाभारत में पांडवों के वनवास की कहानी हमें सिखाती है कि कैसे छोटे–छोटे अवसरों का सही उपयोग करना और उनके पीछे निहित महत्व को समझना आवश्यक है। पांडवों ने अपने वनवास के समय में भी कभी हार नहीं मानी और प्रत्येक छोटे से छोटे मौके का उपयोग किया। उन्होंने न केवल अपनी क्षमताओं का विकास किया, बल्कि आने वाले समय के लिए भी स्वयं को तैयार किया। यह हमें सिखाता है कि जीवन में छोटी–छोटी सफलताओं का महत्व समझना चाहिए और उन्हें जश्न के रूप में मनाना चाहिए। इससे न केवल हमें आत्मविश्वास मिलता है, बल्कि हमें अपनी मेहनत का असली मूल्य भी महसूस होता है।

छोटी–छोटी सफलताओं का आनंद लेना न केवल हमें जीवन में संतोष प्रदान करता है, बल्कि यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। जब हम अपने छोटे–छोटे लक्ष्यों की प्राप्ति पर खुश होते हैं, तो हमें अपने बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रेरणा मिलती है। इस प्रकार, छोटी–छोटी सफलताओं का जश्न मनाना हमें जीवन में संतोष और आत्मविश्वास प्रदान करता है।

तनाव से मुक्ति और ध्यान का महत्व

तनाव आज के जीवन का एक आम हिस्सा बन गया है, लेकिन इसे अपने ऊपर हावी न होने देना ही असली कला है। भगवद गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यह सिखाया कि आत्मा अजर–अमर है और शरीर नश्वर। जब अर्जुन ने इस सत्य को समझा, तो उनके तनाव और भय का अंत हो गया। यह हमें सिखाता है कि जीवन की समस्याओं के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदलना और ध्यान का अभ्यास करना तनाव को कम करने में सहायक हो सकता है। नियमित ध्यान और योग के अभ्यास से हम मानसिक शांति प्राप्त कर सकते हैं, जो अंततः हमें संतोष और खुशी प्रदान करती है।

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में, ध्यान और योग के महत्व को समझना और उसे अपने जीवन में अपनाना अत्यंत आवश्यक है। जब हम नियमित रूप से ध्यान का अभ्यास करते हैं, तो हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। इससे हमें न केवल तनाव से मुक्ति मिलती है, बल्कि हमें जीवन में संतोष और शांति का अनुभव भी होता है।

दूसरों की मदद से मिलने वाली संतुष्टि

आज के समाज में, जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हमें एक गहरी संतुष्टि का अनुभव होता है। यह संतोष हमें मानसिक शांति और खुशी प्रदान करता है। दूसरों की मदद करने से हमें यह एहसास होता है कि हम समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। इससे न केवल हमारे आत्म–सम्मान में वृद्धि होती है, बल्कि हमें जीवन में संतोष का भी अनुभव होता है। किसी की मदद करना न केवल उनके लिए बल्कि आपके लिए भी फायदेमंद हो सकता है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में दूसरों की मदद से मिलने वाली संतुष्टि को बार–बार महत्वपूर्ण बताया गया है।

दूसरों की मदद करने से मिलने वाली संतुष्टि का सबसे प्रभावशाली उदाहरण रामायण से मिलता है। जब भगवान राम वनवास के दौरान माता शबरी के आश्रम पहुंचे, तो माता शबरी ने उन्हें बेर खिलाए। इन बेरों को खाने से पहले माता शबरी ने खुद चखा ताकि भगवान राम को केवल मीठे बेर ही खिलाए जाएं। यह दृश्य न केवल शबरी की भक्ति और समर्पण को दर्शाता है, बल्कि भगवान राम के प्रति उनकी निःस्वार्थ सेवा और मदद को भी उजागर करता है। इसके बदले में, भगवान राम ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी भक्ति को सम्मानित किया। यह कहानी हमें सिखाती है कि दूसरों की मदद करने से हमें गहरी संतुष्टि का अनुभव होता है और यह हमें मानसिक शांति और आनंद प्रदान करता है।

एक ऐसा ही प्रेरणादायक उदाहरण महाभारत से लिया जा सकता है, जिसमें करुणा और निःस्वार्थ सेवा के महत्व को उजागर किया गया है।

महाभारत में, जब युधिष्ठिर और उनके भाई वनवास में थे, तब उन्हें दुर्वासा ऋषि के आगमन का समाचार मिला। दुर्वासा ऋषि अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध थे और उनके साथ उनके शिष्यों का भी बड़ा समूह था। युधिष्ठिर और उनके भाइयों के पास पर्याप्त भोजन नहीं था, और उन्हें चिंता हुई कि वे ऋषि और उनके शिष्यों का कैसे सत्कार करेंगे। द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया और उनकी सहायता मांगी। श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से पूछा कि क्या उनके पास भोजन का कोई अंश बचा है, और द्रौपदी ने एक बर्तन में बचे हुए एक चावल के दाने को दिखाया। श्रीकृष्ण ने उसे ग्रहण किया और यह कहते हुए वह चावल का दाना खाया कि इससे सभी भूख मिट जाएगी। इस अद्भुत घटना के बाद, दुर्वासा ऋषि और उनके शिष्य इतने संतुष्ट हो गए कि उन्होंने युधिष्ठिर से भोजन की माँग नहीं की और बिना कुछ कहे चले गए।

यह कथा हमें सिखाती है कि निःस्वार्थ सेवा और दूसरों की मदद करने की भावना से न केवल मदद प्राप्त करने वाले को लाभ होता है, बल्कि मदद करने वाले को भी गहरी संतुष्टि और शांति का अनुभव होता है। इस कथा में श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की सहायता करने से न केवल युधिष्ठिर और उनके भाइयों को संकट से उबारा, बल्कि खुद द्रौपदी और पांडवों के मन में गहरी संतुष्टि और मानसिक शांति उत्पन्न की।

आज के समाज में, जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हमें एक गहरी संतुष्टि का अनुभव होता है। यह संतोष हमें मानसिक शांति और खुशी प्रदान करता है। दूसरों की मदद करने से हमें यह एहसास होता है कि हम समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। इससे न केवल हमारे आत्म–सम्मान में वृद्धि होती है, बल्कि हमें जीवन में संतोष का भी अनुभव होता है। इस प्रकार, निःस्वार्थ भाव से की गई सहायता न केवल हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है, बल्कि हमारे समाज को भी एक बेहतर स्थान बनाती है।

निरंतर सीखते रहने का महत्व

महाभारत के महान योद्धा और गुरु द्रोणाचार्य के शिष्य एकलव्य का उदाहरण निरंतर सीखने की भावना का एक अद्वितीय उदाहरण है। एकलव्य ने अपने गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिमा के सामने बैठकर स्वयं ही धनुर्विद्या सीखी और उसमें पारंगत हो गए। उनके इस समर्पण और सीखने की इच्छा ने उन्हें एक महान धनुर्धर बना दिया, बिना किसी औपचारिक शिक्षा के। यह हमें सिखाता है कि सीखने की प्रक्रिया को कभी नहीं रोकना चाहिए। यह न केवल हमारे ज्ञान को बढ़ाता है, बल्कि हमें संतोष और आत्मविश्वास भी प्रदान करता है।

आज के तेजी से बदलते युग में, निरंतर सीखते रहना और अपने कौशल को निखारना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब हम नई चीजें सीखते हैं, तो हमें अपने जीवन में एक नई दिशा मिलती है। इससे न केवल हमारे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, बल्कि हमें जीवन में संतोष और खुशी का भी अनुभव होता है।

आभार व्यक्त करने का महत्व

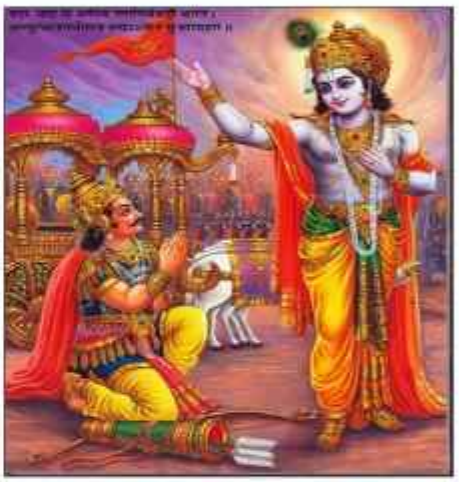

जीवन में आभार की भावना विकसित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। भगवद गीता में भी कहा गया है कि ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करना और उनकी कृपा का एहसास करना हमें शांति और संतोष का अनुभव कराता है। जब हम जीवन में छोटे–छोटे पलों के लिए आभारी रहते हैं, तो हमें यह एहसास होता है कि हम कितने भाग्यशाली हैं। आभार व्यक्त करना न केवल हमारे रिश्तों को मजबूत करता है, बल्कि हमारे मन में सकारात्मक भावनाओं को भी बढ़ावा देता है, जो अंततः हमारे जीवन में संतोष लाती हैं।

आभार व्यक्त करना न केवल एक व्यक्तिगत गुण है, बल्कि यह समाज में भी सकारात्मकता फैलाने में मदद करता है। जब हम आभारी होते हैं, तो हम अपने जीवन के सभी पहलुओं को एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं। इससे हमें संतोष और शांति का अनुभव होता है, जो अंततः हमारे जीवन को समृद्ध बनाता है।

निष्कर्षः संतोष की ओर यात्रा

खुश और संतुष्ट रहने के लिए हमें अपने जीवन को संतुलित रखना, सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना और दूसरों की मदद करने की भावना को अपने जीवन में शामिल करना आवश्यक है। हिंदू धर्मग्रंथों और कहानियों से मिली सीखें हमें यह सिखाती हैं कि सही दृष्टिकोण, समय प्रबंधन, और दूसरों की मदद करने की भावना जीवन में खुशी और संतोष का मार्ग प्रशस्त करती हैं। यदि हम इन सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो न केवल हमारा जीवन खुशहाल बनेगा, बल्कि हम अपने कार्यों में भी उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे।

इस लेख का उद्देश्य कर्मचारियों को उनके कार्य और व्यक्तिगत जीवन में खुशी और संतुष्टि प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना है। जब हम इन प्राचीन कहानियों और शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाते हैं, तो न केवल हम अपने कार्यस्थल पर उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे, बल्कि अपने जीवन में वास्तविक खुशी और संतोष का अनुभव भी करेंगे। जीवन की इस यात्रा में, संतोष और खुशी के मार्ग पर चलने के लिए इन सिद्धांतों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं, और देखें कि कैसे आपका जीवन संतोष और समृद्धि से भरपूर हो जाता है।

➢प्रदीप अग्रवाल
निदेशक (परियोजना– I)

जॉर्डन यात्रा – एक संस्मरण

विगत मई, 2024 महीने में मुझे एक सरकारी कार्यक्रम (एएआरडीओ–एमईआरओ सहयोगात्मक अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला) में भाग लेने के नाते जॉर्डन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह यात्रा थी तो सरकारी किंतु इस यात्रा की सीमित अवधि में जो मैंने उस देश में जितना भ्रमण किया, जिन जगहों को देखा, वहां के सामाजिक–आर्थिक जीवन, वहाँ की सभ्यता–संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, खान–पान, रस्म–रिवाज, पहनावा इत्यादि की झलकियां देखीं दृ सब मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण एवं मेरे जीवन में अविस्मरणीय रूप से यादगार रहेंगी।

जॉर्डन भौगोलिक रूप से पश्चिम एशियाई अरब देश है जिसके उत्तर में सीरिया, पूर्व में इराक, दक्षिण–पूर्व में सऊदी अरब और पश्चिम में इजरायल व फिलीस्तीन स्थित हैं। इस क्षेत्र को मध्य पूर्व भी कहा जाता है। जॉर्डन एक ऐसा देश है जो इतिहास से भरा पड़ा है। यह मानव जाति की कुछ सबसे पुरानी बस्तियों और गांवों का घर रहा है, और दुनिया की कई महान सभ्यताओं के अवशेष आज भी यहां देखे जा सकते हैं।

➢ जनसंख्या

जॉर्डन की वर्तमान जनसंख्या लगभग एक करोड़ है। यहां की अधिकांश आबादी मुस्लिम धर्मावलंबी है, इसके साथ ही ईसाई धर्म के लोग भी यहां रहते हैं।

➢ शिक्षा की स्थितिः

शिक्षा और साक्षरता दर तथा सामाजिक कल्याण के माप समान आय वाले अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत उच्च हैं।

➢ अर्थव्यवस्था

जॉर्डन एक छोटा सा देश है जिसके पास सीमित प्राकृतिक संसाधन हैं। अरब देश होते हुए भी इसके पास पेट्रोल के भंडार नहीं हैं। जॉर्डन की अर्थव्यवस्था के लिए मुख्य बाधाएँ हैं पानी की कमी, ऊर्जा के लिए तेल आयात पर पूरी तरह से निर्भरता और क्षेत्रीय अस्थिरता। इसकी भूमि का सिर्फ 10% हिस्सा ही कृषि योग्य है और पानी की आपूर्ति सीमित है। वर्षा कम और अत्यधिक परिवर्तनशील है, और जॉर्डन का अधिकांश उपलब्ध भूजल नवीकरणीय नहीं है। देश वर्तमान में अपनी सीमित जल आपूर्ति का विस्तार करने और अपने मौजूदा जल संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग करने के तरीकों की खोज कर रहा है, जिसमें क्षेत्रीय सहयोग भी शामिल है। जॉर्डन अपनी अधिकांश ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बाहरी स्रोतों पर निर्भर है।

जॉर्डन को विश्व बैंक द्वारा "विकासशील एवं उच्च–मध्यम आय वाले देश" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद $ 5,749 है।

➢ पर्यटन

देश की राजनीतिक स्थिरता के अलावा, पेश की गई भौगोलिक स्थिति जॉर्डन को एक आकर्षक पर्यटन स्थल बनाती है। जॉर्डन की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन का बहुत महत्व है। यह इस देश में विदेशी मुद्रा अर्जन का एक अहम स्रोत है। पर्यटन जॉर्डन की अर्थव्यवस्था में 800 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का योगदान देता है और देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा है।

जॉर्डन की प्रमुख पर्यटन गतिविधियों में पेट्रा सहित अनेक प्राचीन स्थल, इसके अद्वितीय रेगिस्तानी महल और प्राकृतिक स्थलों से लेकर सांस्कृतिक और धार्मिक स्थल शामिल हैं।

जॉर्डन मृत सागर का घर है, जिसे पृथ्वी पर सबसे निचला बिंदु माना जाता है – समुद्र तल से 408 मीटर नीचे। इसके विपरीत, जॉर्डन का सबसे ऊँचा बिंदु जेबेल उम्म एल दामी है, जो समुद्र तल से 1854 मीटर ऊपर स्थित है।

जॉर्डन के कुछ ऐतिहासिक रूप से प्रसिद्ध शहरों में अम्मान अजराक, जॉर्डन घाटी, मृत सागर, करक, पेट्रा, वादी रम, अकाबा, जेराश, अज्लौन, इर्बिड, नमक और फुहिस, मदाबा इत्यादि हैं।

इसका क्षेत्रफल लगभग 91,880 वर्ग किलोमीटर है। देश की राजधानी और सबसे बड़ा शहर अम्मान है जो यहां का प्रमुख व्यापारिक व राजनयिक केंद्र है। यह इस क्षेत्र के सभी प्रमुख शहरों से परिवहन के विभिन्न माध्यमों से जुड़ा हुआ है तथा अरब दुनिया की प्रमुख सांस्कृतिक राजधानियों में से एक है।

सुप्रसिद्ध पेट्रा की एक तस्वीर

जॉर्डन ऐतिहासिक रूप से काफी समृद्ध रहा है। जॉर्डन में दुनिया के सात नए अजूबों में से एक पेट्रा मौजूद है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल की सूची में भी शामिल है। दरअसल, पेट्रा एक प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थल है, जो करीब 300 ईसा पूर्व में नाबाटन साम्राज्य की राजधानी हुआ करता था। चूंकि मैं एक सरकारी कार्यशाला में भाग लेने गया था, अतः उसके कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है:

प्रशिक्षण कार्यशाला के पहले दिन (2.5.2024) इस कार्यक्रम के समन्वयक श्रीमती नैन्सी अफाशात ने प्रारंभिक उदबोधन के साथ शुरूआत की। तदुपरांत एमईआरओ के क्षेत्रीय प्रतिनिधि श्री मोहम्मद अल हवामदेह ने अपने संभाषण के द्वारा सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इसके बाद, माननीय उप प्रधान मंत्री एवं स्थानीय प्रशासन मंत्री महामहिम श्री तौफीक क्रिशान ने उद्घाटन भाषण दिया।

कार्यक्रम के अगले दिन सभी प्रतिनिधियों को अल–साल्ट सिटी का दौरा कराया गया। यहां सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने में स्थानीय नगरपालिका और स्थानीय प्रशासन की भूमिका के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। इसी तरह, सहाब सिटी जो जॉर्डन का सबसे बड़ा औद्योगिक शहर है का भ्रमण कराया गया। सहाब सिटी में लगभग 400 औद्योगिक इकाइयां हैं और उनमें हजारों श्रमिक कार्यरत हैं। सहाब सिटी परंपरागत रूप से एक औद्योगिक केंद्र होने के बावजूद तेजी से सतत विकास लक्ष्यों को अपना रहा है, अपशिष्ट कटौती और पर्यावरण अनुकूल औद्योगिक विकास तथा ऊर्जा दक्षता उपायों को अपना रहा है।

इसी क्रम में, साल्ट म्यूनिसिपैलिटी का दौरा कराया गया। यहां यह बताया गया कि किस तरह स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों के नीति निर्धारण प्रक्रिया में स्थानीय लोगों की सक्रिय सहभागिता के द्वारा सतत विकास लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है। प्रतिभागियों को शहरी आयोजना और आधारभूत संरचना, पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा आदि विषयों के संबंध में स्थानीय निकायों की भूमिका तथा सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने में उनके योगदान के बारे में विस्तारपूर्वक बताया गया।

जॉर्डन के विभिन्न शहरों / स्थानों पर भ्रमण के दौरान यह पता चला कि भारत की तरह ही जॉर्डन भी विभिन्न समस्याओं यथा पर्यावरण प्रदूषण, हरित क्षेत्रों की कमी, जलवायु परिवर्तन, औद्योगिक इकाइयोंध्वाहनों द्वारा हानिकारक गैसों के उत्सर्जन, प्लास्टिक जनित प्रदूषण, जल संकट, बेरोजगारी, नागरिकों की आय में कमी आदि समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं के निराकरण हेतु यहां स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों/नगर निकायों तथा नागरिकों की जागरूकता एवं सहभागिता की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। यदि इन सब उपायों को भारत के संदर्भ में भी लागू किया जाए तो इनके अत्यंत सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं।

अंत में, मेरा यह मानना है कि इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता से दूसरे देशों के प्रतिनिधियों के साथ आपसी विचार–विमर्श के दौरान एक–दूसरे देश की समस्याओं और आज के परिप्रेक्ष्य में उनके निराकरण के उपायों के बारे में काफी जानकारी मिलती है। ऐसे कार्यक्रमों में निरंतर सहभागिता करना श्रेयस्कर होता है।

इस कार्यक्रम के दौरान मैने भारत में सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में पीएमजीएसवाई सड़कों के योगदान के बारे में विस्तृत चर्चा किया जिसका संक्षिप्त रूप निम्नवत है:

सतत विकास लक्ष्य (SDG) प्राप्त करने में पीएमजीएसवाई सड़कों का योगदान

1 NO POVERTY	• पीएमजीएसवाई ने भारत में 97% से अधिक पात्र बस्तियों को बारहमासी सड़कों से जोड़ा है, जिससे लाखों ग्रामीण निवासियों के लिए बाजारों और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार हुआ है। • बेहतर सड़क अवसंरचना ने माल और लोगों की आवाजाही को सुगम बनाया, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया और रोजगार के अवसर पैदा किए। • उन्नत कनेक्टिविटी से कृषि उत्पादकता में वृद्धि हुई है, ग्रामीण उत्पादकों के लिए बाजारों तक पहुंच बढ़ी है और स्थानीय व्यवसायों में वृद्धि हुई है, जिससे एसडीजी 1 (गरीबी उन्मूलन) और एसडीजी 8 (सभ्य कार्य और आर्थिक विकास) को समर्थन मिला है।
2 ZERO HUNGER	➢ पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण क्षेत्रों से कृषि उपज को बाज़ारों तक पहुँचाने में सुविधा प्रदान की है, जिससे कटाई के बाद होने वाले नुकसान में कमी आई है और किसानों की आय में वृद्धि हुई है। ➢ पीएमजीएसवाई सड़कों ने कृषि उपज के परिवहन लागत को 25% तक कम करने में मदद की है, जिससे किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ हुआ है।

3 GOOD HEALTH AND WELL-BEING	➢ नई सड़क अवसंरचना स्वास्थ्य सुविधाओं, आपातकालीन सेवाओं और सुरक्षित परिवहन तक पहुँच को बढ़ाती है, जिससे स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होता है और मृत्यु दर में कमी आती है। ➢ इसके अतिरिक्त, बेहतर सड़क सुरक्षा सुविधाएँ और कम यात्रा समय समग्र कल्याण में योगदान करते हैं, जो SDG 3 (अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण) के साथ संरेखित है।
4 QUALITY EDUCATION	➢ पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण क्षेत्रों को स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों से जोड़कर शिक्षा तक पहुँच बढ़ाई है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के लिए शिक्षा की बाधाएँ कम हुई हैं। ➢ इसके परिणामस्वरूप छात्रों की उपस्थिति दर में वृद्धि हुई है और शैक्षिक परिणामों में सुधार हुआ है। ➢ पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण क्षेत्रों में 0.16 मिलियन से अधिक स्कूलों को जोड़ा है, जिससे लाखों बच्चों के लिए शिक्षा तक बेहतर पहुँच की सुविधा मिली है। ➢ नई प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थानीय समुदायों और सरकारी एजेंसियों को बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए सशक्त बनाते हैं, जिससे एसडीजी 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) को बढ़ावा मिलता है।
5 GENDER EQUALITY	➢ ज्ञान और कौशल तक समान पहुंच, नई प्रौद्योगिकियों के उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम लैंगिक समानता सुनिश्चित करता है। ➢ कार्यक्रम का उद्देश्य परियोजना कार्यान्वयन के सभी चरणों में महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है, लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है।
6 CLEAN WATER AND SANITATION	➢ पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण क्षेत्रों में जल आपूर्ति प्रणालियों और स्वच्छता अवसंरचना के निर्माण में सहायता की है, जिससे स्वच्छ जल और स्वच्छता सुविधाओं तक पहुँच में सुधार हुआ है। ➢ पीएमजीएसवाई सड़कों ने निर्माण सामग्री और उपकरणों की आसान पहुँच को सक्षम किया है, जिससे जल और स्वच्छता परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सुविधा हुई है।
7 AFFORDABLE AND CLEAN ENERGY	➢ सड़क अवसंरचना के माध्यम से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर ऊर्जा चालित स्ट्रीट लाइटिंग या दूरदराज के क्षेत्रों के लिए हाइब्रिड ऊर्जा प्रणालियों को शामिल करने से ऊर्जा दक्षता बढ़ती है और कार्बन उत्सर्जन कम होता है, जिससे एसडीजी 7 (सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा) और एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई) को समर्थन मिलता है।

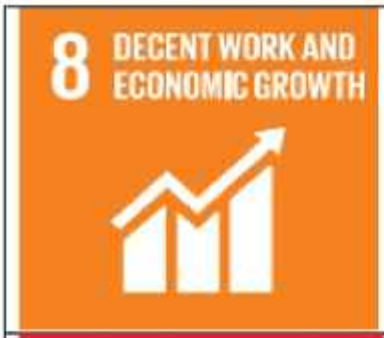	➢ पीएमजीएसवाई ने सड़क निर्माण और रखरखाव गतिविधियों के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा किए हैं, जिससे हजारों ग्रामीण परिवारों को आजीविका मिली है। ➢ अनुमानों के अनुसार, पीएमजीएसवाई ने सालाना 50 मिलियन से अधिक व्यक्ति-दिवस रोजगार सृजित किए हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास और गरीबी में कमी लाने में योगदान मिला है।
	➢ उन्नत सड़क निर्माण तकनीकें ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली, सभी मौसमों के अनुकूल सड़कों के विकास को सक्षम बनाती हैं, जिससे बाजारों, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुँच में सुधार होता है। ➢ बेहतर कनेक्टिविटी ने निवेश को आकर्षित किया है और छोटे और मध्यम उद्यमों के विकास को बढ़ावा दिया है। ➢ पीएमजीएसवाई सड़कों ने कृषि, विनिर्माण और सेवाओं सहित आर्थिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे समग्र आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला है। ➢ उन्नत जीआईएस (भौगोलिक सूचना प्रणाली) तकनीकें ग्रामीण क्षेत्रों का सटीक मानचित्रण करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे सड़क निर्माण परियोजनाओं की बेहतर योजना और अनुकूलन की सुविधा मिलती है।
	➢ पीएमजीएसवाई सड़क निर्माण में पर्यावरणीय विचारों को शामिल करता है ताकि पारिस्थितिकी प्रभाव को कम किया जा सके, पर्यावरण अनुकूल सामग्री, कुशल निर्माण प्रथाओं और रिमोट सेंसिंग तकनीकों जैसी तकनीकों का उपयोग करके जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित किया जा सके। रिमोट सेंसिंग तकनीक निर्माण प्रगति की निगरानी, संभावित मुद्दों की पहचान करने और पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन करने में मदद करती है, जो टिकाऊ भूमि उपयोग को बढ़ावा देकर और पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करके एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई) में योगदान करती है।
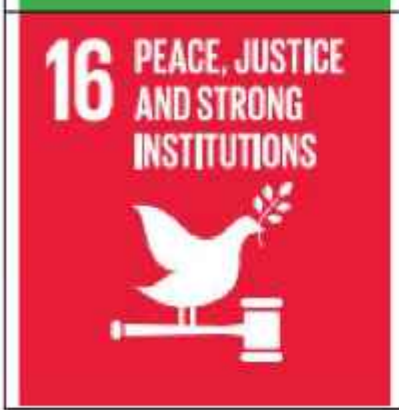	➢ पीएमजीएसवाई स्थानीय समुदायों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और परियोजना कार्यान्वयन में शामिल करता है और यह सुनिश्चित करता है कि बुनियादी ढांचा लोगों की ज़रूरतों को पूरा करे। सड़क निर्माण परियोजनाओं में स्थानीय समुदायों को शामिल करना और भागीदारीपूर्ण योजना और निर्णय लेने के लिए नई तकनीकों का लाभ उठाना समुदायों को सशक्त बनाता है और स्थानीय शासन को बढ़ाता है। यह सतत विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाजों को बढ़ावा देकर, न्याय तक पहुँच सुनिश्चित करके और प्रभावी, जवाबदेह और समावेशी संस्थानों का निर्माण करके एसडीजी 16 में योगदान देता है।

➢देविंद्र कुमार
निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

जब आप दूसरों से बात करते समय सोचते हैं कि आप उनसे अधिक होशियार हैं

हम सभी अपने जीवन में ऐसे लोगों से मिले हैं जो जब भी बात करते हैं तो उनके बोलने के तरीके से यह लगता है कि वे स्वयं को दूसरों से अधिक होशियार समझते हैं। यह व्यवहार कई बार असुविधाजनक और अप्रिय हो सकता है। ऐसे लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि वास्तविक बुद्धिमानी और ज्ञान का माप उनकी विनम्रता, समझ और दूसरों की राय का सम्मान करने में भी होता है।

स्वाभिमान या अहंकार?: जब कोई व्यक्ति स्वयं को दूसरों से अधिक होशियार समझता है, तो यह स्पष्ट रूप से अहंकार का संकेत हो सकता है। स्वाभिमान और आत्मविश्वास एक सकारात्मक गुण हैं, लेकिन जब यह अहंकार में बदल जाता है, तो यह दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति को जन्म देता है। अहंकार के प्रभाव में व्यक्ति दूसरों की बात सुनने और समझने की क्षमता खो देता है, जो कि किसी भी संवाद का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

संवाद में सामंजस्य की कमी: ऐसे लोग जब बात करते हैं, तो वे अक्सर दूसरों की बातों को काटते हैं, उन्हें पूरा नहीं होने देते, या उनकी राय को तुच्छ समझते हैं। इससे संवाद में सामंजस्य की कमी होती है और कई बार यह बहस या विवाद का कारण बन सकता है। संवाद का मुख्य उद्देश्य विचारों का आदान–प्रदान और समझ विकसित करना होता है, लेकिन अहंकारी दृष्टिकोण से यह उद्देश्य विफल हो जाता है।

असली बुद्धिमानी की पहचान: वास्तविक बुद्धिमानी और ज्ञान का प्रतीक विनम्रता और दूसरों के प्रति सम्मान का भाव है। एक बुद्धिमान व्यक्ति यह जानता है कि सीखने की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली होती है और हर किसी से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। वे दूसरों की बात सुनते हैं, उनके विचारों का सम्मान करते हैं और अपने विचारों को बिना किसी अहंकार के प्रस्तुत करते हैं।

सामाजिक और पेशेवर जीवन में प्रभाव: जो लोग स्वयं को दूसरों से अधिक होशियार समझते हैं, वे अक्सर सामाजिक और पेशेवर दोनों जीवन में अकेलापन महसूस करते हैं। उनके इस रवैये के कारण लोग उनसे दूरी बनाने लगते हैं और उन्हें असहयोगी और अभिमानी मानते हैं। पेशेवर जीवन में भी यह रवैया उनके करियर के विकास में बाधा बन सकता है, क्योंकि टीम वर्क और सहयोग की भावना की आवश्यकता होती है।

सुधार के उपाय: स्वयं का आत्मनिरीक्षण करें: यह समझने की कोशिश करें कि आपका व्यवहार दूसरों पर कैसा प्रभाव डालता है।

सुनने की कला विकसित करें: दूसरों की बातें ध्यान से सुनें और उनके विचारों का सम्मान करें।

विनम्रता अपनाएं: अपने ज्ञान और बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते समय विनम्रता का भाव रखें।

सीखने का दृष्टिकोण: हर किसी से कुछ न कुछ सीखने की कोशिश करें और ज्ञान को एक साझा संपत्ति समझें।

निष्कर्ष: वास्तविक बुद्धिमानी न केवल ज्ञान और जानकारी में होती है, बल्कि उसे साझा करने के तरीके और दूसरों के प्रति सम्मान में भी होती है। जब हम दूसरों की राय और विचारों का सम्मान करते हैं, तो हम स्वयं भी एक बेहतर और समझदार व्यक्ति बनते हैं। इसलिए, यदि आपको लगता है कि आप दूसरों से अधिक होशियार हैं, तो इसे अहंकार का कारण न बनने दें, बल्कि इसे विनम्रता और सीखने के अवसर के रूप में देखें।

➢विशाल श्रीवास्तव
आईसीटी परियोजना निदेशक

पीएमजीएसवाई: ग्रामीण जीवन को बदलने वाली चौबीस वर्ष की यात्रा

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) वर्ष 2000 में 500 या उससे अधिक (या पहाड़ी, आदिवासी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में 250 या उससे अधिक) की आबादी वाले असंबद्ध बस्तियों को सड़क संपर्क प्रदान करने के लक्ष्य के साथ शुरू की गई थी। यद्यपि 'ग्रामीण सड़कें' राज्यों और पंचायती राज की जिम्मेदारी के अंतर्गत आती हैं, पीएमजीएसवाई भारत सरकार द्वारा एक विशेष पहल है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण आबादी को बाजारों, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामाजिक संपर्क तक पहुंच में सुधार करके मुख्यधारा में एकीकृत करना है। इस कार्यक्रम को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लागू किया गया है, जिसका निष्पादन संबंधित राज्य सरकार की एजेंसियों द्वारा किया जाता है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) और राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (एनआरआईडीए) ने पीएमजीएसवाई परियोजना की निगरानी के लिए एक व्यापक मॉडल स्थापित किया है। इस मॉडल में विभिन्न चरणों में विभिन्न मापदंडों की निगरानी शामिल है, जैसे कि डिजाइन और आकलन (शैक्षणिक संस्थानों से इनपुट के साथ), निविदा और अनुबंध प्रबंधन, भौतिक और वित्तीय प्रगति पर नजर रखना और गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित करना। इन सभी पहलुओं को ऑनलाइन प्रबंधन, निगरानी और लेखा प्रणाली (ओएमएमएसएस) के माध्यम से एकीकृत किया गया है, जो वेब के माध्यम से आम जनता के लिए परियोजना की जानकारी सुलभ बनाकर पारदर्शिता को बढ़ाता है।

पीएमजीएसवाई के विभिन्न चरणों के तहत:

पीएमजीएसवाई–I: 500 या उससे अधिक (पहाड़ी, आदिवासी और रेगिस्तानी क्षेत्रों में 250 या उससे अधिक) की आबादी वाले असंबद्ध बस्तियों को नई कनेक्टिविटी देने के लिए बनाई गई योजना के तहत कुल 6,44,874 किलोमीटर (1,64,609 सड़कें और 7,461 एलएसबी) स्वीकृत किए गए थे, जिसमे से 6,24,472 किलोमीटर (1,63,449 सड़कें और 7,128 एलएसबी) पूरी हो चुकी हैं। पीएमजीएसवाई–I के तहत स्वीकृतियां अब बंद हो चुकी हैं।

पीएमजीएसवाई–II: उन्नयन के लिए बनाई गई योजना, अब तक इस चरण के तहत 49,835 किलोमीटर (6,679 सड़कें और 759 एलएसबी) लंबाई की सड़कों की मंजूरी दी गई है, जिसमें से 49,019 किलोमीटर (6,570 सड़कें और 746 एलएसबी) पूरी हो चुकी हैं।

पीएमजीएसवाई–III: उन्नयन के लिए बनाई गई योजना, अब तक कुल 1,16,696 किलोमीटर (15,205 सड़कें और 2,945 एलएसबी) को मंजूरी दी गई है, जिसमें से 83,772 किलोमीटर (9,722 सड़कें और 807 एलएसबी) पूरी हो चुकी हैं।

पीएमजीएसवाई के अलावा, ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) और राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (एनआरआईडीए) भी कई अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं को लागू करने में शामिल हैं।

वामपंथी उग्रवाद वाले क्षेत्रों के लिए सड़क संपर्क परियोजना (आरसीपीएलडब्ल्यूईए): विकास और सुरक्षा को बढ़ाने के लिए वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में सड़क संपर्क में सुधार लाने के उद्देश्य से प्रारंभ की गई परियोजना।

जीवंत ग्राम कार्यक्रम (वीवीपी): यह परियोजना सीमावर्ती गांवों में अवसंरचना में सुधार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रारंभ की गइ। इन दूरदराज के क्षेत्रों में समग्र जीवंतता और सुरक्षा बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम–जनमन): आदिवासी और स्वदेशी समुदायों के लिए न्याय और विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक पहल, जिसमें आवश्यक सेवाओं तक कनेक्टिविटी और पहुंच में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

➤आशीष श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक (तकनीकी)

हिमाचल प्रदेश के सेतु पुरुष (ब्रिज मैन)

हिमाचल प्रदेश के दूरस्थ जनजातीय जिला किन्नौर की पूह तहसील से संबंध रखने वाले श्री भीम सिंह नेगी आज एक ऐसे व्यक्ति बन गए हैं जिनके नाम 108 से अधिक पुल बनवाने का रिकॉर्ड है । यह रिकॉर्ड जो कि निरंतर बढ़ता ही जा रहा है, दर्शाता है इनके कार्य के प्रति समर्पण को, अपने देश एवं प्रदेश की सेवा में दिन रात निष्ठा पूर्वक लगे रहने को । हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग में आज यह सहायक अभियंता के पद पर कार्यरत हैं जिन्हे प्रदेश सरकार ने हाल ही में उनके विशिष्ट योगदान के लिए विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया है।

वे एक विनम्र पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं जिनके स्कूली शिक्षा, पूह में ही हुई तथा इन्होने वर्ष 1997 में दैनिक वेतन भोगी के तौर पर विभाग में सेवाएं देनी आरम्भ की। जीवन में पहले पुल (40 फुट लम्बाई) के निर्माण करने का अवसर उन्हे वर्ष 1999 में मिला जो कि जंगलिंग नाला पर बनाया गया । अवसर मिलते गए और भीमसेन जी की रूचि पुल निर्माण विशेषतः बेली पुल में बढ़ती गयी। प्रदेश के इस भाग में जहाँ सड़कें दुर्गम स्थानों से होकर जाती हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय सीमा भी निकट है। इस प्रकार के पुलों के निर्माण का प्रचलन है। विशेष रूप से सीमा सड़क संगठन इनका अधिक प्रयोग करता है। ये पुल बहुत कम समय में सड़क यातायात बहाली के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होते है।

श्री भीम सिंह नेगी

भीमसेन जी कम संसाधनों के साथ बेली पुल बनाने में विशेषज्ञ हो चुके हैं कई बार ऐसी परिस्थिति आयी हैं जब भीषण वर्षा, बादल फटने, भूस्खलन जिए घटनाओं से प्रदेश भी जब पुल बह जाने अथवा सड़क का हिस्सा टूट जाने के कारण एक क्षेत्र का संपर्क दुसरे क्षेत्र से कट गया सैकड़ों लोग, बीमार व्यक्ति, पशुधन तथा बाहरी राज्यों से आये सैलानी फंस जाते हैं तब बेली पुलों का निर्माण करके सरकार द्वारा संपर्क प्रदान किया गया । भीमसेन जी ने आज तक 100 से अधिक पुलों का निर्माण कराया जिसमें उन्होंने तथा उनकी टीम ने दिन रात कार्य करके सड़क बहाली की। उनके द्वारा कराये गए मुख्य कार्यों में वर्ष 2007 में स्पीति नदी पर 200 फुट लम्बे पुल को बिना किसी मशीनरी के कर्मचारियों के सहयोग से ही 15 दिन में, सतलुज नदी पर, 2012 में तशीगंग गांव को जोड़ने के लिए 200 फुट लम्बा पुल 13 दिनों में तथा राष्ट्रीय उच्च मार्ग पर शिमला जिला में 150 फुट लम्बे पुल को मात्र पांच दिनों में निर्माण उल्लेखनीय हैं। समय समय पर इनकी सेवाएं ग्रेफ (सीमा सड़क संगठन, राष्ट्रीय उच्च मार्ग तथा प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजनाओं की सड़कों को बहाल करने में ली जाती रहीं हैं।

इनके द्वारा बनवाए जाने वाले पुलों की संख्या 108 पार कर चुकी है इसी लिए इन्हें ब्रिज मैन भी कहा जाने लगा है शांत स्वभाव के भीमसेन जी जैसा व्यक्तित्व हमेशा ही अन्य लोगों के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। उनका कहना है कि उन्हें यह शक्ति उनकी माँ के आशीर्वाद से मिलती है।

➤भवेश चतुर्वेदी
उप निदेशक (पी– I)

डिजीटलीकरण से लाभ एवं हानियाँ

डिजीटलीकरण सभी उपलब्ध बड़ी से बड़ी सभी सूचनाओं, बड़े से बड़े तथ्यों का वह संग्रह है जिसे कम्प्यूटर के माध्यम से बहुत सूक्ष्म रूप में डिजीटल रूप में तैयार कर सुरक्षित, संरक्षित और अनुरक्षित किया गया है। यय भौतिक वस्तुओं, सूचनाओं का डिजीटल संग्रहालय है। डिजीटलीकरण के अनेक लाभ और हानि हैं। यहाँ इस संबंध में संक्षिप्त चर्चा की गई है।

लाभ

- आजकल सभी की निर्भरता इंटरनेट के साथ–साथ कंप्यूटर और मोबाइल फोन पर बढ गई है। इनके माध्यम से सभी प्रश्नों का उत्तर तत्काल प्राप्त कर लेते हैं। यह डिजिटलीकरण से ही संभव है। डिजिटलीकरण से डेटा के केंद्रीकरण और सुलभता की सुविधा भी होती है ।
- डिजिटलीकरण से संवाद करने की क्षमता में वृद्धि हुई है। अब अनेक ऐप की मदद से अलग–अलग प्रारूपों में संदेश भेजे जा सकते हैं।
- डिजिटलीकरण से नए विचारों को बेहतर तरीके से संप्रेषित किया जा सकता है।

- डिजिटलीकरण ने रोजगार अवसरों में अभूतपूर्व वृद्धि की है। सभी व्यावसायिक गतिविधियाँ ऑनलाइन की जा सकती हैं। इससे ऑनलाइन व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा में वृद्धि के साथ ही व्यवसाय में अकल्पनीय वृद्धि हुई है।
- डिजिटलीकरण ने वाणिज्यिक प्रतिस्पर्धा को इतना बढ़ा दिया है कि उपभोक्ताओं के पास उत्पाद चयन करने के लिए बहुत सारे विकल्प हैं। यह एक सकारात्मक पहलू है। अब उपभोक्ता बड़ी–बडी चुनिंदा प्रमुख कंपनियों द्वारा तय की गई उत्पाद के मूल्य से निर्देशित नहीं रहता। अब उपभोक्ता स्वयं उचित निर्णय ले सकता है।
- डिजीटलीकरण से सूचना तक पहुँच, आसान हो गई है और संचार और सूचना तत्काल साझा करने की क्षमता प्राप्त हो गई है।
- शैक्षिक,साहित्यिक, आर्थिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, पौराणिक,वैज्ञानिक,सामाजिक, चिकित्सा संबंधी डिजीटलीकरण के माध्यम से संग्रहीत पुरातन और नवीनतम उत्तम, तार्किक, सटीक, प्रामाणिक सामग्री इंटरनेट के माध्यम से तत्काल प्राप्त की जा सकती है।
- डिजिटल युग डिजिटल मुद्रा भी ला रहा है जो वित्तीय आदान–प्रदान को तेज और आसान बनाता है। ऐसा माना जा रहा है कि अन्य प्रचलित मुद्राओं के साथ ही क्रिप्टोकरेंसी जल्द ही सबसे लोकप्रिय मुद्रा बन सकती है। उपभोक्ता क्रिप्टोकरेंसी खरीदने और बेचने के लिए कुछ मिनटों में ही निःशुल्क खाता बना सकते हैं।
- डिजीटलीकरण के कारण अब व्यक्ति को सम्पत्ति के दस्तावेज, वाहनों के दस्तावेज, शिक्षा संबंधी दस्तावेज भौतिक रूप में रखना आवश्यक नहीं है। उन्हें कहीं भी सुरक्षित रखा जा सकता है। डिजी लॉकर में उनको डिजीटल रूप में अपने मोबाइल में ही रखा जा सकता है।

हानियाँ

- डिजिटलीकरण के लाभों का एक दूसरा पहलू भी है। हमारी संपत्ति और व्यक्तिगत जानकारी पर नियंत्रण के केंद्रीकरण के यह कहावत सिद्ध हो जाती है कि सभी अंडे एक ही टोकरी में रख दिए हैं। इससे व्यक्ति की निजी और उसकी संपत्ति की जानकारी अप्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हो जाती है। डिजीटलीकरण में मानवीय त्रुटि हो सकती है, जो बहुत बड़ी हानि का कारण बन सकती है। इसलिए किसी ऐसी चीज पर भरोसा करके जो 100% विश्वसनीय नहीं है, हम अपनी संपत्तियों पर नियंत्रण खोने का जोखिम उठा रहे हैं। नियंत्रण सौंपने से हम हैकर्स जैसे डिजिटल अपराध के लिए भी खुल जाते हैं, जिनमें अज्ञात विनाशकारी क्षमता होती है।
- संचार की सहजता हमारे वास्तविक जीवन के सामाजिक कौशल पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है तथा समुदाय की ताकत को कमजोर कर सकती है।संचार माध्यम की आसान उपलब्धता के कारण व्यक्तियों के निजी और व्यक्तिगत संबंधों और रिश्तों की प्रगाढ़ता के मूल्यों में गिरावट आई है।
- सामाजिक विसमता और अपराधों में वृद्धि हुई है।
- डिजीटलीकरण के कारण इंटरनेट से शैक्षिक सामग्री तत्काल उपलब्ध हो जाती है । इसलिए छात्रों ने शैक्षिक सामग्री सहेज कर रखना त्याग दिया है, गणनात्मक प्रश्नों को हल करने के लिए इंटरनेट पर पूरी निर्भरता होने के कारण शिक्षा के स्तर में कमी आई है और दिन प्रति दिन बच्चों की बौद्धिक क्षमता एकदम निचले स्तर पर चली जा रही है।
- सूचना तक आसान पहुंच से इसके दुरुपयोग की संभावना बढ़ जाती है, उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य स्थितियों के लिए गलत स्व–निदान, तथा गलत सूचना के प्रसार की संभावना बढ़ जाती है जिसका उपयोग हेरफेर के उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।
- अंततः, डिजिटल आदान–प्रदान की तेज गति, उथली प्रकृति एक अधिक निष्क्रिय समाज का निर्माण कर सकती है, जो विचारों पर गहन स्तर पर या किसी जुनून के साथ विचार करने में असमर्थ है।

निष्कर्ष

अतः यह स्पष्ट है कि डिजिटलीकरण के अनेक लाभ हैं, जैसे सूचना तक पहुँच आसान होना, संचार और सूचना साझा करने की क्षमता में वृद्धि, नए रोजगार सृजित होना और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा वृद्धि होना। लेकिन इसके साथ ही यह अपने साथ अनेक हानियों का भंडार भी ले कर आती है। जैसे, अविश्वसनीय स्रोत पर निर्भरता, हैक होने का जोखिम, सामाजिक कौशल और समुदाय की भावना का कमजोर होना और सूचना का दुरुपयोग। इसलिए डिजीटलीकरण का उपयोग करते समय इसके लाभ और हानि के दोनों पहलुओं को ध्यान में रख कर ही किया जाना उचित रहेगा।

➢राजकुमार अरोड़ा
सहायक निदेशक (वि. एवं. प्रशा.)

डिजीटल विभाजन एवं ज्ञान सूचना केन्द्र

प्रस्तावना : आधुनिक युग में समाज दो समूहों में बंटा हुआ है:–

- ❖ वह समाज जो सूचना और प्रौद्योगिकी से पूर्णतः यां आंशिक रूप में परिचित है।
- ❖ वह समाज जो सूचना और प्रौद्योगिकी से अभी तक अपरिचित है और उसका जीवन पारंपरिक व्यवस्थाओं में ही चल रहा है।

सूचना प्रोद्यौगिकी और इंटरनेट ने विश्व स्तर तक की जानकारी उपलब्ध कराना आसान कर दिया है। इससे हर समय विश्व के हर क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

जैसा कि उल्लेख किया गया है कि समाज का एक समूह सूचना प्रोद्यौगिकी का जानकार है, इसका उपयोग करने में सक्षम है, जबकि दूसरा नहीं। इस तरह डिजीटल प्रक्रिया के माध्यम से समाज के बंट जाने को ही डिजीटल विभाजन कहा जाता है।

डिजीटल विभाजन शब्द का प्रारंभ 1990 के दशक में हुआ जिससे वर्ष 1996 में लागू किए गए दूरसंचार अधिनियम के द्वारा प्रसिद्धि मिली । 1990 के दशक में राष्ट्रीय दूर संचार और सूचना प्रशासन (एनटीआईए) ने दूरसंचार सुविधा को देश के ग्रामीण एवं शहरी सभी क्षेत्रों में पहुँचाने का कार्य किया। इंटरनेट प्रभावशाली व्यवस्था है जो किसी भी राष्ट्र को विकसित और सक्षम बना सकता है। इसलिए सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार को अपनाना निजी उन्नति के साथ–साथ देश के विकास के लिए अति आवश्यक है। नेसकोम (NASSCOM) के प्रमुख देवांग ने कहा था आज के परिवेश में रोटी, कपड़ा, मकान और इंटरनेट आवश्यक हैं। इनके अभाव में जीवन अधूरा है।

डिजीटल विभाजन के कारण :

- ➢ **विद्युत की असमान आपूर्ति :** सरकार की नीति तथा विद्युत उपलब्धता की कमी के कारण अधिकतर क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति की मात्रा असमान होती है। अनेक बार विद्युत अनापूर्ति के कारण सूचना प्रौद्योगिकी की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है। इसलिए यह विद्युत की असमान आपूर्ति डिजीटल विभाजन का कारण बन जाती है।
- ➢ **इंटरनेट की पहुँच:** विदेश संचार निगम लिमिटेड ने पूरे देश में इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने का पूरा प्रयास किया है। भारत सरकार सभी के लिए इंटरनेट उपलब्ध कराने के लिए अनेक प्रयास कर देश को "सूचना युग" में प्रवेश करा रही है।

क्षेत्रों में अभी भी इसकी पहुँच नहीं है। यह भी डिजीटल विभाजन का कारण बन जाता है।

- ➢ सूचना प्रौद्योगिकी के ज्ञान का अभाव : अभी सूचना प्रौद्योगिकी ज्ञान का अभाव भी डिजीटल विभाजन का कारण है।
- ➢ देश के सभी क्षेत्रों में संचार माध्यमों की असमानता : देश के सभी क्षेत्रों में अभी भी संचार माध्यमों की असमान उपलब्धता समान न होना डिजीटल विभाजन का कारण है।
- ➢ इंटरनेट स्पीड की कमी : अभी भी इंटरनेट की स्पीड कम होना डिजीटल विभाजन का कारण है।

डिजीटल विभाजन पर नियंत्रण पाने के उपाय :

- ➢ नेटवर्क उपलब्धता में वृद्धि : जहां तक अपने देश का संबंध है यहां विश्व की सबसे बड़ी ग्रामीण ब्रोड बैंण्ड परियोजना है। जो "भारत नेट्स" के नाम से जाना जाता है। यह देश के 25 लाख ग्राम पंचायतों को ब्रॉड

बैंड कनेक्टिविटी की सुविधा प्रदान करता है। चरण–I में एक लाख ग्राम पंचायतों को जोड़ा गया है। चरण–II में सेटेलाइट मीडिया के माध्यम से लगभग एक लाख चालिस हजार ग्राम पंचायतों को नेटवर्क से जोड़ा गया है।

- सूचना ग्राम अनुसंधान पहल– एक ऐसी पहल है जिससे भारत सरकार आईसीटी के माध्यम से ग्रामीण जीवन में सुधार लाने का प्रयास कर रही है। इसलिए ग्रामीण ज्ञान केन्द्रों के द्वारा ग्रामों की जनता की ज्ञान में वृद्धि की जा रही है। इस पहल को देश के सभी गाँव तक पहुँचाने की आवश्यकता है।
- ज्ञानदूत (सूचना संदेश वाहक): यह एक समुदाय के स्वामित्व वाला तकनीकी रूप से बहुत उन्नत, पर्यावरण अनुकूल सूचना कियोस्क होता है। यह सूचना संदेश वाहक डब्ल्यूएलएल तकनीक पर काम करता है। इसका उपयोग मध्य प्रदेश के पांच जिला ब्लॉक में किया जा रहा है। जहां 20 कियोस्क सूचना केन्द्र बनाए गए हैं। गांव के बच्चे इन सूचना कियोस्क से अपना व्यवसाय चला रहे हैं। यह सरकार द्वारा ईगवर्नेस प्लेटफॉर्म विकसित करने का उत्तम प्रयास है।
- सिम्प्यूटर परियोजना : कम्प्यूटर के कम लागत वाले पोर्टेबिल प्रतिस्थापन को सिम्प्यूटर कहा जाता है। इसकी प्रतिस्थापना से डिजीटल विभाजन को कम किया जा रहा है।
- ई–चौपाल योजना: विगत 6 वर्शों में अत्यन्त व्यापक रूप में ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंची यह योजना ग्रामीण जनता के लिए अत्यन्त लाभदायक है। इस परियोजना से मध्यप्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि में लगभग 5 लाख किसानों की सेवा की जाती है। ई–चौपाल योजना से पहले किसान को अपना उत्पाद बेचने या कच्चा माल खरीदने में बहुत समस्या होती थी। परन्तु अब धन जुटाने के लिए ई–चौपाल के पास व्यावहारिक तकनीक उपलब्ध है।
- राष्ट्रीय विज्ञान डिजीटल पुस्तकालय (एनएसडीएल) : सरकार ने छात्रों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी साहित्य सस्ता उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय विज्ञान डिजीटल पुस्तकालय योजना बनाई। अप्रैल 2002 में एक योजना समिति ने कार्य समूह का गठन किया और इसे 2004 में लागू कर दिया । इसके माध्यम से देश के दूरस्थ हिस्सों के छात्र इंटरनेट से टेक्स्ट डाउनलोड कर पाते हैं। योजना से ई–पुस्तकें विकसित की जा रही हैं। अनेक प्रकाशक कम लागत में साहित्य उपलब्ध करा रहे हैं।
- भारतीय राष्ट्रीय डिजीटल पुस्तकालय (एनडीएलआई) : यह शिक्षा संसाधनों का एक आभासी संग्रह है। भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के माध्यम से अपने राश्ट्रीय मिशन के माध्यम से शिक्षा के लिए इसे प्रायोजित करता है। यह शोधकर्ताओं और आजीवन रहने वालों के साथ–साथ सभी क्षेत्रों में सभी लोकप्रिय हर प्रकार के एक्सेस डिवाइस तैयार करने और अलग अलग छात्रों तथा सभी शैक्षणिक स्तरों की सहायता के लिए डिजाइन किया गया है। यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर द्वारा निर्मित, संचालित और अनुरक्षित है।
- डिजीटल मोबाइल पुस्तकालय : भारत सरकार पुणे में सेंटर फॉर एडवांस कंप्यूटिंग (सी–डैक) के सहयोग से लाखों डिजिटल किताबें जनसामन्य तक पहुंचाने की योजना पर काम कर रही है। इंटरनेट–सक्षम डिजिटल लाइब्रेरी साक्षरता को बढ़ावा देगी। यह उपग्रह इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ एक मोबाइल वैन का उपयोग करेगा। यह कार्यक्रम देश में ज्ञान की वृद्धि के लिए सरकार द्वारा किया गया सकारात्मक उपाय है।
- सामुदायिक शिक्षण एवं सूचना केन्द्र : सामुदायिक शिक्षण केन्द्र विभिन्न तरह की जानकारियों को सभी के पास तक पहुंचाते हैं। सामुदायिक शिक्षण केन्द्र एवं अध्ययन केन्द्र ग्रामीण समुदाय को विश्वसनीय, उपयोगी और अद्यतन जानकारी प्रदान करते हैं। इसी तरह सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, केरल द्वारा राज्य पुस्तकालय परिशद के सहयोग से तिरूवनन्तपुरम जिले में कल्लरा ग्राम पंचायत पुस्तकालय में प्रथम कम्प्यूटरीकृत ग्रामीण सूचना केन्द्र बनाया हैं। जिले में एक केन्द्र के आधार पर राज्य में 14 ग्रामीण सूचना केन्द्र भी बनाए गए हैं। ये केन्द्र ग्रमीण निवासियों को मुफ्त इंटरनेट कनेटिविटी प्रदान करते हैं।

➢रजनीश कुमार
सहायक निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

मधुबनी चित्रकला

मधुबनी चित्रकला, जिसे मिथिला चित्रकला भी कहते हैं, बिहार के मिथिला क्षेत्र की एक प्रमुख कला परंपरा है। यह चित्रकला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा बनाई जाती है और इसमें प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। इस कला का आरंभ 1960 में मधुबनी जिले के एक साध्वी, स्वर्गीय महासुन्दरी देवी के साथ हुआ था जिन्होंने रंगीन चित्रकला का परिचय दिया। इसके बाद से ही महिलाएं इस कला को अपनाने लगीं और आज यह कला पूरी दुनिया में मशहूर है। पेंटिंग की इस शैली की विशेषता चमकीले रंगों, ज्यामितीय पैटर्न और शैलीगत आकृतियों का उपयोग है। मधुबनी पेंटिंग का इस्तेमाल अक्सर दीवारों, फर्श और फर्नीचर को सजाने के लिए किया जाता है। इनका इस्तेमाल धार्मिक ग्रंथों और कहानियों को चित्रित करने के लिए भी किया जाता है।

बिहार के दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा, मुजफ्फरपुर, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारम्भ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे–धीरे आधुनिक रूप में कपड़ो, दीवारों एवं कागज पर उतर आई है। मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरुषों ने भी अपना लिया है। वर्तमान में मिथिला पेंटिंग के कलाकारों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मधुबनी व मिथिला पेंटिंग के सम्मान को और बढ़ाये जाने को लेकर तकरीबन 10,000 sq/ft में मधुबनी रेलवे स्टेशन के दीवारों को मिथिला पेंटिंग की कलाकृतियों से सरोबार किया। उनकी ये पहल निःशुल्क अर्थात् श्रमदान के रूप में किया गया। श्रमदान स्वरूप किये गए इस अदभुत कलाकृतियों को विदेशी पर्यटकों व सैनानियों द्वारा खूब पसंद किया जा रहा है।

माना जाता है ये चित्र राजा जनक ने राम–सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे। मिथिला क्षेत्र के कई गांवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये पेंटिंग गांवों की मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर पेपर के कैनवास पर खूब बनाया जाता है। समय के साथ साथ चित्रकार कि इस विधा में पासवान जाति के समुदाय के लोगों द्वारा राजा शैलेश के जीवन वृतान्त का चित्रण भी किया जाने लगा। इस समुदाय के लोग राजा सैलेश को अपने देवता के रूप में पूजते भी हैं।

हिन्दू देवी–देवताओं की तस्वीर, प्राकृतिक नजारे जैसे– सूर्य व चंद्रमा, धार्मिक पेड़–पौधे जैसे– तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलेंगे। मधुबनी पेंटिंग दो तरह की होतीं हैं– भित्ति चित्र और अरिपन या अल्पना। मधुबनी पेंटिंग अपनी सादगी के लिए जानी जाती हैं, क्योंकि इनमें इस्तेमाल किए जाने वाले ब्रश और रंग अक्सर प्राकृतिक स्रोतों से लिए जाते हैं। जबकि पेंटिंग ज्यादातर चावल के पाउडर से बनाई जाती हैं, रंग हल्दी, पराग, पेंट, नील, विभिन्न फूलों, चंदन और विभिन्न पौधों और पेड़ों की पत्तियों से बनाए जाते हैं। आवश्यक रंग प्राप्त करने के लिए कई तरह के प्राकृतिक स्रोतों को भी मिलाया जाता है और

उनका उपचार किया जाता है। कारीगर खुद ही रंग तैयार करते हैं। पेंटिंग खत्म करने के बाद भी, अगर कलाकारों को कोई खाली जगह मिलती है, तो वे अक्सर उसे फूलों, जानवरों, पक्षियों और ज्यामितीय पैटर्न के रूपांकनों से सजाते हैं। बॉर्डर को अक्सर दोहरी रेखा से खींचा जाता है।

चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है। जैसे गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्र में निखार लाया जाता है, जैसे– पीला, गुलाबी और नींबू रंग। यह जानकर हैरानी होगी की इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है, जैसे– हल्दी, केले के पत्ते, लाल रंग के लिऐ पीपल की छाल प्रयोग किया जाता है। और दूध। भित्ति चित्रों के अलावा अल्पना का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाजे के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो लेकिन आजकल इसे घर के शुभ कामों में बनाया जाता है। चित्र बनाने के लिए माचिस की तीली व बाँस की कलम को प्रयोग में लाया जाता है। रंग की पकड़ बनाने के लिए बबूल के वृक्ष की गोंद को मिलाया जाता है।

समय के साथ मधुबनी चित्र को बनाने के पीछे के मायने भी बदल चुके हैं, लेकिन ये कला अपने आप में इतना कुछ समेटे हुए हैं कि यह आज भी कला के कद्रदानों की चुनिन्दा पसंद में से है।

मधुबनी चित्रकला की थीम और शैली:

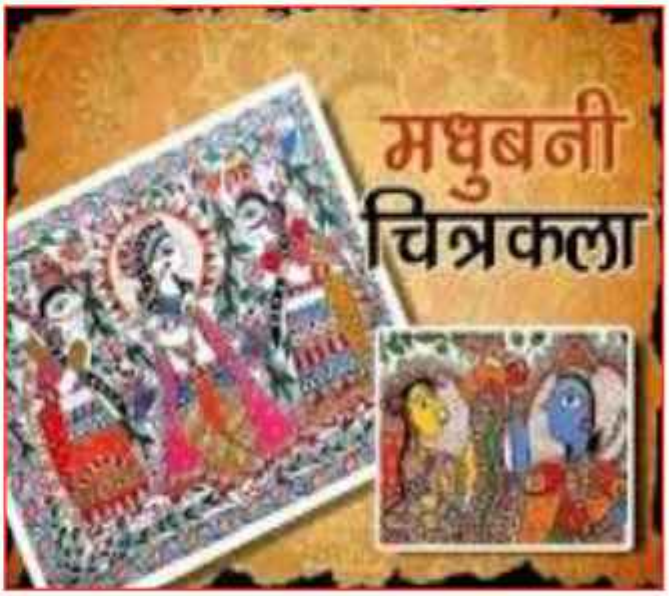

शुरुआत में कई व्यक्तियों के समूह ने मधुबनी कला चित्रकला का अभ्यास किया। इसलिए चित्रकला को पाँच अलग–अलग शैलियों में विभाजित किया गया। तांत्रिक, कोहबर, भरनी, गोदना और कटचनी मधुबनी चित्रकला की कुछ अनूठी शैलियाँ हैं। वर्तमान कलाकारों द्वारा विभिन्न शैलियों के सम्मिश्रण के साथ, यह वर्ग अंतर समाप्त हो गया है। हालाँकि, इस कला शैली को और अधिक समझने के लिए, इन पाँच आकर्षक मधुबनी चित्रकला शैलियों पर विचार करें।

तांत्रिकः पारंपरिक मधुबनी पेंटिंग डिजाइन पारंपरिक और धार्मिक लेखन को दर्शाती है। इन चित्रों में पारंपरिक रूप से हिंदू पौराणिक पात्रों को दिखाया जाता है, जिन्हें हिंदू आबादी द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता है। भारत में लोग आमतौर पर प्रार्थना जैसे शुभ अवसरों पर अपने घरों में इन चित्रों को लटकाते हैं।

कोहबरः कोहबर पेंटिंग मधुबनी कला के सबसे प्रसिद्ध और विशिष्ट प्रकारों में से एक है। यह पेंटिंग तकनीक हिंदू विवाह उत्सवों से जुड़ी है, और इसे आमतौर पर दूल्हा और दुल्हन के घर की दीवारों पर बनाया जाता है। तंत्र राज, योग योगिनी और शिव शक्ति, जिसका अर्थ है भगवान शिव के आशीर्वाद से शक्ति, कोबर के अन्य नाम हैं।

भरनीः भरनी एक हिंदी शब्द है जिसका अर्थ है "भरना।" यह पेंटिंग शैली अपने डिजाइन के लिए प्रसिद्ध है जिसमें चमकीले और चमकीले रंगों का उपयोग किया जाता है। आमतौर पर, भरनी पेंटिंग हिंदू देवताओं की छवियों और भारतीय पौराणिक कथाओं में उनके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती हैं।

गोदनाः गोदना पेंटिंग तकनीक पेंटिंग की सबसे सरल विधियों में से एक है, जिसमें डिजाइन बनाने के लिए केवल बांस की कलम और काजल का उपयोग किया जाता है। इस शैली द्वारा जानवरों, पक्षियों, पौधों, पेड़ों और फूलों जैसे प्राकृतिक जीवों का प्रतिनिधित्व किया जाता है। यह पेंटिंग तकनीक आम तौर पर कैनवास पर की जाती है, लेकिन यह टैटू के रूप में भी लोकप्रिय है।

कचनी–कचनी पेंटिंग शैली कायस्थ समूह की एक पारंपरिक पेंटिंग शैली है। इस विशेष कला रूप की एक अलग शैली है जो मुख्य रूप से केवल दो रंगों के साथ की जाती है। यह पेंटिंग शैली दर्शकों को सीमित रंग पैलेट के साथ आकर्षित करती है जो प्राकृतिक पहलुओं की अनूठी विशेषताओं पर जोर देती है। मधुबनी पेंटिंग डिजाइन में जानवरों, फूलों और अन्य प्राकृतिक वस्तुओं को दर्शाया गया है।

मधुबनी चित्रकला में आमतौर पर देखे जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण प्रतीक हैंरू

- मछली : मछली उर्वरता, समृद्धि और सौभाग्य का प्रतीक है। यह देवी लक्ष्मी की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करती है। मधुबनी कला में मछलियों को अक्सर जोड़े में दर्शाया जाता है।
- कमल का फूल : कमल का फूल पवित्रता, ज्ञान और आध्यात्मिक विकास का प्रतीक है। यह भगवान विष्णु से जुड़ा हुआ है।
- मोर : मोर सुंदरता, शालीनता और राजसीपन का प्रतिनिधित्व करता है। यह अमरता का प्रतीक है क्योंकि मोर के मरने के बाद भी इसके पंख नहीं सड़ते।
- सूर्य और चंद्रमा : सूर्य और चंद्रमा पुरुषत्व और स्त्रीत्व, प्रकाश और अंधकार की विरोधी किन्तु पूरक ऊर्जाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2018–2019 में भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल में एक ट्रेन पर मधुबनी पेंटिंग कर चलाया गया था, जिसे विश्व में बहुत प्रसंसा मिली। दरभंगा मधुबनी के 50–60 कलाकारों ने मिलकर अपने अथक मेहनत से इस पर सुंदर पेंटिंग कर सजाया था। इनमे कुछ मुख्य कलाकार खुशबु चौधरी प्रीति झा, अंजली झा, अमरज्योति,रागिनी, मुनकी तथा आयुषी हैं।

➢जीतेन्द्र झा
सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

ग्रामीण विकास में ग्रामीण सड़कों की भूमिका

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, जहां लगभग 65: जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, ग्रामीण विकास और आर्थिक सुधार में ग्रामीण सड़कों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है। सड़कों का उचित नेटवर्क ग्रामीण जीवन को सशक्त बनाने के लिए आवश्यक है। ग्रामीण सड़कों का विकास न केवल ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन में भी व्यापक सुधार करता है। ग्रामीण सड़कों के निर्माण से होने वाले लाभ निम्नलिखित क्षेत्रो में स्पष्ट रुप से दिखते हैं।

कृषि और आर्थिक विकास में योगदान

ग्रामीण सड़कों का सबसे महत्वपूर्ण लाभ कृषि क्षेत्र में देखने को मिलता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, और किसानों के लिए उनकी उपज को बाजार तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है। अच्छी सड़कों के माध्यम से किसान अपनी उपज को सीधे बाजार में बेच सकते हैं, जिससे बिचौलियों की भूमिका कम होती है और किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य मिलता है। इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है, जो अंततः ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है।

इसके अतिरिक्त, ग्रामीण सड़कों का निर्माण स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा करता है। निर्माण कार्यों में स्थानीय श्रमिकों का उपयोग होता है, जिससे उन्हें रोजगार मिलता है और उनकी आय में सुधार होता है। यह ग्रामीण विकास को गति देता है और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी को कम करने में मदद करता है।

सामाजिक और शैक्षिक सुधार

ग्रामीण सड़कों के विकास से शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छे विद्यालय और कॉलेजों तक पहुंच बढ़ती है, जिससे बच्चों की स्कूलों तक पहुंच आसान हो जाती है। यह शिक्षा के स्तर में सुधार लाता है और समाज में जागरूकता बढ़ाता है।

अच्छी सड़कों से शिक्षकों और अन्य शैक्षिक कर्मचारियों का आवागमन भी सरल हो जाता है, जिससे विद्यालयों में नियमित शिक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप, ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चे बेहतर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और अपने जीवन में सफल हो सकते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच

ग्रामीण सड़कों का एक और महत्वपूर्ण लाभ स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार है। जब सड़कों की स्थिति बेहतर होती है, तो ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग आसानी से अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों तक पहुंच सकते हैं। यह विशेष रूप से आपातकालीन स्थिति में महत्वपूर्ण होता है, जहां समय पर उपचार न मिलने के कारण कई लोगों की जान खतरे में पड़ सकती है।

इसके अलावा, बेहतर सड़कों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा आपूर्ति और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता भी बढ़ती है। यह ग्रामीण स्वास्थ्य में सुधार करता है और जनसंख्या के जीवन स्तर को ऊंचा उठाता है।

आपदा प्रबंधन और सुरक्षा

ग्रामीण सड़कों का महत्व आपदा प्रबंधन और सुरक्षा के क्षेत्र में भी है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप या सूखे के समय में राहत और बचाव कार्यों के लिए सड़कों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अच्छी सड़कों के माध्यम से राहत सामग्री, दवाइयां और बचाव दल समय पर प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंच सकते हैं, जिससे जानमाल की हानि को कम किया जा सकता है।

साथ ही, बेहतर सड़कों से पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों का भी गांवों तक पहुंचना आसान हो जाता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कानून व्यवस्था बनाए रखने में मदद मिलती है।

समग्र ग्रामीण विकास

ग्रामीण सड़कों का विकास ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र विकास को गति देता है। जब गांवों में सड़कों का अच्छा नेटवर्क होता है, तो वहां छोटे–छोटे व्यवसाय और उद्योग स्थापित हो सकते हैं। इससे स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को अपने गांव में ही रोजगार के अवसर मिलते हैं।

सड़कों की अच्छी व्यवस्था से पर्यटन को भी बढ़ावा मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक धरोहर और पारंपरिक हस्तशिल्प के माध्यम से पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम मिलता है और स्थानीय लोगों की आय में वृद्धि होती है।

कुल मिलाकर, ग्रामीण सड़कों का महत्व बहुआयामी है। यह ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सड़कों के माध्यम से न केवल किसानों और श्रमिकों को लाभ मिलता है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और सुरक्षा के क्षेत्र में भी सुधार होता है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि मजबूत ग्रामीण सड़कों का नेटवर्क ग्रामीण भारत के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है।

➢पंकज कुमार सिन्हा
सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)

प्रथम गुरु माँ की शिक्षा

अक्सर कहा गया है कि माँ बच्चे की पहली शिक्षक होती है।

यह सच है!!!

हर माँ अपने बच्चों को सबसे अच्छा सिखाती है (कम से कम हम माँएं तो यही सोचती हैं), लेकिन कभी–कभी हमें ऐसे हालात का सामना करना पड़ता है जहाँ हमें तुरंत समझ नहीं आता कि क्या सिखाएं और क्या नहीं...

आज मैं भी ऐसी ही स्थिति से गुजरी जब मेरा 8 साल का बेटा स्कूल से लौटने के बाद उत्सुकता और घबराहट के साथ मुझसे पूछ बैठा, "मम्मा, क्या किसी को बीच की उंगली दिखाना बुरा होता है?"

एक माँ होने के नाते मेरा तत्कालिक जवाब था, "क्या?"

फिर मुझे अहसास हुआ कि वह अब भी मेरी ओर देख रहा था और मेरे जवाब का इंतजार कर रहा था। अपने जवाब को ढकते हुए मैंने फिर कहा, "मुझे नहीं पता।"

जैसा कि मैं अपने बेटे को जानती हूँ, वह मेरे इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुआ और उसने सोचा कि शायद मैंने उसकी बात ठीक से नहीं सुनी, इसलिए उसने मासूमियत से सवाल दोहराया। अब तक मैं शांत हो चुकी थी, खुद को संयत किया और इस बात को समझने के झटके से उबर गई कि मेरा 8 साल का बच्चा कुछ ऐसा जानना चाहता है जो सामान्य नहीं है। मैंने खुद को उसके सभी सवालों का सामना करने के लिए तैयार किया और इस विषय पर अपनी अनभिज्ञता जताते हुए दो बातें समझने की कोशिश की।

पहली, यह जांचने के लिए कि वह इस विषय पर कितना जानता है,

और दूसरी, उसके सवालों के जवाब के लिए खुद को तैयार करने के लिए।

मुझे यह दिखाना पड़ा कि मैं उस चीज के बारे में नहीं जानती थी जिसके बारे में वह बात कर रहा था, लेकिन अंदर से मैं खुद को आश्वस्त कर रही थी कि मैं उसके

सभी सवालों का सामना कर सकती हूँ। क्योंकि अगर मैं उसे सीधे ही कह देती, "हाँ, यह बुरा है," तो उसने जरूर पूछा होता, "क्यों और कैसे?" क्योंकि उसके लिए यह बस एक उंगली थी। खैर, मैंने उससे पूछा कि वह इस तरीके के बारे में क्या जानता है। उसने मुझे एक क्रिया दिखाई, लेकिन ऐसा करते समय वह डर रहा था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि इसे उसके द्वारा किया गया कार्य माना जाए।

वैसे भी, चर्चा इस निष्कर्ष पर समाप्त हुई कि "किसी को बीच की उंगली दिखाना एक बुरा तरीका है, एक भद्दी क्रिया है, और यह कभी किसी के साथ मत करो।" मैं अभी भी यह नहीं बता पाई "क्यों"।

अब मैं, एक माँ और एक वयस्क इंसान के रूप में, वास्तव में सोच रही हूँ कि क्या यह इन छोटे बच्चों के लिए ऐसी बातें जानने या करने के लिए बहुत जल्दी है, क्योंकि जिस बच्चे ने यह क्रिया की थी वह भी मेरे बेटे की उम्र का ही था। और मैं वास्तव में समझना चाहती हूँ कि इन नए बच्चों के पालन–पोषण में हम कहाँ गलत हो रहे हैं और क्या सिखाना है, क्या नहीं सिखाना है, और कब सिखाना है।

क्योंकि मैं मानती हूँ कि हमारे बच्चों के विकास में सबसे शुरुआती उम्र से ही निवेश करना हमारे परिवार और हमारे देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण योगदान है!!!

➤दीपक गुप्ता
लीड प्लानिंग एण्ड जीआईएस, (आईसीटी)

पीएमजीएसवाई ग्रामीण विकास धारा

चले जिस पर सरपट जिंदगी कही
सीधी कहीं मोड़ हूँ मैं दिखूं गैरो से अलग थलग
सी पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

तय कर जाते हैं सफर अपने
छोटी होकर भी जोर हूँ मैं
जोड़ती हूँ मैं कई सपने
पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

बच्चों को स्कूल पहुँचाती
व्यस्क को रोजगार केंद्र
बुजुर्गों को अस्पताल छोड़ने
द्वार तक जाती हूँ मैं।

बदले मैं कुछ ना माँगती
सबको मंजिल पर पहुँचा के
मैं सफर में ही रह जाती हूँ
पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

हर मौसम का सामना करती
राहों की साथी बन जाती हूँ
गाँव की खुशहाली की नींव
पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

पहाड़ों की ऊँचाई से
मैदानी ढलान तक फैली
हर दिशा में फैलाती उजाला
पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

गाँवों को शहरों से मिलाती
संस्कृति की डोर हूँ मैं
समृद्धि की राह पर बढ़ती
पिएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

दरिया के गुरूर को चीरती
ग्रामीण विकास की शक्ति हूँ मैं
मेरी ताकत, मेरे गांव की मिट्टी
पीएमजीएसवाई की रोड़ हूँ मैं।

➢सुरेन्द्र चौधरी
युवा सिविल अभियन्ता (पी–।।।)

मेरे पापा

खून पसीना बहाकर कमाते,
ऐसे मेरे पापा हैं,
घर की खातिर जीवन संवारते,
ऐसे मेरे पापा हैं।
अच्छे विचार, अच्छे आचरण, अच्छे
समाज का ज्ञान देते, ऐसे मेरे पापा हैं।
जिनकी इच्छा सिर्फ मेरी खुशी, ऐसे मेरे पापा हैं।
उलझनों से भरी दुनिया में, दीवार बनकर साथ देते,
खुद उदास, होकर भी हमें हंसाते, ऐसे मेरे पापा हैं।
अच्छे कपड़े, अच्छे जूते, फोन, गाड़ी सब दिलाते,
हंसते–हंसते हमें हंसाते, ऐसे मेरे पापा हैं।
माँ को वरुण की माँ कहकर पुकारते, ऐसे मेरे पापा हैं,
प्रेम, सम्मान, समर्पण सिखाते, ऐसे मेरे पापा हैं।
अपने शौक छुपाकर, मेरा भविष्य सुधारते,
ऐसे मेरे पापा हैं, खुद को कुछ न सही, मुझे अपने में
पाते हैं, ऐसे मेरे पापा हैं।
पेड़ की छांव बनकर घर को सवारते, ऐसे मेरे पापा
हैं, समाज को न सुनकर मुझे समझते, ऐसे मेरे पापा
हैं। मेरी खुशी में खुश होते, ऐसे मेरे पापा हैं,
भगवान का स्वरूप जैसे, ऐसे मेरे पापा हैं।
भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव का बलिदान बताकर
हममें जोश जगाते हैं, देश हित की बात कर देशभक्ति
हमें सिखाते, ऐसे मेरे पापा हैं।
बड़ा हुआ तो पता चला, कैसे मेरे पापा हैं, संघर्ष,
ममता, करुणा की मूरत, ऐसे मेरे पापा हैं।

➢वरूण शाक्य
युवा परामर्शदाता अभियन्ता (पी–।)

उभरती तकनीकः कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हमारे जीवन में उसकी निर्भरता

आज की दुनिया में तकनीक ने हमारे जीवन को बहुत बदल दिया है। इनमें सबसे चर्चित और महत्वपूर्ण तकनीक है – कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जिसे अंग्रेजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कहते हैं। यह तकनीक हमारे रोजमर्रा के जीवन और कामकाज का अहम हिस्सा बन गई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) क्या है? : कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर और मशीनों को सोचने और समझने की क्षमता देती है। यह इंसानों की तरह समस्याओं का हल खोजने, भाषा समझने और निर्णय लेने में सक्षम होती है।

हमारे रोजमर्रा के जीवन में एआई

- स्मार्टफोन और डिवाइसः हमारे स्मार्टफोन में एआई का उपयोग होता है। जैसे वॉयस असिस्टेंट (सिरी, गूगल असिस्टेंट) जो हमारे सवालों का जवाब देते हैं, और फेस रिकग्निशन जो हमारे फोन को सुरक्षित रखता है।
- सोशल मीडियाः फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे प्लेटफार्म एआई का इस्तेमाल करते हैं। यह तकनीक हमें वही पोस्ट्स और विज्ञापन दिखाती है जो हमारी रुचि के अनुसार होते हैं।
- ऑनलाइन शॉपिंगः जब हम ऑनलाइन शॉपिंग करते हैं, तो एआई हमारी पसंद के अनुसार उत्पादों के सुझाव देता है।
- घर से ऑफिस तक के कामः हम घर के कामों में भी एआई का इस्तेमाल कर रहे हैं, जैसे स्मार्ट होम डिवाइसेस (गूगल होम, अमेजन एलेक्सा) जो हमारे काम को आसान बनाते हैं। ऑफिस के कामों में भी AI का उपयोग बढ़ता जा रहा है, जैसे ईमेल फिल्टरिंग, शेड्यूलिंग और डेटा एनालिसिस में।

कार्यस्थल पर एआई

- डाटा एनालिसिसः कंपनियां अपने डाटा का विश्लेषण करने के लिए एआई का उपयोग करती हैं, जिससे व बेहतर निर्णय ले पाती हैं।

- कस्टमर सर्विसः कंपनियां अब चैटबॉट्स का इस्तेमाल करती हैं, जो ग्राहकों के सवालों का तुरंत जवाब देते हैं।
- ऑटोमेशनः मैन्युफैक्चरिंग में एआई का उपयोग होता है, जिससे काम जल्दी और सटीक होता है।

एआई (AI) के फायदे और चुनौतियाँ

फायदेः

- कुशलता में वृद्धिः एआई से काम तेजी से और सही होता है।
- समय की बचतः कई काम जो इंसानों को करने में अधिक समय लगता है, वे एआई से जल्दी हो जाते हैं।
- नवाचारः एआईसे हम नई चीजें खोज सकते हैं जो पहले संभव नहीं थीं।

चुनौतियाँः

- नौकरी की असुरक्षाः एआई के कारण कई लोगों की नौकरियां खतरे में आ सकती हैं।
- निजता का सवालः एआई के बढ़ते इस्तेमाल से डाटा प्राइवेसी की चिंताएं बढ़ रही हैं।
- नैतिकताः एआई के फैसलों पर विश्वास और उनकी नैतिकता पर सवाल उठाना भी चुनौती है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे जीवन को नया आयाम दिया है। इससे हमारा काम आसान हुआ है और हम नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं। लेकिन हमें इसके साथ आने वाली चुनौतियों को भी ध्यान में रखना होगा। सही उपयोग और सावधानी से, एआई हमारे भविष्य को बेहतर बना सकता है। हमें एआई की तकनीक को समझना और उसे सही तरीके से अपनाना बहुत जरूरी है। यही भविष्य का रास्ता है, और हमें इसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।

शिवम गोस्वामी
परियोजना अभियन्ता (आईसीटी)

रामेश्वरम की यात्रा

रामेश्वरम भारतीय धर्म और संस्कृति के एक महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। इस पवित्र स्थल का महत्व अपने ऐतिहासिक और धार्मिक संदेशों के लिए जाना जाता है।

मेरा रामेश्वरम से गहरा और विशेष संबंध बचपन से ही रहा है। जब भी मैंने इस स्थल के बारे में सुना या पढ़ा, मेरी रुचि उसकी धरोहर, इतिहास और पावनता में बढ़ गई।

एक दिन, एक आधिकारिक दौरे के दौरान, मुझे अवसर मिला कि मैं रामेश्वरम यात्रा कर सकूं। यह अनुपम सुविधा मेरे लिए एक अद्वितीय अनुभव था। रामेश्वर नगर में पहुँचते ही, मैंने रामेश्वरम में पम्बन ब्रिज को देखा। यह भारत का पहला समुद्री ब्रिज है और इसका दृश्य अत्यंत अद्वितीय था। जिसे देखकर मेरी आँखें खुशी से भर गई। मैंने उस समुद्री हवा और चारों ओर के नावों के दृश्य से प्रेरित होते हुए अपना अभिज्ञान बढ़ाया। ब्रिज पार करने के बाद, मैंने डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का स्मारक देखने का निर्णय लिया। वहाँ रखी हर चीज, मानो बचपन की किताबों में पढ़ी उनकी कहानियाँ बयां कर रही थीं। वहां का मुजेम डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन और उनकी यात्रा को दर्शाता था।

डॉ. कलाम, जो एक छोटे से गाँव से निकलकर देश के सबसे महान वैज्ञानिक और राष्ट्रपति बने, उनकी कहानी अद्वितीय थी। उनके प्रसिद्ध कथन "Dream is not that which you see while sleeping; it is something that does not let you sleep" ने हर किसी के दिलों में एक अलग पहचान बना दी थी। उनकी मेहनत, संघर्ष और उत्साह ने उन्हें उन ऊंचाइयों तक पहुँचाया जहाँ से उनके सपने और उनकी कार्यक्षमता की ख□ास पहचान बनी।

निकटस्थ गेस्ट हाउस में ठहराव लिया, जहाँ से रामेश्वरम मंदिर का रास्ता सीधे जाने के लिए था। सुबह–सुबह तीन बजे हम उठे और मंदिर के एक विशेष आराधना में भाग लेने का निर्णय लिया। यह आराधना प्रतिदिन सुबह पांच बजे तक चलती है, और हमें इसके लिए विशेष दर्शन का मौका मिला। आराधना के बाद, हमने समुद्र में नहाने का निर्णय लिया। रामेश्वरम में एक विशेषता है – वहां के 22 कुंड (शिव तीर्थम महालक्ष्मी तीर्थम, गायत्री तीर्थम, संकु तीर्थम, सरस्वती तीर्थम, सेतु माधव तीर्थम, कवच तीर्थम, गंधमादन तीर्थम, गवया तीर्थम, नाल तीर्थम, नील तीर्थम, चक्रा तीर्थम, ब्रह्महथी विमोचन तीर्थम, सवित्री तीर्थम, सोरिया, कवत्वा तीर्थम,चक्र तीर्थम, सूर्य तीर्थम, चन्द्र तीर्थम, गंगा तीर्थम, यमुना तीर्थम, गया तीर्थम, सत्यमर्थ तीर्थम) जिन्हें माना जाता है कि उनमें नहाने से सभी दोष दूर हो जाते हैं। हमने भी उन 22 कुंडों के जल से स्नान किया, जिसका अनुभव अत्यधिक शांति और पवित्रता के साथ हुआ। यह अनुभव हमारे जीवन में एक अद्वितीय अनुभव बना। इसके बाद हमने रामेश्वरम मंदिर का दर्शन किया। मंदिर की स्थापना और उसके विशालकाय स्वरूप ने हमें वास्तविक अद्वितीयता का अनुभव दिया। हर भक्ति भरे रंग–बिरंगे प्रांगण में घूमकर हमने मंदिर के प्राचीन पवित्र स्थलों का दर्शन किया। हमारे मन में उस दिन का वातावरण और उसकी पावनता आज भी बसी हुई है। रामेश्वरम की इस यात्रा में सिखाया कि धार्मिकता और आध्यात्मिकता का महत्व क्या होता है। इसके साथ ही, उसके प्राचीन और ऐतिहासिक स्थलों ने हमें हमारे जीवन की मूलभूत दिशा में एक नयी दिशा प्रदान की। रामेश्वरम के वातावरण और वहाँ महसूस हुआ अनुभव आज भी मेरे दिल में बसा हुआ है। उस यात्रा ने मुझे न केवल रामेश्वरम के सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराया, बल्कि उसने मेरी जिंदगी में नई दिशा और प्रेरणा भी दी।

➢अक्षय कागला
युवा सिविल अभियन्ता (तकनीकी)

इंटरनेट ऑफ थिंग्स आईओटी (IoT): डिजिटल युग में अद्वितीय प्रौद्योगिकी

प्रस्तावनः आधुनिक दुनिया में तकनीकी उन्नति का एक नया पहलु है – इंटरनेट ऑफ थिंग्स (Internet IoT)। यह तकनीकी विकास न केवल हमारे जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाता है, बल्कि उसे सुरक्षित और स्वस्थ भी बनाता है। यह लेख आईओटी की महत्वपूर्ण विशेषताओं, उसके उपयोग, और भविष्य के संभावित दृश्य को समझने का प्रयास है। आईओटी का परिचय, आईओटी क्या है? आईओटी एक विशेष प्रौद्योगिकी है जो विभिन्न उपकरणों और वस्तुओं को इंटरनेट से जोड़कर उन्हें डेटा संग्रहण, विश्लेषण, और संचालन करने की क्षमता प्रदान करती है। इसे 'विश्वजाल की चीजों' का भी नाम दिया गया है, क्योंकि इसमें जीवन के हर क्षेत्र में जुड़े हुए उपकरण और वस्तुएं शामिल होती हैं।

आईओटी के उद्देश्य : आईओटी का मुख्य उद्देश्य वस्तुओं और उपकरणों के बीच संचार को स्वचालित और सरल बनाना है। यह समय, ऊर्जा, और संसाधनों की बचत करता है और व्यावसायिक प्रक्रियाओं को अधिक अद्वितीय और प्रभावी बनाता है।

आईओटी की तकनीकी विशेषताएँः सेंसर्स और उपकरणः आईओटी (IoT) नेटवर्क में सेंसर्स और उपकरणों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जो विभिन्न प्रकार के डेटा जुटाते हैं और उन्हें संचारित करते हैं। ये उपकरण वास्तविक जगहों से जानकारी जुटाते हैं और उसे नेटवर्क के अन्य उपकरणों तक पहुंचाते हैं।

कनेक्टिविटी : आईओटी की उपयोगिता का मुख्य कारक कनेक्टिविटी है, जो वस्तुओं को इंटरनेट से जोड़कर उन्हें डेटा भेजने और प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करती है। वायरलेस नेटवर्क, इंटरनेट प्रोटोकॉल्स, और साइबर सुरक्षा कनेक्टिविटी के महत्वपूर्ण हिस्से हैं।

आईओटी के उपयोगः गृह और उपयोगकर्ता उपकरण

आईओटी (IoT) के उपयोग समाधान गृहों में सरल और सुविधाजनक होते हैं। गृह सुरक्षा, स्वचालित उपकरण, और ऊर्जा बचत इसके मुख्य उपयोग हैं।

व्यावसायिक उपयोगः व्यावसायिक सेक्टर में आईओटी का उपयोग प्रदाताओं को व्यावसायिक प्रक्रियाओं को अद्वितीय बनाने और उनकी प्रदर्शनक्षमता में सुधार करने में मदद करता है। स्वचालित उपकरण, स्वचालित निगरानी, और उत्पादन का सुधार व्यावसायिक उपयोग के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

आईओटी के लाभ और चुनौतियाँः आईओटी का प्रमुख लाभ उपकरणों और सेवाओं का स्वचालित और सुविधाजनक होना है। यह समय और व्यापार की बचत करता है और प्रदर्शन में सुधार करता है।

चुनौतियाँः आईओटी मुख्य चुनौतियों में साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता, और स्थिरता शामिल हैं। सुरक्षा साइबर हमलों का खतरा हो सकता है, जबकि डेटा गोपनीयता और स्थिरता निजी जानकारी की सुरक्षा और नेटवर्क की अवरोधन का खतरा है।

भविष्य की दिशाएँः भविष्य में आईओटी का उपयोग और विस्तार निर्मिति, स्वास्थ्य देखभाल, वित्तीय सेवाएं, और उच्च तकनीकी उद्योगों में बढ़ेगा।

प्रौद्योगिकी और अभिवृद्धियाँः आईओटी के साथ, स्मार्ट सिटीज, स्वास्थ्य सेवाएं, और शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि की जा सकती है।

निष्कर्षः इस लेख में हमने देखा कि IoT क्या है, इसकी तकनीकी विशेषताएँ क्या हैं, इसके उपयोग कैसे हो सकते हैं, और इसके भविष्य की दिशाएँ क्या हैं। आईओटी न केवल हमारे जीवन को सरल बनाता है, बल्कि उसे सुरक्षित और स्वास्थ्यपूर्ण भी बनाता है। इसे बढ़ती तकनीकी उपयोगिता और सामाजिक विशेषताओं के साथ एक विश्वसनीय भविष्य के रूप में देखा जा सकता है।

➤सोनू कुमार
परियोजना अभियंता (आईसीटी)

क्वांटम कंप्यूटिंग: भविष्य की कंप्यूटिंग क्रांति

तकनीकी विकास की दुनिया में, क्वांटम कंप्यूटिंग एक अत्यंत रोमांचक और नवीनतम प्रगति है। यह तकनीक पारंपरिक कंप्यूटिंग की सीमाओं को पार करके, अभूतपूर्व गति और क्षमता के साथ जटिल समस्याओं का समाधान करने का वादा करती है।

क्या है क्वांटम कंप्यूटिंग? : क्वांटम कंप्यूटिंग एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें क्वांटम–बिट्स (क्यूबिट्स) का उपयोग करके डेटा प्रोसेस किया जाता है। पारंपरिक कंप्यूटिंग बाइनरी सिस्टम (0 और 1) पर आधारित है, जबकि क्वांटम कंप्यूटर क्यूबिट्स का उपयोग करते हैं, जो एक साथ 0 और 1 दोनों स्थिति में हो सकते हैं। यह सुपरपोजिशन और एंटैंगलमेंट जैसी क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों पर आधारित है।

क्वांटम कंप्यूटिंग के लाभः अभूतपूर्व गति (Unprecedented Speed): क्वांटम कंप्यूटर, पारंपरिक कंप्यूटरों की तुलना में कई गुना तेज होते हैं। वे जटिल गणनाओं और समस्याओं को मिनटों में हल कर सकते हैं, जो पारंपरिक कंप्यूटरों को सालों लग सकते हैं।

समांतर प्रोसेसिंग (Parallel Processing): क्वांटम कंप्यूटर समांतर रूप से कई गणनाएं कर सकते हैं, जिससे उनकी प्रोसेसिंग क्षमता अत्यधिक बढ़ जाती है।

जटिल समस्या समाधान (Complex Problem Solving): क्वांटम कंप्यूटरों का उपयोग क्रिप्टोग्राफी, मटीरियल साइंस, दवा खोज, और जलवायु मॉडलिंग जैसी जटिल समस्याओं के समाधान के लिए किया जा सकता है।

क्वांटम कंप्यूटिंग के उपयोग

क्रिप्टोग्राफी (Cryptography): क्वांटम कंप्यूटर अत्याधुनिक एन्क्रिप्शन विधियों को तोड़ने में सक्षम हैं, जिससे साइबर सुरक्षा में क्रांति आ सकती है।

दवा खोज (Drug Discovery): क्वांटम कंप्यूटर रासायनिक प्रतिक्रियाओं और मॉलिक्यूलर संरचनाओं को तेजी से सिमुलेट कर सकते हैं, जिससे नई दवाओं की खोज और विकास में मदद मिलती है।

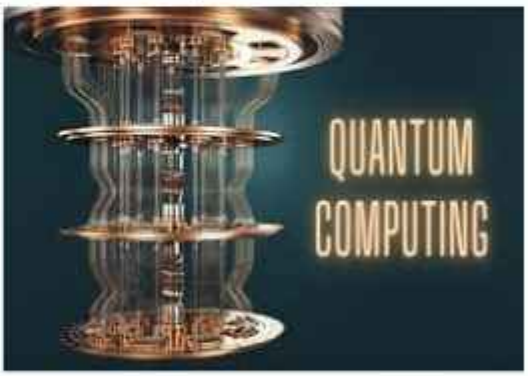

जलवायु मॉडलिंग (Climate Modelling): जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को अधिक सटीक रूप से मॉडल करने और भविष्यवाणी करने के लिए क्वांटम कंप्यूटिंग का उपयोग किया जा सकता है।

मशीन लर्निंग (Machine Learning): क्वांटम कंप्यूटिंग मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को तेज और अधिक कुशल बना सकती है, जिससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में सुधार हो सकता है।

तकनीकी जटिलता (Technical Complexity): क्वांटम कंप्यूटरों का निर्माण और रखरखाव अत्यंत जटिल और महंगा होता है।

सुरक्षा (Security): क्वांटम कंप्यूटर की शक्ति के कारण वर्तमान एन्क्रिप्शन विधियाँ असुरक्षित हो सकती हैं, जिससे नई सुरक्षा विधियों की आवश्यकता होगी।

निष्कर्ष :क्वांटम कंप्यूटिंग की दुनिया में एक नई क्रांति है, जो हमें जटिल समस्याओं को हल करने और नई संभावनाओं को खोलने की क्षमता प्रदान करती है। हालांकि, इसकी तकनीकी चुनौतियों और सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि हम इसे जिम्मेदारी से विकसित करें और उपयोग करें। क्वांटम कंप्यूटिंग का सही और सुरक्षित उपयोग ही हमें एक उन्नत और प्रौद्योगिकी–सक्षम भविष्य की ओर ले जा सकता है।

➢अनु ठाकुर
उत्पाद प्रबंधक (आईसीटी)

स्वच्छ बने भारत

स्वच्छ बने भारत अपना, सपना था अपने बापू का,
"स्वच्छ भारत उद्देश्य" सफल हो जिससे मैल मिटे सब तन मन का।

बाह्य स्वच्छता के संग–संग आंतरिक स्वच्छता भी है जरूरी,
हृदय में प्रेम पल जिससे मिट जाए मन से मन की दूरी ।
शुद्ध सुदृढ मनसिकता हो सबकी,
एक दूजे का साथ निभाएँ सब, मन कर्म और वचन की।
शुद्धता को, जीवन का ध्येय बनाएँ सब, स्वच्छ भारत विषय का ये सपना तभी सच हो पाएगा,
हर एक व्यक्ति जागृत होकर जब, स्वच्छता को जीवन का लक्ष्य बनाएगा।
आओ हम सब मिलकर, एक स्वच्छ सुंदर समाज बनाएं,
स्वच्छ सुंदर बनाएं इस धरती को, वातावरण को शुद्ध बनाएं ।
कूड़ा फेंके कूड़ेदान में इधर उधर ना ढेर लगाएँ,
गंदगी को दूर भगाकर अपने घर को स्वच्छ बनाएँ।
वायु को प्रदुषित न होने दे आओ इसको शुद्ध बनाएँ,
एक नया संकल्प लेकर पेड़ – पौधे जरूर लगाएँ।
स्वच्छ रहेगा जब हर घर, तभी तो स्वच्छ समाज होगा,
तभी विकसित होगी नई मानसिकता, जिसकी करते हैं हम सब कल्पनाएँ।
स्वच्छ होगा अब भारत अपना, और पूरा होगा बापू का सपना।
देशवासियों की यही है इच्छा,
गंदगी से हो भारत की रक्षा।
विश्व के एक नये पटल पर, स्वच्छ भारत अब अपना होगा,
स्वच्छ भारत अभियान से अब, बापू के हर भारतवासी का सपना पूरा होगा ।
"स्वच्छ भारत का इरादा, इरादा कर लिया हमने,
देश से, अपने से वादा, ये वादा कर लिया हमने"।

➤विशाल कुमार
युवा परामर्शदाता अभियन्ता (पी–।।।)

मेहनत और किस्मत।

एक समय की बात है, एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। हरी और तरुण। हरी एक गरीब पंडित था, जबकि तरुण एक धनी व्यापारी। दोनों के बेटे जिनके नाम क्रमशः नितेश ओर मोहित थे, एक ही स्कूल में पढ़ते थे और बहुत अच्छे मित्र थे। हरी का बेटा, नितेश, अक्सर अपने पिता से पूछता, पिताजी, हम इतने गरीब क्यों हैं? मोहित के पास तो सब कुछ है। हरी हँसते हुए कहते, बेटा, धन से सब कुछ नहीं खरीदा जा सकता। अत्यधिक धन प्रायः इंसान को मानसिक रूप से पंगू बना देता है। सच्ची खुशी मेहनत और ईमानदारी में है। नितेश को अपने पिता की बातें हमेशा याद रहतीं थी। वह देखता था कि उसके पिता सुबह जल्दी उठकर खेतों में काम करने जाते थे और देर शाम तक मेहनत करते थे। कभी–कभी उसे भी अपने पिता के साथ काम करने का मौका मिलता था। हरी ने नितेश को सिखाया कि मेहनत और धैर्य से ही जीवन में सच्ची सफलता मिलती है। दूसरी ओर, तरुण ने मोहित को सिखाया कि यदि किस्मत हो तो पैसे से पैसा अपने आप बन जाता है। तरुण ने अपने बेटे को आरामदायक जीवन दिया, लेकिन उसे मेहनत की अहमियत कभी नहीं सिखाई।समय बीतता गया और दोनों बच्चे बड़े हो गए। नितेश ने अपने पिता की मेहनत और सच्चाई से प्रेरणा ली और पढ़ाई में बहुत मेहनत की। उसने एक अच्छी नौकरी हासिल की और अपने परिवार का जीवन स्तर सुधार लिया। उसने अपने माता–पिता के लिए एक नया घर बनवाया और उनकी सारी जरूरतों का ख्याल रखा। नितेश के जीवन में सुख और संतोष था क्योंकि उसने अपने पिता की सिखाई हुई राह अपनाई थी। वहीं, मोहित ने अपने पिता के पैसों पर निर्भर रहकर जीवन बिताया। उसने कभी मेहनत की अहमियत नहीं समझी। धीरे–धीरे उनका व्यापार घटने लगा और उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जब तरुण का स्वास्थ्य बिगड़ा, तो मोहित के पास न तो उनके इलाज के लिए पैसे थे, न ही किसी प्रकार की सहायता। तरुण का व्यापार घाटे में चला गया और मोहित को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। इस तरह, हरी और तरुण के जीवन ने यह सिखाया कि धन और संपत्ति महत्वपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन मेहनत का त्याग कभी नही करना चाहिए। नितेश ने अपने पिता की शिक्षाओं को अपनाया और सफल हुआ, जबकि मोहित ने धन पर निर्भर रहकर अपनी जिंदगी को कठिनाइयों में डाल दिया। इस कहानी से यह सबक मिलता है कि मेहनत से ही जीवन में सच्ची सफलता और खुशी प्राप्त की जा सकती है।

➤पंकज शर्मा
युवा सिविल अभियन्ता (पी–।।।)

गांधीनगर के दांडी कुटीर की यात्रा

गुजरात के गांधीनगर स्थित दांडी कुटीर, एक ऐसा स्थान है जो महात्मा गांधी के जीवन और उनके आदर्शों को समर्पित है। यह यात्रा मेरे जीवन की एक यादगार अनुभव रही, जिसने मुझे महात्मा गांधी के संघर्ष, बलिदान, और उनके जीवन दर्शन से परिचित कराया।

यात्रा की शुरुआतः एक सुंदर सुबह, मैंने गांधीनगर स्थित दांडी कुटीर जाने का निश्चय किया। यह मंदिर महात्मा गांधी की दांडी यात्रा की स्मृति में बनाया गया है, जो नमक सत्याग्रह के रूप में जानी जाती है। यात्रा की शुरुआत एक अद्भुत अनुभव के साथ हुई, जब मैं गांधी नगर की सड़कों से गुजरते हुए दांडी कुटीर पहुँचा।

दांडी कुटीर का भव्य प्रेवश द्वार : दांडी कुटीर के प्रवेश द्वार पर पहुँचते ही, मुझे वहाँ की भव्यता और शांति ने अभिभूत कर दिया। यह अद्वितीय संरचना, पिरामिड के आकार में बनाई गई है, जो महात्मा गांधी के जीवन और उनके सिद्धांतों का प्रतीक है। प्रवेश द्वार पर महात्मा गांधी की प्रतिमा ने मुझे उनके सरल और सादगीपूर्ण जीवन की याद दिलाई।

संग्रहालय की सैर : दांडी कुटीर के भीतर प्रवेश करने के बाद, मैंने वहाँ के संग्रहालय की सैर की। संग्रहालय में महात्मा गांधी के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को दिखाया गया है। उनका प्रारंभिक जीवन, लंदन में वकालत की पढ़ाई, दक्षिण अफ्रीका में उनके संघर्ष और भारत में स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को अत्यंत सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया गया है।

दांडी यात्रा की झलकः संग्रहालय का सबसे आकर्षक हिस्सा वह खंड था, जहाँ महात्मा गांधी की प्रसिद्ध दांडी यात्रा का वर्णन किया गया था। डिजिटल प्रदर्शनों और इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से, मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मैं स्वयं उस ऐतिहासिक यात्रा का हिस्सा बन गया हूँ। नमक कानून के विरोध में गांधी जी का दृढ़ संकल्प और उनके साथ चलने वाले सैकड़ों लोगों की हिम्मत ने मेरे मन में गहरी छाप छोड़ी। ध्यान और आत्मचिंतन दांडी कुटीर में एक शांत कोना भी है, जहाँ बैठकर मैंने ध्यान और आत्मचिंतन किया। यह स्थान महात्मा गांधी के जीवन के उन क्षणों को समर्पित है, जब उन्होंने आत्मचिंतन और आध्यात्मिकता के माध्यम से अपने संघर्ष को दिशा दी। यहाँ बैठकर मैंने उनकी शिक्षाओं पर विचार किया और अपने जीवन में उन्हें अपनाने का संकल्प लिया।

उपसंहारः दांडी कुटीर की यात्रा मेरे लिए न केवल एक ऐतिहासिक और शैक्षिक अनुभव था, बल्कि यह एक आत्मिक यात्रा भी थी। महात्मा गांधी के जीवन और उनके सिद्धांतों को नजदीक से जानने का यह अवसर मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा। दांडी कुटीर ने मुझे यह सिखाया कि सच्चाई, अहिंसा, और सादगी के मार्ग पर चलकर हम अपने जीवन को अधिक सार्थक बना सकते हैं। गांधी नगर के दांडी कुटीर की यह यात्रा मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय याद बन गई है, जो मुझे हमेशा महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा देती रहेगी।

➢उत्सव मोढ
युवा सिविल अभियन्ता(परि.– I)

रोबोटिक ऑटोमेशनः विश्वास की नई ऊंचाइयां

प्रस्तावनाः आधुनिक प्रौद्योगिकी ने हमारे समाज और व्यवसाय के संचालन में क्रांति ला दी है। इसमें से एक महत्वपूर्ण तकनीकी उन्नति है रोबोटिक ऑटोमेशन, जो कार्यों को स्वचालित और सहज बनाती है। यह तकनीकी प्रक्रिया न केवल उत्पादन के क्षेत्र में गति और दक्षता ला रही है, बल्कि विभिन्न उद्योगों और सेवा सेक्टरों में भी नई संभावनाओं की दिशा में अग्रसर हो रही है। इस लेख में, हम रोबोटिक ऑटोमेशन के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझेंगे, इसके उपयोग, लाभ, चुनौतियां, और भविष्य के बारे में चर्चा करेंगे।

रोबोटिक ऑटोमेशनः मूल अवधारणा और परिभाषा : रोबोटिक ऑटोमेशन का मतलब है कि किसी भी कार्य को एक रोबोट या स्वचालित मशीन के माध्यम से स्वचालित किया जाता है, जिससे कार्य की गति, सटीकता, और प्रभावकारिता में सुधार होता है। इन रोबोटिक सिस्टम्स में संगठनिक और उत्पादन प्रक्रियाओं को स्वचालित किया जाता है और इससे व्यक्ति अधिकारियों के लिए यातायात, निर्माण, उत्पादन, और सेवाओं की प्रदान में समय और श्रम की बचत होती है।

रोबोटिक ऑटोमेशन के प्रकारः रोबोटिक ऑटोमेशन के कई प्रकार हैं, जो विभिन्न उद्योगों और क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं। इनमें से कुछ मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं:

- उत्पादन ऑटोमेशनः इसमें स्वचालित उत्पादन प्रक्रियाएं शामिल हैं, जैसे कि रोबोटिक असेम्बली लाइनें और उत्पादन सेल्स कि। यह उत्पादन में गुणवत्ता की गुणवत्ता और दक्षता में सुधार करता है।
- सेवा औटोमेशनः यह शामिल है स्वचालित ग्राहक सेवा, जैसे कि चौटबॉट्स और ऑटोमेटेड कस्टमर सपोर्ट सेंटर, जो ग्राहकों को अधिक दक्षता और संतुष्टि प्रदान करते हैं।
- वित्तीय ऑटोमेशनः यह शामिल है स्वचालित वित्तीय प्रक्रियाएं, जैसे कि स्वचालित वित्तीय निवेश, वित्तीय विश्लेषण, और ऑटोमेटेड ट्रेडिंग एल्गोरिथम्स।
- लॉजिस्टिक्स औटोमेशनः यह शामिल है स्वचालित लॉजिस्टिक्स प्रक्रियाएं, जैसे कि स्वचालित वाहन नेटवर्क और वस्तु स्थानांतरण प्रबंधन, जो व्यापार और वितरण में लाभ प्रदान करते हैं।

रोबोटिक ऑटोमेशन के उपयोग से कई लाभ होते हैं, जैसे किः

- दक्षता और गुणवत्ता में सुधारः इससे कार्यों में गुणवत्ता का सुधार होता है और उत्पादन में दक्षता बढ़ती है।
- समय और श्रम की बचतः यह व्यवसायिक प्रक्रियाओं को स्वचालित करके समय और श्रम की बचत करता है।
- अपराध प्रतिरोधः इससे व्यवसायों को अपराधों से बचने में मदद मिलती है, क्योंकि यह मानव त्रुटियों के कारण आने वाली गड़बड़ी को निष्पक्षता से कर सकता है।

रोबोटिक ऑटोमेशन की चुनौतियां : हालांकि रोबोटिक ऑटोमेशन के उपयोग से कई लाभ होते हैं, लेकिन इसकी कुछ चुनौतियां भी हैं, जैसे कि:

- श्रमसंबंधी परिस्थितियांः अनुकूल रोबोटिक ऑटोमेशन से लोगों के नौकरी के अवसरों पर असर पड़ सकता है।
- सामाजिक प्रभावः इससे समाज में कामकाजी बदलाव आ सकता है और समाजिक स्थितियाँ प्रभावित हो सकती हैं।

भविष्य की दिशाः रोबोटिक ऑटोमेशन का भविष्य अग्रसर है। तकनीकी उन्नति, डिजिटल संसाधनों की वृद्धि, और अधिकारियों के समर्थन से यह तेजी से बढ़ रहा है। भविष्य में इसके अधिक उपयोग की उम्मीद है जो संगठनों को और भी अधिक उत्पादक और प्रभावी बना सकता है।

समाप्तिः इस लेख में, हमने रोबोटिक ऑटोमेशन के महत्व, प्रकार, लाभ, चुनौतियां, और भविष्य के बारे में विस्तार से चर्चा की है। यह प्रौद्योगिकी विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किया जा रहा है और निरंतर विकास और उन्नति का केंद्र बना हुआ है। रोबोटिक ऑटोमेशन न केवल कार्यों की गति को बढ़ाता है, बल्कि उत्पादन में भी सुधार करता है और स्थायी उत्पादकता को संभव बनाता है। इस प्रौद्योगिकी का सही उपयोग करने से हम अपने व्यवसायिक प्रक्रियाओं को और भी सुविधाजनक और प्रभावी बना सकते हैं, जिससे न केवल व्यापार में वृद्धि हो, बल्कि समाज में भी विकास का नया मापदंड स्थापित हो सकता है।

➢राजेन्द्र सिंह राठौड़
उत्पाद प्रबंधक (आईसीटी)

सड़कों का जाल पर्यावरण के साथ

सड़क निर्माण अवसरशील इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन यह अक्सर एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लागत के साथ आता है। हम अपने परिवहन नेटवर्क को विस्तारित करने का प्रयास करते हैं, इसलिए पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और प्रतिस्थापनीयता को बढ़ावा देने वाले व्यवहार को अपनाना महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण का महत्वः सड़क निर्माण में पर्यावरण संरक्षण का महत्व कई कारणों से है: प्राकृतिक वातावरण के संरक्षणः सड़कें अक्सर वन्य जीवन क्षेत्रों, जैव विविधता और जंगलों से गुजरती हैं। उचित उपाय न लेने पर इन पारिस्थितिकियों में अव्यवस्था हो जाती है इनका नाश हो सकता है।

प्रदूषण की कमीः निर्माण गतिविधियां धूल, ठोस कणों और रासायनिक पदार्थों को हवा, जल और मृदा में छोड़ती हैं। ये प्रदूषक स्थानीय पारिस्थितिकियों और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

संसाधनों के संरक्षणः सड़क निर्माण में भूत्वांश, ऐस्फाल्ट और कंक्रीट जैसी सामग्रियों की बड़ी मात्रा चाहिए होती है। इन संसाधनों का उचित उपयोग उनकी उपलब्धता को भविष्य पीढ़ियों के लिए सुनिश्चित करता है। जलवायु पर प्रभावः निर्माण और परिवहन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान करते हैं। अधिक उत्पादन के माध्यम से इन उत्सर्जनों को कम करना जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए श्रेष्ठ प्रथाएँ सड़क निर्माण के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए निम्नलिखित प्रथाएँ अमल में लानी चाहिएः पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (EIA): निर्माण प्रारंभ होने से पहले सम्भावित पर्यावरणीय जोखिमों की पहचान करने और संशोधन उपाय विकसित करने के लिए समय–समय पर ईआईए करना।

स्थायी सामग्रियांः पुनर्चक्रित सामग्रियों और स्थानीय स्रोतों से भरपूर भूत्वांशों का उपयोग करके निर्माण गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करें। धराई और ठोस कण संयंत्रनः धराई नियंत्रण उपाय जैसे कि रेतीले बाड़, ठोस कण संग्रहण, और वनस्पति बफर लगाकर मृदा के घात को रोकना और जल गुणवत्ता को सुरक्षित करना।

जल प्रबंधनः उचित ढंग से पानी को प्रबंधित करें ताकि निकट स्थलीय जल संदेश का प्रदूषण कम हो। अवास्तविक पथरी और जैव–अवक्षेपण कुंडों जैसी तकनीकें प्रभावी हो सकती हैं।

वन्य जीवन संरक्षणः वन्य जीवन क्षेत्रों को असंतुलन कम करने के लिए सड़कों और पार करने के लिए वन्य जीव पारगमन और बाड़ों को स्थापित करना।

ऊर्जा प्रभावकर्ताः ऊर्जा खपत और उत्सर्जन को कम करने के लिए निर्माण प्रक्रियाओं को सुधारें। कड़ी पर्यावरणीय मानकों को पूरा करने वाले उपकरण और वाहनों का उपयोग करें।

समुदाय संलग्नताः स्थानीय समुदाय और हितधारकों को निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल करें ताकि उनकी समस्याओं का समाधान सुनिश्चित किया जा सके और स्थानीय ज्ञान का उपयोग किया जा सके।

प्रतिस्थापनीय सड़क निर्माणः उदाहरण के रूप में, एक नए राजमार्ग के निर्माण में, अभियंताओं ने एक विस्तृत पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन (EIA) किया जिसमें संवेदनशील जीवनस्थलों की पहचान की गई। उन्होंने राजमार्ग के नये रूपभाग को इन क्षेत्रों से बचने के लिए पुनः डिजाइन किया और वन्य जीवन के पारगमन को सुरक्षित करने के लिए वन्य जीव पारगमन स्थापित किए। पवेमेंट निर्माण के लिए पुनःचक्रित सामग्री का उपयोग किया गया, जिससे परियोजना के कार्बन पैदावार को कम किया गया। निर्माण के दौरान, धराई नियंत्रण उपायों का उपयोग किया गया और बायो–रिटेंशन पॉड्स के माध्यम से बारिश के पानी का प्रबंधन किया गया। **निष्कर्षः** सड़क निर्माण में पर्यावरण संरक्षण केवल एक विधिक आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह हमारे भविष्य की धरोहर को सुरक्षित रखने का एक नैतिक आदेश है। प्रतिस्थापनीय प्रथाओं को अपनाकर और सड़क विकास के हर चरण में पर्यावरणीय मानकों को समाहित करके, हम पारिस्थितिक नुकसान को कम कर सकते हैं और ऐसी अवस्था स्थापित कर सकते हैं जो मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करती हो और पर्यावरण स्वास्थ्य का समर्थन करती हो। हमारी जिम्मेदारी है कि हम ऐसी सड़कें बनाएं जो हमें जड़ से नहीं अलग करके हमें प्रकृति से जोड़ें।

➤अभिषेक कुमार
युवा सिविल अभियन्ता (आईसीटी)

कुलदेवी एवं कुलदेवता का महत्त्व

कुलदेवी'' और ''कुलदेवता'' हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। कुलदेवी वे देवी होती हैं जो परिवार या कुल की आराध्य देवी होती हैं,। यह उस दौर की बात है, जब लोगों को आक्रांताओं से बचने के लिए एक शहर से दूसरे शहर या एक राज्य से दूसरे राज्य में पलायन करना होता था। ऐसे में वे अपने साथ अपने कुल और जाति के लोगों को संगठित और बचाए रखने के लिए वे एक जगह ऐसा मंदिर बनाते थे, जहां पर कि उनके कुल के बिखरे हुए लोग इकट्ठा हो सकें। इसी प्रकार, ''कुलदेवता'' वे देवता होते हैं जो परिवार या कुल के आराध्य देवता होते हैं। कुलदेवता की पूजा भी पूरे परिवार द्वारा की जाती है और उन्हें परिवार के रक्षक माना जाता है। कुलदेवी और कुलदेवता की पूजा का महत्व पीढ़ियों से चला आ रहा है और इसे परिवार की परंपरा और संस्कृति का अभिन्न अंग माना जाता है। कुलदेवी और कुलदेवता की पूजा से व्यक्ति को मानसिक शांति मिलती है और परिवार के सभी सदस्य एकजुट होते हैं। इससे पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं और सामाजिक जीवन में भी संतुलन बना रहता है।

विशेष अवसरों, जैसे विवाह, संतान जन्म, या अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में कुलदेवी और कुलदेवता की पूजा करना अनिवार्य माना जाता है, जिससे उनकी कृपा बनी रहती है। कुलदेवी और कुलदेवता की उपासना एक प्रकार से अपनी जड़ों और परंपराओं से जुड़े रहने का भी प्रतीक है, जो व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक बल प्रदान करती है। कुलदेवी और कुलदेवता की आस्था और श्रद्धा व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता और सुख–शांति प्रदान करती है। जन्म, विवाह आदि मांगलिक कार्यों में कुलदेवी या देवताओं के स्थान पर जाकर उनकी पूजा की जाती है या उनके नाम से स्तुति की जाती है। इसके अलावा एक ऐसा भी दिन होता है जबकि संबंधित कुल के लोग अपनी देवी– देवता के स्थान पर इकट्ठा होते हैं।

प्रश्न यह है कि कुल देवता और कुलदेवी सभी के अलग–अलग क्यों होते हैं?इसका उत्तर यह है कि कुल अलग है, तो स्वाभाविक है कि कुलदेवी–देवता भी अलग अलग ही होंगे। दरअसल, हजारों वर्षों से अपने कुल को संगठित करने और उसके इतिहास को संरक्षित करने के लिए ही कुलदेवी और देवताओं को एक निश्चित स्थान पर नियुक्त किया जाता था। वह स्थान उस वंश या कुल के लोगों का मूल स्थान होता था।

मान्यता के अनुसार कुलदेवी या देवता कुल या वंश के रक्षक देवी–देवता होते हैं। ये घर–परिवार या वंश–परंपरा के प्रथम पूज्य तथा मूल अधिकारी देव होते हैं। इनकी गणना हमारे घर के बुजुर्ग सदस्यों जैसी होती है। अतः प्रत्येक कार्य में इन्हें याद करना जरूरी होता है।

सर्वमंगला मां बेला भवानी शक्तिपीठ बेलौन की है मान्यता

नरौरा, बुलंदशहर : सर्वमंगला मां बेला भवानी शक्तिपीठ नरौरा गंगा किनारे से चार किलोमीटर की दूरी पर दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। स्थानीय एवं दूर दराज के श्रद्धालुओं की आस्था एवं निष्ठा का तीर्थ है। यहां मां के दर्शन के लिए दरबार में पूरे वर्ष श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है, लेकिन नवरात्रों में मां के दरबार में भव्य मेला लगता है। यहाँ पूरे नवरात्र मां के भवन में हवन होता है। वहीं सच्चे मन से मां के दरबार में फरियाद लगाने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

मंदिर का इतिहास : सर्वमंगला मां बेला भवानी शक्तिपीठ के बारे में प्राचीन गर्ग संहिता में भी उल्लेख है। कहा जाता है कि एक बार मां पार्वती ने भगवान शिव से समस्त धर्मग्रंथों के महत्व जानने की इच्छा प्रकट की। इतना सुनकर भगवान शिव ने मां पार्वती से कहा कि हे देवी गंगा किनारे स्थित वृद्धकेशी सिद्धपीठ वर्तमान में नरवर से चार मील दूर विल्वकेश वन वर्तमान में बेलौन है तुम वहां जाओ। कलयुग में तुम्हें इन समस्त ग्रंथों के महत्व का पूर्ण ज्ञान होगा। इसके बाद मां पार्वती बेलौन में पत्थर की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो गई। एक रात्रि मां ने ग्वालियर नरेश को स्वप्न में दर्शन देकर अपने पत्थर रूप में प्रतिष्ठित होने की जानकारी दी। इसके बाद उन्होंने मां के मंदिर का निर्माण कराया।

बुलंदशहर के बेलौन गांव में सर्व मंगला देवी को समर्पित बेलौन मंदिर में देवी का दर्शन करने प्रतिदिन हजारों लोग आते हैं। सर्व मंगला देवी को सुख की देवी माना जाता है। सालभर यात्रियों की भीड़ यहां लगी रहती है। कार्तिक और चौत्र माह के नवरात्र में यहां विशेष आयोजन होते हैं। इस दौरान सुख, संतोष की तलाश में यहां श्रद्धालुओ का तांता लगा रहता है। मंदिर के नामकरण के पीछे पुजारी सोमदत्त बताते हैं कि पूर्व में यह पूरा क्षेत्र बेल वृक्षों की बहुतायत वाला था। इस वजह से पहले बिलोन और बाद में अपभृंश होकर 'बेलौन' कहलाने लगा। मान्यता है कि शुक्ल पक्ष की अष्टमी को यहां दर्शन करने से अभीष्ठ फल की प्राप्ति होती है। मंदिर के समीप ही गंगा नदी के राजघाट, कलकतिया एवं नरौरा घाट होने से यहां भक्तों का आगमन निरंतर बना रहता है।

वैष्णो देवी माता मंदिर के बाद बेलौं भवानी सर्वमंगला देवी के दर्शन करना एक धार्मिक मान्यता और परंपरा है, लेकिन यह व्यक्ति की व्यक्तिगत आस्था और मान्यता पर निर्भर करता है। कई भक्तों का मानना है कि वैष्णो देवी के दर्शन के बाद बेलौं भवानी सर्वमंगला देवी के दर्शन करने से यात्रा पूर्ण होती है और देवी का आशीर्वाद पूर्ण रूप से प्राप्त होता है। यह धार्मिक प्रथा स्थानीय परंपराओं और मान्यताओं पर आधारित हैं ।

मंदिर का विशेष महत्व : सर्वमंगला माँ बेला भवानी शक्तिपीठ बेलौन मंदिर में प्रतिदिन प्रातः एवं संध्या कालीन आरती के बाद ही मां के दर्शनों के लिए पट खोले जाते हैं। नवरात्रि में त्रयोदशी के दिन मां के भवन का विशेष श्रृंगार होता है। हरे नारियल की भेंट चढ़ाई जाती है। रात्रि बेला में हवन होता है।

➤विजय शर्मा
टैक्नीकल लीड (एनआईसी)

पीएमजीएसवाई सड़कों में स्टील स्लैग का उपयोगः टिकाऊ अवसंरचना के लिए एक नवाचारी दृष्टिकोण

परिचय

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख योजना है जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सभी मौसम सड़कों का निर्माण करके कनेक्टिविटी में सुधार करना है। पारंपरिक सड़क निर्माण सामग्री, जैसे प्राकृतिक एग्रीगेट्स और बिटुमेन, तेजी से दुर्लभ और महंगे हो रहे हैं। इस संदर्भ में, स्टील स्लैग जैसे वैकल्पिक सामग्रियां एक आशाजनक विकल्प के रूप में उभरी हैं, जो आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ दोनों प्रदान करती हैं। इस निबंध में पीएमजीएसवाई सड़कों में स्टील स्लैग के उपयोग का अन्वेषण किया गया है, इसके लाभ, चुनौतियों और आगे के रास्ते को उजागर किया गया है।

स्टील स्लैग की समझ

स्टील स्लैग स्टील बनाने की प्रक्रिया के दौरान उत्पन्न एक उप–उत्पाद है। इसमें विभिन्न ऑक्साइड और सिलिकेट होते हैं, जो इसे प्राकृतिक एग्रीगेट्स के समान संरचना देते हैं। इसकी उच्च घनत्व, कठोरता और स्थायित्व के कारण, स्टील स्लैग को सड़क निर्माण के लिए एक संभावित सामग्री के रूप में मान्यता प्राप्त है। पीएमजीएसवाई सड़कों में इसके उपयोग से प्राकृतिक एग्रीगेट्स पर निर्भरता काफी कम हो सकती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और पर्यावरणीय क्षरण को कम किया जा सकता है।

सड़क निर्माण में स्टील स्लैग के उपयोग के लाभ

- स्थायित्व और शक्ति–स्टील स्लैग प्राकृतिक एग्रीगेट्स की तुलना में उत्कृष्ट यांत्रिक गुण प्रदर्शित करता है। इसकी उच्च शक्ति और स्थायित्व इसे भारी यातायात भार और प्रतिकूल मौसम की स्थितियों को सहन करने में सक्षम, मजबूत और लंबे समय तक चलने वाली सड़कों के निर्माण के लिए आदर्श बनाते हैं।
- लागत–प्रभावशीलता –स्अील स्लैग के उपयोग से महत्वपूर्ण लागत बचत हो सकती है। स्टील उद्योग का एक उप–उत्पाद होने के कारण, यह अक्सर प्राकृतिक एग्रीगेट्स की तुलना में कम लागत पर उपलब्ध होता है। यह लागत लाभ पीएमजीएसवाई परियोजनाओं के बजट को अनुकूलित करने में मदद कर सकता है, जिससे एक ही बजट में अधिक किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया जा सकता है।
- पर्यावरणीय लाभ–सड़क निर्माण में स्टील स्लैग का उपयोग पुनर्चक्रण को बढ़ावा देता है और औद्योगिक अपशिष्ट के निपटान से जुड़ी पर्यावरणीय भार को कम करता है। यह प्राकृतिक एग्रीगेट्स के खनन की आवश्यकता को भी न्यूनतम करता है, जिससे प्राकृतिक परिदृश्यों का संरक्षण होता है और खनन और परिवहन से जुड़े कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है।
- सड़क प्रदर्शन में सुधार – स्टील स्लैग के साथ निर्मित सड़कों को विरूपण, रटिंग और थकान के

प्रतिरोध के मामले में बेहतर प्रदर्शन करते हुए पाया गया है। इससे रखरखाव लागत में कमी आती है और सेवा जीवन लंबा होता है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लिए निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होती है।

चुनौतियाँ और समाधानः

हालांकि सड़क निर्माण में स्टील स्लैग के उपयोग के लाभ स्पष्ट हैं, लेकिन कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है

- संरचना में परिवर्तनशीलता–स्टील स्लैग की संरचना स्टील बनाने की प्रक्रिया और उपयोग किए गए कच्चे माल के आधार पर भिन्न हो सकती है। यह परिवर्तनशीलता इसे एक निर्माण सामग्री के रूप में इसके प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती है। स्टील स्लैग की गुणवत्ता को मानकीकृत करना और विस्तृत सामग्री परीक्षण करना आवश्यक है ताकि सतत प्रदर्शन सुनिश्चित किया जा सके।

भारत की स्टील स्लैग से निर्मित पहली सड़क का सूरत में उद्घाटन

- **भारी धातुओं का लीचिंग:** स्टील स्लैग में थोड़ी मात्रा में भारी धातुएं हो सकती हैं, जो समय के साथ पर्यावरण में लीच हो सकती हैं। उपयुक्त उपचार और स्थिरीकरण विधियों को विकसित करना इस जोखिम को कम कर सकता है, जिससे सड़क निर्माण में स्टील स्लैग का सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित होता है।
- **जागरूकता और स्वीकृति की कमीः** नीति निर्माताओं, इंजीनियरों और ठेकेदारों सहित संबंधित पक्षों के बीच स्टील स्लैग के लाभ और तकनीकी पहलुओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। पायलट परियोजनाएं आयोजित करना और सफल मामले अध्ययनों को प्रदर्शित करना व्यापक स्वीकृति प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

केस स्टडीज और सफलता की कहानियाँः

कई देशों ने सड़क निर्माण में स्टील स्लैग का सफलतापूर्वक उपयोग किया है, जिससे पीएमजीएसवाई परियोजनाओं में इसके अपनाने के लिए मिसाल कायम हुई है। उदाहरण के लिए, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपनी सड़क नेटवर्क में व्यापक रूप से स्टील स्लैग का उपयोग किया है, और स्थायित्व और लागत बचत की रिपोर्ट दी है। भारत में, महाराष्ट्र और तमिलनाडु जैसे राज्यों में पायलट परियोजनाओं ने ग्रामीण सड़कों में स्टील स्लैग के उपयोग की व्यवहार्यता और लाभों का प्रदर्शन किया है।

निष्कर्षः

पीएमजीएसवाई सड़कों में स्टील स्लैग को शामिल करना ग्रामीण कनेक्टिविटी को बढ़ाने के लिए एक सतत और लागत–प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। स्टील स्लैग के उत्कृष्ट गुणों का लाभ उठाकर, भारत टिकाऊ और लंबे समय तक चलने वाली सड़कों का निर्माण कर सकता है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में सभी मौसम की पहुंच सुनिश्चित हो सके। मानकीकृत प्रथाओं, पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों और जागरूकता अभियानों के माध्यम से चुनौतियों का समाधान करने से व्यापक स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। स्टील स्लैग जैसी अभिनव सामग्रियों को अपनाना एक लचीला और सतत ग्रामीण बुनियादी ढांचा बनाने के लिए महत्वपूर्ण है, जो राष्ट्र के आर्थिक विकास और सामाजिक विकास में योगदान देता है।

➢शुभम चौरसिया
सिविल युवा अभियन्ता (परि.–।।)

शिक्षा के क्षेत्र में जीआईएस का उपयोग

परिचयः जीआईएस (जियोग्राफिक इंफॉर्मेशन सिस्टम) तकनीक, जो भूगोलिक डेटा को इकट्ठा करने, प्रबंधित करने, विश्लेषण करने और प्रस्तुत करने में सहायता करती है, न केवल भूगोलीय अनुसंधान में बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यधिक लाभकारी हो सकती है। जीआईएस का उपयोग छात्रों को न केवल भौगोलिक तथ्यों को समझने में मदद करता है, बल्कि यह उन्हें व्यावहारिक रूप में इन तथ्यों को लागू करने का अवसर भी प्रदान करता है। इस लेख में, हम जीआईएस के विभिन्न पहलुओं, इसके उपयोग के लाभों, और इसे शिक्षा में कैसे लागू किया जा सकता है, पर विस्तृत रूप से चर्चा करेंगे।

जीआईएस उपयोग के लाभ

1. **भौगोलिक सोचः** जीआईएस के माध्यम से छात्र न केवल दूसरों द्वारा बनाए गए मानचित्रों का उपयोग करते हैं, बल्कि वे अपने खुद के मानचित्र, इन्फोग्राफिक्स, और वेब मैपिंग एप्लिकेशन भी बना सकते हैं। इससे उनकी भौगोलिक सोच को विकसित करने में मदद मिलती है। वे विभिन्न भौगोलिक तत्वों और उनके आपसी संबंधों को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।

2. **समय–स्थान विचारः** जीआईएस के माध्यम से छात्र समय और स्थान के संबंध में सोचने की क्षमता प्राप्त करते हैं। यह उन्हें अपने आस–पास के विश्व को गहराई से समझने में मदद करता है। वे यह जान सकते हैं कि किस प्रकार समय के साथ स्थानिक पैटर्न बदलते हैं और इससे वे ऐतिहासिक और वर्तमान घटनाओं के बीच संबंध स्थापित कर सकते हैं।
3. **समस्याओं का समाधानः** जीआईएस के माध्यम से छात्र समस्याओं को समझने, दृश्यीकरण करने और उनके समाधान की ओर बढ़ने में सक्षम होते हैं। वे प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन, शहरी हरित मार्ग, कचरे के प्रबंधन, ऊर्जा संसाधनों का उपयोग, और सामाजिक असमानता जैसे आज के समय के जटिल मुद्दों के बारे में समाधान तैयार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे बाढ़ प्रवण क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और आपदा प्रबंधन योजनाएं बना सकते हैं।

जीआईएस के उपयोग के उदाहरण

1. **पर्यावरण अध्ययनः** छात्र जीआईएस का उपयोग करके किसी विशेष क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिति का अध्ययन कर सकते हैं। वे जल संसाधन, प्रदूषण स्तर, और वनों की कटाई जैसे पर्यावरणीय मुद्दों का विश्लेषण कर सकते हैं।
2. **शहरी नियोजनः** छात्र जीआईएस का उपयोग करके शहरी विकास की योजनाएं बना सकते हैं। इसमें सड़कें, पार्क, स्कूल और अस्पताल शामिल हो सकते हैं। वे यह देख सकते हैं कि किस प्रकार से शहरी विकास का प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ता है और इस पर किस प्रकार से सकारात्मक बदलाव लाए जा सकते हैं।
3. **इतिहास और संस्कृतिः** छात्र ऐतिहासिक स्थलों का नक्शा बना सकते हैं और उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इससे वे अतीत की घटनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। वे यह जान सकते हैं कि किस प्रकार से ऐतिहासिक घटनाएं और स्थानिक परिवर्तन आपस में संबंधित हैं।

जीआईएस सिखाने के तरीके

1. **सॉफ्टवेयर का उपयोगः** छात्रों को विभिन्न जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग सिखाना चाहिए जैसे कि ArcGIS, QGIS] vkSj Google Earth। ये सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ताओं को नक्शे बनाने, डेटा का विश्लेषण करने और विभिन्न प्रकार की रिपोर्ट तैयार करने की सुविधा देते हैं।
2. **ऑनलाइन संसाधनः** इंटरनेट पर कई ऑनलाइन संसाधन और ट्यूटोरियल उपलब्ध हैं जो छात्रों को जीआईएस सिखाने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, ESRI dk ArcGIS Online बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट

संसाधन है जो उन्हें इंटरैक्टिव नक्शे बनाने की अनुमति देता है।

3. **मोबाइल ऐप्स :** कई मोबाइल ऐप्स भी उपलब्ध हैं जो बच्चों को जीआईएस तकनीक का उपयोग करने में मदद कर सकते हैं। ये ऐप्स बच्चों को अपने स्मार्टफोन या टैबलेट का उपयोग करके नक्शे बनाने और विश्लेषण करने की सुविधा देते हैं।

जीआईएस सिखाने के लिए गतिविधियाँ

1. **नक्शा बनाना:** बच्चों को अपने स्कूल या पड़ोस का नक्शा बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। वे विभिन्न स्थलों को चिह्नित कर सकते हैं और उनकी जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपने आस–पास के भौगोलिक परिवेश को समझने में मदद मिलती है।
2. **परियोजना कार्य:** बच्चों को एक परियोजना पर काम करने के लिए कहें जहां वे जीआईएस का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने शहर के जल संसाधनों का अध्ययन कर सकते हैं या किसी पर्यावरणीय समस्या का समाधान खोज सकते हैं।
3. **डेटा संग्रहण:** बच्चों को डेटा संग्रहण का महत्व सिखाएं। वे सर्वेक्षण करके डेटा एकत्र कर सकते हैं और फिर जीआईएस सॉफ्टवेयर का उपयोग करके उसका विश्लेषण कर सकते हैं।

जीआईएस और इंटरडिसिप्लिनरी लर्निंग: जीआईएस का उपयोग शिक्षा में इंटरडिसिप्लिनरी लर्निंग के लिए एक प्रभावी उपकरण हो सकता है। यह न केवल भूगोल बल्कि अन्य विषयों जैसे कि विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र और पर्यावरण अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

विज्ञान: जीआईएस का उपयोग करके वैज्ञानिक डेटा का विश्लेषण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, छात्रों को मौसम संबंधी डेटा का विश्लेषण करने, पर्यावरणीय परिवर्तनों का अध्ययन करने और विभिन्न जैविक प्रवृत्तियों को समझने में मदद मिल सकती है।

इतिहास: जीआईएस का उपयोग ऐतिहासिक घटनाओं और स्थलों का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है। छात्र ऐतिहासिक घटनाओं के स्थानिक पैटर्न का विश्लेषण कर सकते हैं और यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार से ऐतिहासिक परिवर्तन स्थानिक रूप से प्रकट होते हैं।

समाजशास्त्र: जीआईएस का उपयोग सामाजिक मुद्दों का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है। छात्र जनसंख्या,जनसांख्यिकी, और सामाजिक असमानताओं का विश्लेषण कर सकते हैं। वे यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार से विभिन्न सामाजिक कारक स्थानिक रूप से वितरित होते हैं और इनका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है।

पर्यावरण अध्ययन: जीआईएस का उपयोग पर्यावरणीय मुद्दों का अध्ययन करने के लिए किया जा सकता है। छात्र विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं जैसे कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता के नुकसान का विश्लेषण कर सकते हैं। वे यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

जीआईएस के उपयोग के प्रभावी तरीके

1. छात्र–केंद्रित शिक्षा: जीआईएस का उपयोग छात्र–केंद्रित शिक्षा में किया जा सकता है। शिक्षक छात्रों को परियोजनाओं पर काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जहां वे जीआईएस का उपयोग कर सकते हैं। इससे छात्रों को अपनी सोच और सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है।

2. प्रायोगिक शिक्षा: जीआईएस का उपयोग प्रायोगिक शिक्षा में भी किया जा सकता है। छात्र वास्तविक समय के डेटा का उपयोग करके समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। वे विभिन्न प्रकार के डेटा सेट का विश्लेषण कर सकते हैं और समाधान तैयार कर सकते हैं।

3. सहयोगात्मक शिक्षा: जीआईएस का उपयोग सहयोगात्मक शिक्षा में भी किया जा सकता है। छात्र समूहों में काम कर सकते हैं और जीआईएस का उपयोग करके परियोजनाओं पर काम कर सकते हैं। इससे उन्हें टीम वर्क और सहयोग के महत्व को समझने में मदद मिलती है।

जीआईएस और डिजिटल साक्षरता: जीआईएस का उपयोग छात्रों की डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा सकता है। इससे वे विभिन्न डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का उपयोग करना सीख सकते हैं।

1. **डेटा संग्रहण और विश्लेषणः** जीआईएस का उपयोग करके छात्र डेटा संग्रहण और विश्लेषण के कौशल सीख सकते हैं। वे विभिन्न प्रकार के डेटा सेट का विश्लेषण कर सकते हैं और इससे संबंधित निष्कर्ष निकाल सकते हैं।
2. **सूचना प्रस्तुतिः** जीआईएस का उपयोग करके छात्र सूचना प्रस्तुति के कौशल भी सीख सकते हैं। वे नक्शे, चार्ट्स, और इन्फोग्राफिक्स का उपयोग करके जानकारी को प्रस्तुत कर सकते हैं।
3. **डिजिटल उपकरणों का उपयोगः** जीआईएस का उपयोग करके छात्र विभिन्न डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना सीख सकते हैं। वे सॉफ्टवेयर, ऐप्स, और अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं।

जीआईएस के उपयोग के चुनौतियाँ

1. सॉफ्टवेयर और उपकरणों की लागतः जीआईएस सॉफ्टवेयर और उपकरणों की लागत उच्च हो सकती है, जो कि कई स्कूलों और संस्थानों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है।
2. प्रशिक्षण और समर्थनः जीआईएस का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों और तकनीकी समर्थन की आवश्यकता होती है। कई स्कूलों में इन संसाधनों की कमी हो सकती है।
3. डेटा की गुणवत्ता और उपलब्धताः जीआईएस का उपयोग करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले और विश्वसनीय डेटा की आवश्यकता होती है। कई बार इन डेटा स्रोतों की उपलब्धता एक चुनौती हो सकती है।

समाधान और सिफारिशें

1. ओपन–सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोगः जीआईएस सॉफ्टवेयर और उपकरणों की लागत को कम करने के लिए ओपन–सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा सकता है। फळै एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो कि मुफ्त और ओपन–सोर्स है।
2. शिक्षक प्रशिक्षणः जीआईएस का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण और तकनीकी समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए। इससे वे छात्रों को बेहतर ढंग से सिखा सकते हैं और उन्हें विभिन्न परियोजनाओं पर मार्गदर्शन कर सकते हैं।
3. डेटा साझेदारीः उच्च गुणवत्ता वाले और विश्वसनीय डेटा की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए शैक्षिक संस्थानों को सरकारी और निजी डेटा प्रदाताओं के साथ साझेदारी करनी चाहिए। इससे छात्रों को विभिन्न प्रकार के डेटा सेट तक पहुंच मिल सकती है।

निष्कर्षः जीआईएस का उपयोग शिक्षा में अत्यधिक लाभकारी हो सकता है। यह छात्रों को विभिन्न विषयों को गहराई से समझने, व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने, और जटिल समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बनाता है। जीआईएस का उपयोग शिक्षा में एक नई दृष्टिकोण और गहराई प्रदान करता है, जिससे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और रुचिकर बनती है। जीआईएस के उपयोग से छात्रों की भौगोलिक सोच, समय–स्थान विचार, और समस्याओं के समाधान की क्षमता को बढ़ावा मिलता है।

इस प्रकार, जीआईएस का उपयोग न केवल भूगोलीय अनुसंधान में बल्कि शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में भी किया जा सकता है। यह छात्रों की डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के साथ–साथ उन्हें विभिन्न डिजिटल उपकरणों और सॉफ्टवेयर का उपयोग करना भी सिखाता है। जीआईएस के उपयोग के लाभों को देखते हुए, इसे शिक्षा में व्यापक रूप से लागू किया जाना चाहिए।

➢दिव्या गौतम
सिविल युवा अभियन्ता (तकनीकी)

'मौत से हम नहीं, मौत हमसे डरती है'– कैप्टन मनोज पांडे

मेरा बलिदान सार्थक होने से पहले अगर मौत दस्तक देगी तो संकल्प लेता हूं कि मैं मौत को भी मार डालूंगा। दिनांक 3 जुलाई 1999 को 24 साल की उम्र में कैप्टन मनोज पांडे, करगिल युद्ध पर जाने से पहले मनोज ने अपनी मां से वादा किया था कि वो घर जरूर आएंगे, वो घर तो आए लेकिन तिरंगे में लिपटकर. कैप्टन मनोज पांडे का जन्म 25 जून 1975 में उत्तर प्रदेश के सीतापुर के रुधा गांव में हुआ था. बचपन से ही मनोज ने गरीबी देखी थी. इसलिए बड़े भाई होने के नाते वो अपने भाइयों को बोलते थे कि मेहनत से पढ़ाई करना पापा का पैसा वेस्ट ना करना. मनोज को बचपन में ही इस बात की समझ हो गई थी कि उन्हें पढ़ाने में पापा को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है. इसलिए वो कम में ही गुजारा करते थे. जब मां उन्हें रिक्शे से स्कूल जाने के लिए पैसे देती थी तो वो पैदल ही चले जाते थे. रिक्शे का पैसा बचा लेते थे. मनोज उम्र में छोटे थे परिवार की कमाई कोई योगदान नहीं दे सकते थे. लिहाजा अपनी जरूरतों को ही छोटा कर लेते थे.

मनोज का हमेशा से यही मानना था कि सिविल में तो हर कोई नौकरी कर लेता है. उन्हें तो सेना में शामिल होने की धुन सवार थी. मनोज ने आठवीं तक लखनऊ के रानी लक्ष्मी बाई मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पढ़ाई की उसके बाद वो आर्मी स्कूल में भर्ती हुए. उनके जूनून को जैसे दिशा मिल गई. खेल और पढ़ाई में वो काफी तेज थे. किसी शख्स में दोनों चीजें बहुत कम देखने को मिलती हैं। एनडीए की लिखित परिक्षा पास करने के बाद मनोज को का कॉल आया तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा. इंटरव्यू में उनसे सवाल पूछा गया था कि ' Why do you want to join the arm forces- तो उन्होंने साफ कहा था कि उन्हें 'परमवीर चक्र' चाहिए।

मनोज पांडे तो पैदा ही परमवीर हुए थे. इसलिए उन्होंने उस बटालियन को चुना Bravest of Bravest, जिसे बहादुर से भी बहादुर कहा जाता है, यानी गोरखा राइफल्स. 6 जून 1995 को वन– इलेवन गोरखा राइफल्स में कमिशन कर लिया गया। युवा लेफ्टिनेंट मनोज की पहली पोस्टिंग श्रीनगर में हुई। यहां से उन्हें दुनिया के सबसे ऊंचे युद्धक्षेत्र सियाचिन भेजा गया. इन दोनों स्थानों पर इनकी और काम को देखते हुए उन्हें कमांडो ट्रेनिंग के लिए भेजा गया. इन सबके बीच मनोज पांडे को जिस दिन का बचपन से इंतजार था वह भी आ गया।दिनांक 4 मई 1999 को ऑपरेशन रक्षक के लिए उनकी यूनिट को करगिल जाने के आदेश मिले।

यूं तो मनोज ने लगातार कई खतरनाक मिशन को सफलता से पूरा किया था. लेकिन खालूबार का जो मिशन सबके सामने था जो सबसे बहादुर माने जाने वाले गोरखाओं के लिए भी बड़ी चुनौती थी। पहाड़ों पर सिर्फ दुश्मन से ही लड़ाई नहीं होती है। पहाड़ों पर जवान को तीन तरह के दुश्मन का सामना करना पड़ता है। पहला दुश्मन होता है ऊंचाई... पूरे सामान के साथ ऊपर चढ़ना पड़ता है। दूसरा– मौसम बार–बार अपना मिजाज बदलता है. तीसरा बेतहाशा ठंड, जहां पर तापमान शून्य डिग्री या उससे कम होता है. पाकिस्तान की कमर तोड़ने के लिए खालूबार को जीतना जरूरी था क्योंकि उसके पीछे पीओके था जहां पर पाकिस्तान ने अपना हैलिपैड बनाया था, जिससे उन्हें जरूरत का सारा सामान मिल रहा था। यह चोटी इसलिए अहम थी, क्योंकि यह दुश्मन का कम्युनिकेशन हब था. इस पर कब्जा करने का मतलब था कि पाकिस्तानी सैनिकों तक रसद और अन्य मदद में कटौती होना। इससे लड़ाई को अपने हक में किया जा सकता था. जब भारतीय सैनिकों ने इस पर चढ़ाई करना शुरू की तो पाकिस्तानियों ने गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। पाकिस्तानियों ने तोप से गोले और लॉन्चर भी बरसाए।

कमांडिंग अफसर के निर्देश के मुताबिक दो टुकड़ियों ने रात में ही चढ़ाई करने की योजना बनाई. एक बटालियन मनोज पांडे को दी गई। मनोज को चोटी पर बने चार बंकर उड़ाने का आदेश दिया गया. जब मनोज ऊपर पहुंचे तो उन्होंने बताया कि ऊपर चोटी पर 6 बंकर हैं. हर बंकर में 2–2 मशीन गनें तैनात थीं. ये लगातार गोलियां बरसा रहीं थीं।

मनोज पांडे जब एक बंकर में घुस रहे थे तो उनके पैर में गोली लगी, इसके बावजूद वे आगे बढ़े और हैंड–टू–हैंड कॉम्बैट में दो दुश्मनों को मार गिराया। यहां उन्होंने पहला बंकर नष्ट कर दिया। लहूलुहान होने के बावजूद मनोज पांडे रेंगते हुए आगे बढ़े और उन्होंने दो और बंकरों को तबाह कर दिया। इसके बाद एक और बंकर बचा था, जिसे नष्ट करने का उन्हें आदेश मिला था. जैसे ही मनोज पांडे उसे नष्ट करने के लिए आगे बढ़े, दुश्मन की बंदूक से उन्हें चार गोलियां लगीं लेकिन उन्होंने इसके बावजूद उस बंकर को भी उड़ा दिया। जिस योद्धा ने अपनी हर एक सांस पर मातृभूमि का नाम लिख दिया, उसने जाते–जाते अपने जवानों की विजय का आखिरी आदेश सुना गया। मनोज ने नेपाली में कहा 'न छोड़ नूं', सोचिए जिसकी जान जा रही है, फिर भी वो बोल रहा है कि इन्हें ना छोड़ना, गोरखा जवानों के गुस्से ने उनकी हिम्मत को 100 गुना बढ़ा दिया। उस दिन एक भी पाकिस्तानी सैनिक को चोटी से भागने का मौका नहीं मिला। दुश्मन को चुन–चुन कर मौत के घाट उतारा गया। जब खालूबार पर कब्जा किया तो उसका असर यह हुआ कि पाकिस्तान के पास जितने भी डिफेंसिव पोजिशन थे वो उसे संभाल नहीं पाए। दूसरी चोटियों से भी भागना शुरू कर दिया. लेकिन हिंदुस्तान का एक और सपूत चोटी पर तिरंगा लहराकर तिरंगे में लिपटकर लौट रहा था।

मनोज ने अपनी आखिरी चिट्ठी में लिखा था. कुछ लक्ष्य इतने नेक होते हैं कि इनमें असफलता भी यश लेकर आती है। प्राण देकर मनोज अपने लक्ष्य में सफल हुए थे। अपने परिवार और देश के लिए यश लेकर आए थे। मनोज पांडे ने सेना में होने की वजह ही बताई थी. परमवीर चक्र जीतना, उस शूरवीर ने बहादुरी का सर्वोच्च सम्मान हासिल भी किया बस उसे लेने के लिए दुनिया में नहीं थे।

'जय हिन्द'।

➢मोहित माथुर
सहायक प्रबंधक (तकनीकी)

सफलता की कुंजी

हमारे धर्म–ग्रन्थ मे एक बड़ा सुन्दर मंत्र इन शब्दों मे मिलता है–"उठो, जागों और जब तक ध्येय की प्राप्ति न हो, प्रयत्न करते रहों।" जीवन मे सफलता की यही कुंजी है। बिना सक्रियता के कुछ नही हो सकता। हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे तो क्या मिलेगा? दुनिया उसी को प्यार करती है, उसी को मान देती है, जो मेहनत करता है ओर खरी कमाई करके खाता है। आदमी का काम प्यारा होता है चाम नही। कुछ लोग बड़ी–बड़ी चीजों के चक्कर मे छोटी–छोटी चीजों की ओर ध्यान नही देते। वे भूल जाते है कि जो छोटी चीजों को नही संभाल सकता, वह बड़ी चीजों के योग्य नही बन सकता। एक बार गांधीजी की एक छोटी–सी पैसिल इधर–उधर हो गयी। उसकी तलाश मे उन्होने दो घटें खर्च किये और जब वह मिल गयी, तब उन्हे चौन पड़ा। वह जानते थे कि छोटी चीजों के प्रति लापरवाही हुई कि फिर बड़ी चीजों के लिए भी आदमी मे वह दुर्गुण आ जाता है। हमारी सफलता इस बात मे है कि हम सावधान रहकर, जो भी काम हमारे हाथ मे हो, उसे अच्छी तरह पूरा करें। हिमालय की चोटी पर चढ़ने के अवसर कम ही आते है, लेकिन हाथ के काम को कुशलता से करने का मौका तो हर घड़ी सामने रहता है। रूसों संसार का एक महापुरूष हुआ। उसने लिखा, "जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह से करने की शिक्षा पा चुका है, वह मनुष्य से सम्बन्ध रखने वाले सभी कामों को भली–भाँती करेगा। मुझे इसकी चिन्ता नही कि मेरे शिष्य सेवा, धर्म या न्यायलय के लिए बनाए गए है। समाज से सम्बन्ध रखने वाले किसी काम के पहले प्रकृति ने हमें मानव–जीवन से सम्बन्ध रखने वाले काम करने के लिए बनाया है। यही मै अपने शिष्य को सिखाऊँगा। जब उसे यह शिक्षा मिल चुकेगी, तब वह न सिपाही होगा, न पादरी होगा और न वकील ही। वह पहले मनुष्य होगा, फिर और कुछ।" कुछ लोग जीवन की सफलता पैसे से आँकते है। जिसने अधिक कमाई कर ली, उसके लिए माना जाता है कि वह जिन्दगी मे सफल रहा। पर धन सफलता की असली कसौटी नही है। धन साधन है, जीवन का साध्य नहीं हो सकता। यदि पैसा ही सबकुछ होता तो बुद्ध, महावीर, गांधीजी आदि महापुरूष क्यों गरीबी का जीवन अपनातें? बुद्ध और महावीर तो राजा के बेटे थे, राज्य के अधिकारी थे, लेकिन उन्होने राज–पाट के वैभव से मुँह मोड़कर उस रास्ते को अपनाया, जिससे ढाई हजार वर्ष बाद आज भी वे जीवित है और जब तक मानव–जाति है, आगे भी जीवित रहेगें। गांधीजी को कौन–सी कमी थी? लेकिन उन्होने सादगी का जीवन अपनाया। आज सारी दुनिया उन्हे प्यार करती है। उनका मान करती है। आदमी को निराशा तभी होती है, जब वह आशा रखता है। जो काम वह करता है, उसके फल मे उसकी आसक्ति रहती है। गीता बताती है–"काम करों, पर फल की इच्छा मत रक्खों।" मेहनत कभी अकारथ नही जाती। फलों के पेड़ों पर फल आते ही है। लेकिन फलों पर हमारी इतनी निगाह रहती है कि पेड लगाने के आनन्द को हम अनुभव नही करते। अच्छी तरह से काम करने का अपना निराला ही उल्लास होता है। कुछ लोग कहते है, यह भी कोई जिन्दगी है कि हर घड़ी काम करते रहों। बहुत दिन जीने के लिए आराम बड़ा जरूरी है। ऐसा कहने मे एक बुनियादी दोष है। हर घड़ी काम करने का मतलब यह नही है कि आदमी कभी आराम ही न करे। उसका मतलब है, आदमी कर्मठ रहे, आलस न करें। सच बात यह है कि निष्क्रिय जीवन से बढ़कर दूसरा अभिशाप नही है। जो लोग क्रियाशील रहते है, वे काम करने का सन्तोष पाते है और अपनी प्रसन्नता से धरती का बोझ हल्का करते है। इसके विपरीत जो काम से बचते है,वे स्वयं तो परेशान होते ही है, समाज मे भी बडा दूषित वायुमण्डल पैदा करते है। कर्ममय जीवन दूसरो पर अच्छा असर डालता है, आलसी दूसरे को आलसी बनाता है। बचपन मे अंग्रेजी की एक बड़ी सुन्दर कविता पढ़ी थी। कवि कहता है, "उठो, दिन बीता जा रहा है और तुम सपने लेते हुए पड़े हुए हो! दूसरे लोगो ने अपने कवच धारण कर लिए हैऔर रणभूमि मे चले गये है।। सेना की पंक्ति मे एक खाली जगह है, जो तुम्हारी राह देख रही है। हर आदमी का अपना कार्य करना होता है।"

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है, उसके कर्त्तव्य बढ़ते जाते है। वह जितनी खूबी से उनका पालन करता है, उतना ही वह अच्छा नागरिक बनता है और समाज को सुखी बनाता है। हर आदमी के लिए ऊँचाई पर स्थान है, लेकिन वहाँ पहुँचता वही है, जिसके अन्तर मे आत्म–विश्वास होता है, हाथ–पैरों मे ताकत होती है, निगाह मे ऊँचाई होती है ओर हृदय में सबके लिए प्रेम और सहानुभूति का सागर उमड़ता रहता है। ऐसा आदमी जानता है कि उसके ऊपर सदा निर्मल आकाश है। अगर कभी बादल घिर भी आते है तो वे अधिक समय नहीं टिकते है। अपने लक्ष्य पर आँख रखकर मजबूती से बढ़े चलना इंसान का सबसे बड़ा कर्तव्य है।

➤नवीन जोशी
सहायक प्रबंधक (पी– I)

नयी प्रौद्योगिकी से सड़क निर्माणः देश की प्रगति का प्रमाण

आज के परिवेश में पर्यावरण संरक्षक, यातायात, परिवहन, पर्यावरण, अवसंरचना के निर्माण आदि के अनुसंधान एवं विकास से संबंधित कार्य के क्षेत्र में अनेक सरकारी और निजी संस्थाएँ और संस्थान कार्य कर रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण को केन्द्र में रखते हुए संस्थानो ने अपशिष्ट सामग्रियों के सदुयोग से संबंधित अनेक प्रौद्योगिकी विकसित की हैं। इसी श्रृंखला में स्टील स्लैग के प्रयोग से सड़कों के निर्माण को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि की श्रेणी में रखा जा सकता है। हम जानते हैं कि एक ओर तो सड़क निर्माण के क्षेत्र में उपयोग होने वाली परंपरागत सामग्रियाँ एवं प्राकृतिक संसाधान कम होते जा रहे हैं। दूसरे विभिन्न उद्योगों से निकलने वाली अपशिष्ट सामग्रियों के निपटान की एक बहुत बड़ी चुनौती है। ये पर्यावरण के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। ऐसे में सड़क निर्माण की सामग्री के रूप में स्टील स्लैग का उपयोग एक नवीन प्रौद्योगिकी है जिसका व्यापक उपयोग देश के विभिन्न हिस्सों में किया जा रहा है।

प्रस्तावनाः प्रदूषण के कारण उत्पन्न समस्याएँ और समाधान आज हर जगह चर्चा का विशय है। परन्तु विभिन्न उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ को सुरक्षित निपटाने की विधि खेजना पर्यावरणविदों और वैज्ञानिकों के लिए हमेशा एक बहुत बड़ी समस्या रही है। वास्तव में, धातुकर्म और धातु–प्रसंस्करण से प्राप्त कचरे का निपटान करने के लिए आम तौर पर कुछ लैंडफिल साइटों का उपयोग किया जाता रहा है। इससे कचरे को खुले में रहने देने से यह पर्यावरण के लिए विशेष रूप से खतरनाक सिद्ध होता है। इससे देश के अनेक स्थानों पर स्टील के कचरे और अन्य अपशिष्टों के पहाड़ खड़े हो गए है।

स्थील स्लैग और इसका उपयोग : विभिन्न तरह के अपशिष्टों में से एक है– स्टील स्लैग। समय की आवश्यकताकेमद्देनजर संस्थानों ने कारखानों से निकले स्टील स्लैग का उपयोग करने का निश्चय किया। अतंतः इसके उपयोग का एक महत्वपूर्ण साधन मिल गया। अब इसका उपयोग सड़क निर्माण में किया जाने लगा है। स्टील स्लैग का उपयोग कर सबसे पहली 1 कि.मी. लम्बी सड़क का निर्माण सूरत में किया गया है। सूरत, गुजरात में पहली स्टील सड़क बनने के बाद जमशेदपुर, झारखंड और डॉल्वी, महाराष्ट्र में स्टील स्लैग से सड़क का निर्माण किया है। सीमा सड़क संगठन भी देश के सामरिक क्षेत्रों के महत्व को देखते हुए इस तकनीक का उपयोग कर रहा है। बारहमासी और टिकाऊ सड़कों के निर्माण के लिए अरूणाचल प्रदेश में स्टील धातुमल की रोड़ी उपयोग में लाई गई है। मजबूत सड़क बननाने की दृष्टि से विकसित प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है। स्टील कचरे से बनी सड़क में टिकाऊपन का गुण होने के कारण ही भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) द्वारा भी मुंबई से गोवा महामार्ग पर सड़क निर्माण के लिए स्टील का प्रयोग किया गया है। इस तकनीक की सहायता से स्टील स्लैग रोड़ का निर्माण करने के कारण सरकार द्वारा चलाए जा रहे कचरे से कंचन (वेस्ट टू वैल्थ) और स्वच्छ भारत मिशन दोनो को मदद मिल रही है।

परिणामतः कह सकते हैं कि स्टील स्लैग से सड़क निर्माण कार्य करके सरकार देश में प्रदूषण पर नियंत्रण और दीर्घकालीन सुदृढ़ अवसंरचना का निर्माण, जैसे दोहरे कार्य एक साथ कर रही है। यहाँ यह कहावत सिद्ध होती है –

"आम के आम और गुठलियों के दाम"

"वातावरण हो स्वच्छ, सबको मिले आदर्श जीवन, स्टील स्लैग हो देश की उन्नति का साधन और करे प्रदूषण पर नियंत्रण,

➢विजय इंग्ले
प्रोग्रामर

देवभाषा : संस्कृत

संस्कृत की महत्ता

1. संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है।
2. संस्कृत उत्तराखंड की आधिकारिक भाषा है।
3. संस्कृत में सभी भाषाओं से अधिक शब्द हैं।
4. वर्तमान में संस्कृत के शब्दकोष में अनुमानतः कई लाख शब्द हैं।
5. संस्कृत किसी भी विषय के लिए एक अद्भुत खजाना है।
6. सभी भाषाओं की तुलना में संस्कृत में सबसे कम शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है।
7. संस्कृत अकेली भाषा है जिसे बोलते समय जीभ की सभी माँसपेशियों का प्रयोग होता है।
8. कर्नाटक के मुत्तुर गाँव के लोग केवल संस्कृत में ही वार्तालाप करते हैं।
9. संस्कृत का पहला समाचर पत्र सुधर्मा था। यह 1970 में प्रथम बार प्रकाशित किया गया। आज भी इसका संस्करण ऑनलाइन उपलब्ध है।
10. लंदन और आइरलैंड के कई विद्यालयों में संस्कृत को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।
11. विश्व के अनेक देशों में के कम से कम एक विश्वविद्यालय में संस्कृत पढ़ाई जाती है।
12. नासा के मुताबिक संस्कृत धरती पर बोली जाने वाली सबसे स्पष्ट भाषा है।
13. संस्कृत में ताड़पत्रों पर लिखी हजारों पांडुलिपियां नासा के पास हैं। इनके संबंध में नासा शोध कार्य कर रहा है।
14. विश्व प्रसिद्ध एक पत्रिका ने भी ने संस्कृत को कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा माना है।
15. नासा के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए जा रहे 6वें और 7वें पीढ़ी सुपर कंप्यूटर संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे । ये 2034 तक बनकर तैयार हो जाएंगे।
16. अमेरिकन हिन्दी विश्वविद्यालय के अनुसार संस्कृत में नियमित बात करने से मनुष्य बीपी, मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोगों से मुक्त हो सकता है।
17. जर्मनी में बड़ी संख्या में संस्कृत भाषियों की माँग है।
18. यह आश्चर्यजनक है कि कंप्यूटर के माध्यम से गणित के प्रश्नों को हल करने वाली Algorithms विधियाँ संस्कृत की सहायता से ही तैयार की गयी है।
19. जर्मनी के 14 विश्वविद्यालयों में संस्कृत की शिक्षा दी जाती है।
20. संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सदैव सक्रिय रहता है जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश (Positive Charges) से सक्रिय हो जाता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है – ओउम् का उच्चारण करना।
21. संस्कृत, स्पीच थेरेपी क्रिया में भी लाभदायक है। यह एकाग्रता में वृद्धि करती है।
22. संस्कृत सीखने से मस्तिष्क तेज हो जाता है और स्मरण शक्ति बढ़ जाती है।

➤निधि मगलानी
सहायक प्रबंधक (परियोजना–।।)

अद्भुत कहानी "करमाबाई"

राधारानी के परम भक्त और वृंदावन वाले प्रेमानंद जी महाराज को भला कौन नहीं जानता है। वे आज के समय के प्रसिद्ध संत हैं । यही कारण है कि उनके भजन और सत्संग में दूर–दूर से लोग आते हैं । प्रेमांनद जी महाराज की प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैली हुई है ।

कहा जाता है कि भोलेनाथ ने स्वयं प्रेमानंद जी महाराज को दर्शन दिए। इसके बाद वे घर का त्याग कर वृंदावन आ गए। एक बार उन्हें किसी अजनबी संत ने वृंदावन में चौतन्य लीला और रासलीला देखने के लिए आमंत्रित किया। जब वो वहाँ गए, तो उन्हें आयोजन बहुत पसंद आया। अब वो रोजाना वो रासलीला देखना चाहते थे। उन्होंने इसका समाधान उस संत से पूछा जिन्होंने उन्हें आमंत्रित किया था, तो संत ने कहा कि आप वृंदावन आ जाएं, वहां आपको प्रतिदिन रासलीला देखने को मिलेगी। संत की यह बात सुनकर ही उन्हें वृंदावन आने की प्रेरणा मिली। इसके बाद महाराज जी वृंदावन में राधारानी और श्रीकृष्ण के चरणों में सेवा करने आ गए और साथ ही साथ लोगों का भी मार्गदर्शन करने लगे। कहा जाता है कई सालों से उनके दोनों गुर्दे खराब है लेकिन उसके बावजूद भी वे अभी तक स्वस्थ हैं। अब सबकुछ उन्होंने भगवान के हाथ में छोड़ दिया है। वो वहा आने–जाने वाले भक्तों से मिलकर उनकी समस्या को सुनकर उसका हल निकालते हैं । एक बार उनके मुखारबिंद से एक सच्ची कहानी सुनने को मिली थी करमा बाई की कथा । अध्यात्म जगत में करमाबाई की कथा भक्तों की प्रेरणा मानी जाती है। जिनके भक्ति भाव से प्रसन्न होकर खुद भगवान ने उनके हाथ की खिचड़ी खाई थी।

करमाबाई का जन्मः करमाबाई का जन्म राजस्थान के नागौर जिले की मकराना तहसील के कालवा गांव में जाट परिवार में भाद्रपद कृष्ण पक्ष एकादशी तिथि 20 अगस्त 1615 ई. को हुआ। उनके पिता का नाम जीवनराम जी डूडी व माँ का नाम रतनी देवी था। पिता जीवणराम शुरू से परम कृष्ण भक्त थे। भगवान को भोजन करवाने के बाद ही वह खुद अन्न व जल ग्रहण करते थे। कथाओं के अनुसार करमाबाई पैदा होते ही हँसी थी। जिसे देख हर कोई अचरज में था।

करमाबाई का विवाहः करमा बाई का विवाह नागौर के ही मोरेड़ गांव में सोऊ गोत्र में लिखमा राम के साथ किया गया था। पर शादी के कुछ समय बाद ही वह विधवा हो गयी और इसके बाद पूरा जीवन भगवान की भक्ति में बिताया।

जब भगवान ने खाया करमा बाई का भोगः करमाबाई जब 13 साल की थी तब कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान के लिए पत्नी सहित पुष्कर जाते समय पिता जीवणराम ने उन्हें घर में भगवान के भोग की जिम्मेदारी सौंपी। कहा, भगवान को भोग लगाने के बाद ही वह खुद भोजन करें। उनके जाने के अगले दिन ही करमा बाई ने सुबह स्नान कर बाजरे का खीचड़ा बनाया। उसमें खूब घी डालकर उसने भगवान की मूर्ति के सामने रख दिया। वह बोली कि भगवान आपको जब भी भूख लगे तब भोग लगा लेना, तब तक मैं घर के अन्य काम कर लेती हूं। इसके बाद वह काम में जुट गई और बीच–बीच में थाली देखने आने लगी। पर जब भगवान को खीचड़ा नहीं खाते पाया तो वह वह चिंता में पड़ गई। फिर खीचड़ी में घी व मीठा कम होना सोच उसने उसमें घी व गुड़ और मिला दिया। इस बार भगवान के सामने

थाली रखकर वह भी वहीं बैठ गई। पर इस बार भी भगवान को भोजन ना करते देख उसकी चिंता और बढ़ गई। वह कहने लगी कि हे प्रभु आप भोग लगा लीजिए। माँ–बापू पुष्कर नहाने गए हैं और आपको भोग लगाने की जिम्मेदारी मेरे पास ही है। आपके भोग लगाने के बाद ही मैं खाना खाऊंगी। लेकिन जब भगवान ने फिर भी भोग नहीं लगाया तो वह शिकायत करने लगी कि मां–बापू जिमाते हैं तब तो आप भोग लगा लेते हो और आज मैं खिला रही हूं तो नहीं खा रहे हो। खुद भी भूखे बैठे हो और मुझे भी भूखी रखोगे क्या? मनुहार व शिकायत करते पूरा दिन बीत गया। आखिरकार शाम तक जब करमा बाई ने भी भोजन नहीं किया तो कन्हैया को प्रगट होना ही पड़ा। भगवान बोले, करमा तुम्हारे पर्दा नहीं करने की वजह से वे भोजन नहीं कर पाए। यह सुनकर करमा ने अपनी ओढ़नी की ओट कर

श्रीकृष्ण को खिचड़ी का भोग लगाया। जिसके बाद भगवान ने पूरी खिचड़ी खाली। इसके बाद तो वह रोज भगवान को भोग लगाती और भगवान भी उसके हाथ का भोजन ग्रहण करते। जब पिता–माता ने वापस आकर गुड़, घी व अनाज में कमी पाई तो कारण पूछने पर सरल करमा बाई ने उन्हें सारी बात कह सुनाई। पर उन्हें उसकी बात का विश्वास नहीं हुआ। अगले दिन परीक्षा के लिए फिर करमा बाई से भोग लगवाया गया तो भक्त का मान रखने के लिए फिर भगवान खिचड़ी खाने आ गए। इसके बाद तो पूरे गांव में ये बात फैल गई और जल्द ही करमा बाई जगत में विख्यात हो गईं।

भगवान जगन्नाथ को लगता है करमाबाई का भोग: इसके बाद तो करमा बाई का पूरा जीवन कृष्ण भक्ति में बीता। जीवन के अंतिम दिनों में करमा बाई भगवान जगन्नाथ की नगरी जगन्नाथ पुरी चली गई। वहाँ भी वह रोज भगवान को खिचड़े का ही भोग लगाती थी। उनकी इसी परंपरा की वजह से आज भी भगवान जगन्नाथ को खिचड़े का ही भोग लगाया जाता है। संवत 1691 यानी 1634 ई में वह ईश्वर में हमेशा के लिए लीन हो गई।

➢प्रदीप चित्तौड़
लेखापाल

मेरे गाँव की सुबह

सुबह–सुबह पक्षियों की चहचाहट,
और हवा में ये हल्की सी ठंडक,
नई ऊर्जा और उत्साह से भर देती है,
शहरों में कहाँ ऐसा होता है,
ऐसा तो सिर्फ गाँवों में होता है।

तब कहाँ किसी अलार्म की जरूरत पड़ती है,

चिड़ियों की आवाज जब कानों में घुलती है,
ये चहचाहट कानों में मिठास घोल देती है,
शहरों में कहाँ ऐसा होता है,
ऐसा तो सिर्फ गाँवों में होता है।

सुबह–सुबह जब सूरज की पहली किरण,

भगवा रंग से शुसोभित पहाड़ों के दर्शन,
ये प्राकृतिक माहौल मन मोह लेता है,
शहरों में कहाँ ऐसा होता है,
ऐसा तो सिर्फ गाँवों में होता है।

पेड़ों की हरियाली से भरपूर दृश्य होता है,

सभी की जिन्दगी सादगी से भरी होती है,
हर तरफ अलग ही खुशी और संतोष होता है,
शहरों में कहाँ ऐसा होता है,
ऐसा तो सिर्फ गाँवों में होता है।
आओ मिलकर इस धरोहर का संरक्षण करें,
और शहरों में भी खूब वृक्षारोपण करें ।।

➤सचिन कटियार
कार्यालय सहायक (वि.एवं प्रशा.)

विपरीत परिस्थितियों में भी स्थिर बने रहने की प्रेरणा

संघर्षों में स्थिर बने रहते हैं तो सफलता मिलती हैं । सहन शीलता की परीक्षा भी ऐसे कठिन समय में होती है जब आरोपित प्रत्यारोपित किए जाते हैं, कटघरे में खड़ा किया जाता है, स्पष्टीकरण मांगा जाता है, कर्तव्यनिष्ठा के संदेह के घेरे में कर दिया जाता है, निष्ठा पर सवाल उठाए जाते हैं । लक्ष्य से अलग करने की और सम्भव कोशिश होती है । अब ऐसी परिस्थिति में दो विकल्प होते हैं, या तो सारी शक्ति सत्य सिद्ध करने में लगा दें या सांच को आंच कहाँ सूत्र को ध्यान मे रखते हुए आगे बढ़ते रहें। समय सही गलत का निर्णय स्वयं करेगा। दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा । सभी शंकाएं निर्मूल हो जायेंगी वैसे भी झूठ के पैर ज्यादा देर नही टिका करते और सत्य परेशान भले हो पर पराजित तो कम से कम नहीं ही हुआ करता

ये स्थिति परिस्थिति मजबूत और दृढ़ बनाने के लिए आती हैं, जो जितना धूप ताप सहने की सामर्थ्य रखता है वह उतना ही निखरता है। विकट परिस्थिति उसे तोड़ती नही बल्कि और मजबूत बनाती है । आत्मावलोकन का अवसर देती है, सावधान करती है। कृतघ्न लोगों से दूर रहने की सीख देती है । बारिश,आँधी, धूप ताप ही तो फल में मिठास लाती है, पकाती हैं । तभी कहा जाता है बिना ताप के तो आम भी नहीं पका करते । जब तक जीवन में कोण मोड़ न आए, जीवन नीरस बना रहता है ।सपाट रहता है । जीवन जीने का आनंद नहीं आता । थोड़ी उथल पुथल भी जरूरी है । जब तक सत्य की कसौटी पर कसे नहीं जाओगे, बार बार परीक्षा में नहीं बैठोगे तो मूल्यांकन कैसे होगा। इसलिए बीच बीच में व्यवधान आने जरूरी है । बड़ा बनना है तो उस प्रक्रिया से गुजरना भी होता है । कमियों को दूर करना होता है । दोषों का परिमार्जन करना होता है। लोगों को समझना होता है। बिना सोचे समझे आंख मूंद कर सब पर विश्वास नहीं करना होता, पर ये सब सरल सहज व्यक्ति के लिए थोड़ा कठिन होता है । सीखना होता है और ये सब कई कई ठोकरों के बाद समझ में आता है । ये झूठ की पर्तें चढ़ाना उतना आसान कहाँ होता है।

➤देवीसिंह बैंसला,
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशासन)

दांपत्य जीवन के सुखद 25 वर्ष

एक दम्पत्ति का 25 वर्ष का साथ जीवन के महत्वपूर्ण पलों का साक्षी होता है। इन 25 वर्षों के दौरान ही दम्पत्ति ने अनेक सुखद–दुखद अनुभवों को देखा होता है, महसूस किया होता है और एक दूसरे के साथ साझा किया जाता है। हमारे दाम्पत्य जीवन के 25 वर्ष कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला। अब वह दिन आने को तैयार था, हमें भी उस दिन की उत्सुकता से प्रतीक्षा थी जिस दिन हमारे सुखद दाम्पत्य जीवन के 25 वर्ष पूरे होने जा रहे थे। परमपिता की कृपा से और पूर्वजों के आशीर्वाद के फलस्वरूप इस अवधि के दौरान हमारे जीवन के दो अति महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न हो गए। हमारे बड़े पुत्र अमन पोखरियाल का एसएसबी (SSB) के माध्यम से भारतीय थल सेना में लेफ्टिनेंट (Lieutenant) के पद पर चयन हो गया था तथा छोटे बेटे अनुज पोखरियाल ने आईईएलटीएस (IELTS) की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और आईबीएम (IBM) का अध्ययन करने के लिए कनाडा जाने का उसका वीजा भी लग चुका था। दोनों बेटों के जाने की तिथि भी निर्धारित हो चुकी थी। पटना में एक साल की ट्रेनिंग के लिए बड़े बेटे अमन का,कॉल लेटर आ चुका था और अब 27 मार्च, 2024 को वह भी गया, पटना जाएगा। उसका प्रशिक्षण कार्यक्रम 28 मार्च 2024 से प्रारंभ होगा। अपनी पढ़ाई के लिए 7 अप्रैल 2024 को कनाडा को जाने के लिए छोटे बेटे अनुज पोखरियाल का वीजा और हवाई टिकट आ चुके थे। बच्चों की इन उपलब्धियों से घर में खुशी का वातावरण था, सभी शुभचिंतकों, रिश्तेदारों की ओर से शुभकामना संदेश और बधाइयाँ मिल रही थी। साथ ही, सभी हमसे जानना चाह रहे थे कि अपने वैवाहिक जीवन की रजत जयंती कैसे और कहाँ मना रहे हैं और पार्टी कहाँ आयोजित कर रहे हैं। हम कुछ तय नहीं कर पा रहे थे। हमने दोनों पुत्रों से पूछा तो उन्होंने कहा कि अभी कुछ पता नहीं कैसे मनाना है। समय आने दो तभी विचार कर लेंगे। एक–एक दिन बितता जा रहा था। समय नजदीक आ रहा था, लेकिन, अभी तक कुछ तय नहीं हो पा रहा था। इस दिन को मनाने का बहुत उत्साह था। लेकिन, कुछ भी तय न होने से मन परेशान था। परंतु, दूसरी ओर हमारे दोनों बच्चों ने इस अवसर को बहुत बड़े रूप में मनाने का एक कार्यक्रम तैयार कर रखा था , जिससे हम दोनों ही अनभिज्ञ थे।

अब जब विवाह के 25 वर्ष पूरे होने में मात्र 5 दिन रह गए और कोई प्रोग्राम तय न होने के कारण हमारे दिल की धड़कनें बढ़ रही थीं, बच्चों से भी कुछ नहीं कह पा रहे थे, तभी हमारे दोनों पुत्र हमारे पास आ कर कहते हैं कि मम्मीजी –पापाजी हमने आपकी वैवाहिक जीवन की रजत जयंती को मनाने का एक प्रोग्राम तैयार किया है। हम सभी इस अवसर को सिक्किम गंगटोक तथा दार्जिलिंग में मनाएंगे। ऐसा कह कर उन्होने वहाँ जाने– आने की हवाई यात्रा की टिकटें, होटल बुकिंग और स्थानीय स्थलों पर घुमाए जाने का टूर पैकेज हमारे हाथों में रख दिया। बच्चों ने इतना शानदार प्रोग्राम तैयार किया है, सुन कर प्रसन्नता से आंखें भर आई दोनों बच्चों को गले से लिपटा लिया। हम दोनों ने दोनों बच्चों को अपना पूर्ण आशीर्वाद दिया और ईश्वर तथा अपने पितरों से यही प्रार्थना की कि मेरे दोनों बच्चे हमेशा खूब तरक्की करें और माँ–बाप का खूब नाम रोशन करें।

एक–एक दिन कम हो रहा था, 9 फरवरी, 2024 अर्थात हमारे जीवन का एक अविस्मरणीय दिन, हमारे वैवाहिक जीवन की 25वीं वर्षगांठ के उस दिन के आने में मात्र 3 दिन शेष थे। प्रोग्राम तो बन ही चुका था। अब तो दिल में उस दिन के आने और टूर पर जाने के लिए नए उत्साह का संचार हो रहा था।

सिक्किम

अंततः टूर पर जाने की निर्धारित तारीख आ गई और हमने 8 फरवरी, 2024 को रात्रि 3 बजे इंदिरागांधी हवाई अड्डे के लिए प्रस्थान कर दिया। वहाँ से बागडोगरा की फ्लाइट ले कर प्रातः 8 बजे बागडोगरा पहुंच गए। वहाँ टूर प्रोग्राम के अनुसार टेक्सी तैयार थी। हम उस टेक्सी से गंगटोक जाने लगे । रास्ते में पहाडों , झरनों का आनन्द लेते हुए 5.30

घंटे की यात्रा के बाद गंगटोक पहुंच गए। गंगटोक में तो प्राकृतिक दृष्य देख कर ऐसा लगा मानों प्रकृति ने अपना सब कुछ वहीं दे दिया है। बहुत अच्छा महसूस हुआ, मन प्रसन्न हो गया ।

आज 9 फरवरी, 2024 थी, बहुप्रतीक्षित दिन था। इसी दिन हम दोनों परिणयसूत्र में बंधे थे। प्रातः दोनों बच्चों ने हम दोनों के चरण स्पर्श कर हम दोनों की दीर्घायु की कामना की, हमने दोनों को अशीर्वाद दिया। इसके बाद हमारा कार्यक्रम नाथूला जाने को था किन्तु वहां काफी बर्फ होने के कारण हम वहाँ नहीं जा सके। हमने चांगूलेख जाने का कार्यक्रम बनाया। चांगूलेख झील होटल से 40 किलोमीटर दूर है । हम होटल से रवाना हुए और रास्ते में हर जगह बर्फ ही बर्फ, बड़ा सुन्दर नजरा देखने को मिला और ठंड का आनंद भी मिला। फिर हमने एक होटल पर गर्मागर्म चाय का आनंद लिया। सोमगो झील या चांग्गू झील के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय राज्य सिक्किम के गंगटोक जिले के चांगु में एक हिमनद झील है, जो राजधानी गंगटोक से लगभग 40 किलोमीटर दूरी पर है। 3,753 मीटर (12,313 फीट) की ऊंचाई पर स्थित, झील सर्दियों के मौसम में जमी रहती है। झील की सतह मौसम के बदलाव के साथ अलग–अलग रंगों को दर्शाती है । उसके बाद हम 12000 फीट की ऊँचाई पर बर्फ का आनंद लेने के लिए ट्रॉली में गए। वहां पहुंचकर देखने का नजारा ही कुछ था। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ इतना सुन्दर नजारा देखने को शायद ही कहीं मिले। वहां से आने को तो मन ही नहीं कर रहा था।

उसके बाद हम अपनी टेक्सी में बैठकर होटल के लिए रवाना हो गए। हमने होटल में रात्रि 6 बजे पहुंचकर कुछ देर आराम किया। रात्रि 8 बजे होटेल के डाइनिंग रूम में गए होटल के सभी कर्मचारियों ने हमारा भव्य स्वगात किया । विवाह की 25वीं वर्षगांठ की शुभकामनाएं दी। वहाँ एक केबिन को फूलों की तरह सजाया गया और हम दोनों ने वहाँ पर प्रवेश किया। दोनो बेटे अमन और अनुज ने हम दोनो के लिए पुष्पगुच्छ भेंट की और होटल के सभी सदस्यों ने हम दोनों को शुभकमानाएं दी । इसके बाद केक काटा गया। होटल के सभी सदस्यो और अमन और अनुज ने हम दोनों के विवाह की रजत जयंती बड़े धूम –धाम से मनाई। ये दिन हमारे जीवन का सबसे अनमोल दिन रहा।

हमारे दोनों बच्चों ने हम दोनों को जीवन का एक ऐसा उपहार दिया जो हम जीवन में कभी नहीं भूल सकते।

हमारी विवाह की 25वीं वर्षगांठ हमारे जीवन की एक बहुत सुंदर यादगार रहेगी ।

10 फरवरी को हम नामची गए। यह सिक्किम प्रदेश में पहाड़ी पर चारधाम भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों की एक ही जगह पर बनायी गयी प्रतिकृति है। यहां पर भारत के चारों कोनों में स्थित चार धाम, जैसे रामेश्वरम, द्वारिकादिश, जग्गनाथ पुरी और बद्रीनाथ और पूरे भारतखंड में स्थित 12 ज्योतिर्लिंग शामिल हैं। सिद्धेश्वर धाम के नाम से प्रसिद्ध है। इस स्थल के आकर्षण का शिखर बिन्दु भगवान शिव की ऊँची–लंबी प्रतिमा है। नामची के चारधाम परिसर का केंद्रीय आकर्षण 87 फीट ऊँची शिव मूर्ति है जो पहाड़ी के शिखर पर स्थित है। यहां से शिव भगवान पूरे चारधाम परिसर और उसके चारों ओर की घाटियों की निगरानी करते हैं। यह मूर्ति पहाड़ी के पश्चिमी छोर पर पूर्वी दिशा की ओर मुख किए स्थित है। यह मूर्ति 12 ज्योतिर्लिंगों से घिरी है।यह 12 प्रसिद्ध शिव मंदिर पूरे भारत के धार्मिक भूगोल पर फैले हैं। यहां का हर एक शिवलिंग अपने मूल जगह पर स्थापित शिवलिंग की सटीक प्रतिकृति है।

दार्जिलिंग :

दार्जिलिंग भारत राज्य के पश्चिम बंगाल का एक नगर है। 10 फरवरी को हम शिव मंदिर के दर्शन करने के बाद शाम को दार्जिलिंग के लिए रवाने हुए । वहां उड़ान होटल में ठहरे। 11 फरवरी, 2024 को हम प्रातः 3 बजे उठकर टाइगर हिल्स के लिए रवाना हुए, होटल से 25 मिनट का रास्ता है। वहां सूर्य उदय देखने का नजारा ही कुछ और है। वहां पर रात के 4 बजे से ही लोगो की भीड़ जमा हो जाती हैं। सूर्य की पहली किरण प्रातः 6.42 पर कंचनजंघा पर्वत पर पड़ती है। टाइगर हिल का मुख्य आनंद इस पर चढ़ाई करने में है। हर सुबह पर्यटक इस पर चढ़ाई करते हुए मिल जाएंगे। इसी के पास कंचनजंघा चोटी है। यह विश्व की सबसे ऊंची चोटी है। वर्तमान में कंचनजंघा विश्व की तीसरी सबसे ऊंची चोटी है। कंचनजंघा को सबसे रोमांटिक माउंटेन की उपाधि से नवाजा गया है। इसकी सुंदरता के कारण पर्यटकों ने इसे इस उपाधि से नवाजा है।

उसके बाद हम अपनी टेक्सी में बैठकर दार्जिलिंग में चाय बागान की तरफ गए। जाते वक्त चारों तरफ चाय की खेती। इतना सुन्दर दृश्य बस देखते जाओ। हर बागान में महिलाएं ही काम करती है। दार्जिलिंग में केवल 87 चाय बागान हैं जो दार्जिलिंग पहाड़ियों को कवर करने वाली सात घाटियों में फैले हुए हैं। दार्जिलिंग चाय बागान हर साल लगभग 9.6 मिलियन किलोग्राम चाय का उत्पादन करते हैं। दार्जिलिंग चाय का एक अनूठा स्वाद है जिसका श्रेय इसकी जलवायु, मिट्टी, ढलान, पहाड़ी धुंध और बारिश को दिया जा सकता है। चाय के बागान का मनोहर दृश्य देखने के बाद हमने दार्जिलिंग की चाय का स्वाद भी लिया और 8 किलो चाय भी खरीदी।

दार्जिलिंग की ऊँची पहाड़ियों का सुन्दर नजारा देखने के बाद। हम टेक्सी में बैठकर उड़ान होटल के लिए रवाना हुए। होटल में पहुंचकर दो घंटे आराम किया। रात्री भोजन करने के बाद हम चारों दार्जिलिंग की मार्किट में घूमने निकल पड़े। रात्रि 11 बजे हम घूमते रहे। उसके बाद हम वापस होटल में आ गए। रात को दार्जिलिंग की पहाड़ियों में रोशनी की चमक का दृश्य देखने लायक है।

अगले दिन 12 फरवरी, 2024 को हम प्रातः उठकर, नाश्ता करने के बादे दार्जिलिंग के पहाड़ी रास्तों मे जाती हुई ट्रेन का नजारा देखा, देखकर बड़ा आनंद आया। यहां तक कि जहां हम ठहरे थे वहां सड़क के किनारे भी ट्रेन जाते हुए देखने का पूरा आनंद लिया। अदभुत दृश्य होता है।

11 बजे दार्जिलिंग के होटल उडान से हम बागडोगरा एअरपोर्ट दिल्ली लिए रवाना हुए। दार्जिलिंग से बागडोगरा होटल का रास्त 2.5 घंटे का था। बीच में चाय के बागान का दृश्य भी देखते जा रहे । टेक्सी रोककर बागान में जागकर कई फोटो भी खिंचवाई।

8 फरवरी से 11 फरवरी, 2024 तक बिताये ये दिन पता ही नहीं चला कब बीत गए। आने का मन तो नहीं किया पर सोचा है अगर कभी मौका मिलेगा तो नाथुला अवश्य जाएंगे क्योंकि हमारा पूरा मन नाथुला जाने का था, किन्तु इस यात्रा में हमने नाथुला के दर्शन नहीं किए। इस यात्रा का हमने पूरा आनंद लिया और ये बिताये हुए दिन हमेशा याद रहेंगे। हमारे बच्चों ने हमें बहुत सुन्दर उपहार दिया उसके लिए अपने बच्चों को हृदय से आशीर्वाद दिया। वो जहां भी जाएं वहां हमेशा खुश और सफल रहे।

➢रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वित्त एवं प्रशासन)

तिरुपति बालाजी मंदिर के दर्शनलाभ

मुझे अपने परिवार सहित भगवान तिरूपति बालाजी के मंदिर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां पर जाकर हमने तिरुपति बालाजी के दर्शन किए। यह मंदिर लोगों की श्रद्धा और भक्ति का केंद्र है। इनमें से एक है आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित 'तिरुपति बालाजी मंदिर' यह के प्रमुख और पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है । यह भारत के एक धनवान मंदिर के नाम से भी प्रचलित है। इस मंदिर के मुख्य देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी है जिन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है और वे तिरुमाला पर्वत पर अपनी पत्नी पद्मावती के साथ निवास करते हैं। कह जाता है कि यह वही मंदिर है जहाँ भगवान विष्णु इस कलियुग में निवास करते हैं। तिरुपति बालाजी या श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर हिंदू पौराणिक कथाओं के सबसे महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है।

तिरुपति बालाजी से जुड़ी रहस्यमय बातें : कहा जाता है भगवान वेंकटेश्वर स्वामी की मूर्ति पर बाल लगे हैं जो असली हैं। यह बाल कभी भी उलझते नहीं हैं और हमेशा मुलायम रहते हैं। मान्यता है कि यहां भगवान खुद विराजमान हैं। जब मंदिर के गर्भ गृह में प्रवेश करेंगे तो ऐसा लगेगा कि भगवान श्री वेंकेटेश्वर की मूर्ति गर्भ गृह के मध्य में है। लेकिन आप जैसे ही गर्भगृह के बाहर आएंगे तो चौंक जाएंगे क्योंकि बाहर आकर ऐसा प्रतीत होता है कि भगवान की प्रतिमा दाहिनी तरफ स्थित है। अब यह सिर्फ भ्रम है या कोई भगवान का चमत्कार इसका पता आज तक कोई नहीं लगा पाया है। मान्यता है कि भगवान के इस रूप में मां लक्ष्मी भी समाहित हैं जिसकी वजह से श्री वेंकेटेश्वर स्वामी को स्त्री और पुरुष दोनों के वस्त्र पहनाने की परम्परा है। तिरुपति बाला मंदिर में भगवान वेंकटेश्वर की प्रतिमा अलौकिक है। यह विशेष पत्थर से बनी है। यह प्रतिमा इतनी जीवंत है कि ऐसा प्रतीत होता है जैसे भगवान विष्णु स्वयं यहां विराजमान हैं। भगवान की प्रतिमा को पसीना आता है, पसीने की बूंदें देखी जा सकती हैं। इसलिए मंदिर में तापमान कम रखा जाता है। श्री वेंकेटेश्वर स्वामी के मंदिर से 23 किलोमीटर की दूरी पर एक गांव है जहां गांव वालों के अलावा कोई बाहरी व्यक्ति प्रवेश नहीं कर सकता। इस गांव के लोग बहुत ही अनुशासित हैं और नियमों का पालन कर जीवन व्यतीत करते हैं। मंदिर में चढ़ाया जाने वाले पदार्थ जैसे, फूल, फल, दही, घी, दूध, मक्खन आदि इसी गांव से आते हैं।

गुरुवार को भगवान वेंकेटेश्वर को चंदन का लेप लगाया जाता है जिसके बाद अद्भुत रहस्य सामने आता है। भगवान का श्रृंगार हटाकर स्नान कराकर चंदन का लेप लगाया जाता है और जब इस लेप को हटाया जाता है तो भगवान वेंकेटेश्वर के हृदय में माता लक्ष्मी जी की आकृति दिखाई देती है। श्री वेंकेटेश्वर स्वामी मंदिर में एक दीया हमेशा जलता रहता है और सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इस दीपक में कभी भी तेल या घी नहीं डाला जाता।

यहां तक कि यह भी पता नहीं है कि दीपक को सबसे पहले किसने और कब प्रज्वलित किया था। भगवान वेंकेटेश्वर की प्रतिमा पर पचाई कपूर लगाया जाता है। कहा जाता है कि यह कपूर किसी भी पत्थर पर लगाया जाता है तो कुछ समय में पत्थर में दरारें पड़ जाती हैं। लेकिन भगवान बालाजी की प्रतिमा पर पचाई कपूर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। मंदिर में मुख्य द्वार के दरवाजे पर दाईं तरफ एक छड़ी है। इस छड़ी के बारे में मान्यता है कि बाल्यावस्था में इस छड़ी से ही भगवान वेंकेटेश्वर की पिटाई की गई थी जिसकी वजह से उनकी ठुड्डी पर चोट लग गई थी। तब से आज तक उनकी ठुड्डी पर शुक्रवार को चंदन का लेप लगाया जाता है। ताकि उनका घाव भर जाए।भगवान वेंकेटेश्वर की मूर्ति पर कान लगाकर सुनें तो समुद्र की लहरों की ध्वनि सुनाई देती है। यह भी कहा जाता है कि भगवान की प्रतिमा हमेशा नम रहती है। श्री वेंकटेश्वर मंदिर के अंदर होने वाले शक्तिशाली मंत्रोच्चार से सकारात्मक ऊर्जा निकलती है, जो गर्भगृह से बाहर आने के बाद भी लंबे समय तक आपके साथ बनी रहती है। तिरुपति बालाजी के दर्शन करना अराजकता के बीच शांति खोजने जैसा है।

भगवान तिरुपति बालाजी और माँ पद्मावती का दर्शन करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करके हमने स्वयं को भाग्यशाली समझा। भगवान से प्रार्थना कर सकुशल सपरिवार वापिस आ गए।

ओम नमो वेंकटेशाय। ओम नमो वेंकटेशाय। ओम नमो वेंकटेशाय।

➢रोहित कुमार
निजी सहायक (तकनीकी)

संत का ज्ञान

एक बार गांव में एक बूढ़ा संत आया। उसने गांव के बाहर अपना आसान जमाया। वह बड़ा होशियार फकीर था। वह लोगो को बहुत सी अच्छी अच्छी बातें बतलाता था । थोड़े ही दिनों में वह मशहूर हो गया। सभी लोग उसके पास कुछ न कुछ पूछने को पहुंचते थे। वह सबको अच्छी सीख देता था।

गांव में एक किसान रहता था। उसका नाम रामनाथ था। उसके पास बहुत सी जमीन थी, लेकिन फिर भी रामनाथ सदा गरीब रहता था। उसकी खेती कभी अच्छी नहीं होती थी।

धरे–धीरे रामनाथ पर बहुत सा कर्ज हो गया। रोज महाजन उसे रुपये के लिए तंग करने लगा। लेकिन खेतों में अब भी कुछ पैदा नही होता था। रामनाथ खुद तो खेतों में बहुत कम जाता था। वह सारा काम नौकरो से लेता था। उसके यहाँ दो नौकर थे। वे जैसा चाहते, वैसा करते थे। आखिर महाजन से तंग आ कर रामनाथ ने अपनी आधी जमीन बेच दी। अब आधी जमीन ही उसके पास रह गई। जिन खेतों में बहुत कम पैदावार होती थी वही रामनाथ ने दिए थे। जिस किसान ने उसकी जमीन ली थी वह बड़ा ही मेहनती था। वह अपना सारा काम खुद अपने हाथों से करने की हिम्मत रखता था । जो काम उससे न होता वह मजदूरों से कराता, पर रहता सदा उनके साथ ही था। वह कभी अपना काम मजदूरों के भरोसे नही छोड़ता था। पहली ही फसल में उस किसान ने उन खेतों को इतना अच्छा बना दिया कि उसमें चौगुनी फसल हुई। रामनाथ ने जब यह देखा तो वह अपने भाग्य को कोसने लगा। इधर उस पर और भी कर्ज हो गया और उसको बड़ी चिंता होने लगी।

आखिर एक दिन वह भी उस संत के पास गया। उसने बड़े दुःख के साथ अपने दुर्भाग्य की कहानी फकीर को सुनाई। फकीर ने सुनकर कहा अच्छी बात है, कल हम तुम्हे बातएँग। रामनाथ चला आया। उसी रात फकीर ने गांव में जाकर रामनाथ की दशा के सब कारणों का पता लगा लिया। दूसरे दिन उसने रामनाथ के पहुँचने पर कहा– तुम्हारे भाग्य का भेद सिर्फ 'जाओ और आओ' में है। वह किसान 'आओ' कहता है और तुम 'जाओ' कहते हो। इसी से उसके यहाँ खूब पैदावार होती है, और तुम्हारे यहां कुछ नहीं।

रामनाथ कुछ भी न समझा। तब फकीर ने फिर कहा – तुम खेती का सारा काम मजदूरों पर छोड़ देते हो। तुम उनसे कहते हो – जाओ ऐसा करो, पर खुद न उनके साथ जाते हो, न काम करते हो। पर वह किसान मजदूरों सी कहता है – आओ, खेत में चले' वह उनके साथ–साथ जाता है, और साथ –साथ मेहनत करता है । मजदूर भी उसके डर से खूब मेहनत करते है। तुम्हारे मजदूरों की तरह वे मनमाना काम नही करते। इसलिए अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारे खतो में भी खूब पैदावार हो तो 'जाओ' छोड़कर 'आओ' कि अनुसार चलना सीखो।

रामनाथ ने फकीर की बात मान ली। उस दिन से आलस्य त्याग कर वह अपने खेतों में मजदूरी के साथ कड़ी मेहनत करने लगा। अब उसके उन्ही खेतों में खूब फसल होने लगी।

➢प्राची गुसाईं
कार्यकारी सहायक (पी- III)

किसान की समस्या

सालों पहले गुमथा गांव में रहने वाला एक किसान काफी दुखी था। वह अपनी जीवन की छोटी–छोटी परेशानियों को लेकर उदास रहता था और अपने दुख के बारे में लोगों को बताता फिरता था। एक दिन उसे किसी ने सलाह दी कि तुम गौतम बुद्ध के पास चले जाओ, वे तुम्हारी समस्याओं का कोई–न–कोई हल जरूर निकाल देंगे। उस व्यक्ति की बात सुनते ही दूसरे दिन वह किसान सीधे महात्मा बुद्ध के पास पहुंच गया।

गौतम बुद्ध के पास पहुँचकर उन्हें प्रणाम करते हुए उसने बताया कि मैं एक किसान हूँ और मैं खेती करके जीवनयापन करता हूँ। दरअसल, कई बार हमारी फसल अच्छी होती है, तो कभी बिल्कुल भी नहीं होती। इससे मैं बहुत परेशान हो जाता हूं।मैं यहाँ अपनी समस्याओं का समाधान लेने के लिए आया हूँ। इतना कहने के बाद किसान ने आगे कहा कि मेरी पत्नी है और वो मुझसे बेहद प्रेम करती है, पर कभी–कभी वो मुझे बहुत परेशान करती है। उससे मैं तंग आ गया हूं और कभी–कभी लगता है कि अगर वो मेरे जीवन में नहीं आती, तो मैं कितने अच्छे से रहता। मेरा एक बच्चा भी है। वह है तो काफी अच्छा, पर कई बार मुझे परेशान करता है और मेरा कहना नहीं मानता। उसके ऐसे व्यवहार से मुझे लगता है कि वह मेरा बच्चा नहीं है। इस तरह वह अपनी सारी परेशानियाँ महात्मा बुद्ध को सुनाता रहा और वो उसकी बातें सुनते रहे। जब तक किसान बात कर रहा था, तब तक गौतम बुद्ध एक शब्द भी नहीं बोले। वो बस ध्यान से किसान की ही बातें सुन रहे थे।

अब किसान के पास उन्हें बताने के लिए कुछ भी नहीं बचा और उसका मन काफी हल्का हो गया। महात्मा बुद्ध से सबकुछ कहने के बाद वह उनसे अपनी परेशानियों के समाधान की उम्मीद लगाए बैठा था। काफी देर तक गौतम बुद्ध के जवाब का इंतजार करने के बाद ब्रेसब्र होकर किसान ने ऊँची आवाज में महात्मा बुद्ध से पूछा, 'क्या आप मेरी समस्याओं को लेकर कुछ नहीं कहेंगे?'

तब गौतम बुद्ध बोले,' मैं तुम्हारी किसी तरह से भी मदद नहीं कर सकता।' किसान ने महात्मा बुद्ध से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं की थी। वह उनका जवाब सुनकर हैरान हो गया। उसे अपने कानों पर भरोसा नहीं हो रहा था। उसने भगवान बुद्ध से पूछा कि ये आप क्या बोल रहे हैं? क्या आप मेरी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते? मैंने सुना है कि आप सभी की समस्याओं का समाधान करते हैं, तो मेरी समस्याओं का क्यों नहीं करेंगे?

महात्मा बुद्ध इस बात पर किसान से कहते हैं कि आपके जीवन में जितनी कठिनाइयां हैं, उतनी हर किसी के जीवन में होती है और सबको अपनी छोटी समस्याएं भी बड़ी लगती हैं। आपके जीवन में कोई ऐसी समस्या नहीं है, जो दूसरों को न हो। हर व्यक्ति को अपने जीवन में सुख–दुख का सामना करना पड़ता है। हम चाहे जितनी भी कोशिश कर लें, लेकिन हमारे जीवन में सुख और दुख दोनों आएंगे–ही–आएंगे। कई बार हमारे अपने हमें बेगाने लगने लगते हैं, तो कई बार बेगाने हमें अपने लगने लगते हैं। सभी का जीवन ऐसी समस्याओं से घिरा हुआ है, जिसका कोई समाधान नहीं है।

अगर किसी के जीवन से एक समस्या जाती है, तो दूसरी समस्या आ जाती है। ऐसे में तुम एक समस्या का आज समाधान कर लोगे, तो तुम्हें कल दूसरी समस्या का सामना करना पड़ेगा। यही जीवन का एक अटल सत्य है। बुद्ध की बातें सुनकर किसान को गुस्सा आ जाता है और वह उन्हें बोलता है कि लोग आपको महात्मा कहते हैं। मैंने

लोगों से ये भी सुना है कि आप सबकी परेशानी दूर करते हैं, पर मेरी समस्या का निवारण करने के बजाय आप मुझे फिजूल की बातें बता रहे हैं। मैं आपके पास बहुत उम्मीद लेकर आया था, पर अब मुझे लग रहा है कि आपके पास मेरा आना व्यर्थ हुआ। मैंने जो भी आपके बारे में सुना था, वो सब झूठ है।

महात्मा बुद्ध को इतना कहकर किसान वहाँ से जाने लगता है। तभी उससे भगवान बुद्ध कहते हैं कि तुमने जो समस्याएं बताई हैं, उनका मैं समाधान नहीं कर सकता पर मैं तुम्हारी दूसरी परेशानी का निवारण कर सकता हूँ। बुद्ध की बातें सुनकर किसान हैरान हो गया और बुद्ध से कहता है कि मैंने जो समस्या बताई उसके अलावा मुझे कोई और समस्या नहीं है और है भी तो मुझे उसका ज्ञान क्यों नहीं है।

बुद्ध उनसे कहते हैं कि आपकी समस्या यह है कि आप नहीं चाहते हैं कि आपके जीवन में किसी तरह की समस्या हो। खुद को किसी तरह की समस्या न हो, यह सोच रखना ही दूसरी समस्याओं का कारण बनता है। आपको यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि हर व्यक्ति के जीवन में किसी–न–किसी तरह की समस्या होती है। ये सोचना छोड़ दो कि आप इस दुनिया के सबसे दुखी इंसान हो। आपको अपने आसपास के लोगों को देखना चाहिए, क्योंकि बाकी लोग भी किसी–न–किसी चीज से परेशान और दुखी हैं। जीवन में सुख और दुख आकर ही रहेंगे, उसे कोई नहीं बदल सकता। बस तुम्हें दोनों ही स्थिति में खुद को काबू में रखना होगा। इससे दुख का असर तुम पर ज्यादा नहीं होगा। ऐसे में तुम्हें यह सोचना छोड़ना होगा कि तुम्हारे जीवन में समस्या न हो। तभी तुम हर समस्या का आसानी से सामना कर पाओगे। बुद्ध की बातें सुनकर किसान उनके पैरों पर गिर गया और उनसें माफी मांगने लगा। वह समझ चुका था कि महात्मा बुद्ध उससे क्या कहना चाह रहे हैं।

मित्रों हमें अपनी छोटी–छोटी परेशानियों के लिए किसी से शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि उन परेशानियों का खुद से सामना करना चाहिए। परेशानिया तो सबकी जीवन में होती हैं।

➤गुलशन
निजी सहायक (वि. एवं प्रशा.)

पहाड़ी जीवन

पहाड़ी जनजीवन अपने आप में एक अनूठा और विशेष अनुभव होता है, जो प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक विविधता से भरा होता है। यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु हैं जो पहाड़ी जनजीवन की विशेषताओं को दर्शाते हैं:

1. प्राकृतिक सौंदर्य : पहाड़ी क्षेत्रों में हरियाली, नदी, झरने, और बर्फ से ढके पहाड़ होते हैं। ये प्राकृतिक दृश्य आकर्षक होते हैं और यहाँ की सुंदरता को अनूठा बनाते हैं।
2. कृषि और पशुपालनः पहाड़ी क्षेत्रों में खेती मुख्य रूप से सीढ़ीनुमा होती है। यहाँ लोग धान, गेहूं, मक्का, और सब्जियों की खेती करते हैं। इसके अलावा, पशुपालन भी यहाँ का एक मुख्य व्यवसाय होता है।
3. जलवायुः पहाड़ी क्षेत्रों में जलवायु ठंडी और सुखद होती है। सर्दियों में बर्फबारी और गर्मियों में ठंडी हवाएं यहाँ के जीवन को प्रभावित करती हैं।
4. संस्कृति और परंपराएँः पहाड़ी जनजीवन में कई धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ होती हैं। यहाँ के लोग अपने रीति–रिवाजों और त्यौहारों को बहुत धूमधाम से मनाते हैं। स्थानीय संगीत, नृत्य, और पहनावा भी पहाड़ी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं।
5. भोजनः पहाड़ी क्षेत्रों का भोजन पौष्टिक और स्वादिष्ट होता है। यहाँ के लोग स्थानीय उपज से बने व्यंजन पसंद करते हैं, जैसे कि मंडुआ की रोटी, काफली, चौंसू, और विभिन्न प्रकार की दालें।
6. जीवनशैलीः पहाड़ी क्षेत्रों में जीवनशैली साधारण और सामूहिक होती है। यहाँ के लोग एक दूसरे की मदद करते हैं और मिलजुल कर रहते हैं। समुदाय में सहयोग और समर्थन की भावना प्रबल होती है।
7. पर्यटनः पहाड़ी क्षेत्रों में पर्यटन एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक स्थल, और ट्रेकिंग मार्ग पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।
8. आवागमनः पहाड़ी क्षेत्रों में आवागमन की सुविधा सीमित होती है। यहाँ सड़कों की स्थिति अक्सर खराब होती है और यात्रा कठिन हो सकती है। हालाँकि, सड़क, रोपवे, और ट्रेकिंग मार्ग प्रमुख परिवहन के साधन होते हैं।
9. शिक्षा और स्वास्थ्यः पहाड़ी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सीमित हो सकती है। यहाँ स्कूल और अस्पतालों की संख्या कम होती है और लोग अक्सर दूर–दराज के क्षेत्रों में सेवाओं के लिए यात्रा करते हैं।
10. सामाजिक चुनौतियाँः पहाड़ी क्षेत्रों में भू–स्खलन, बाढ़, और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएँ सामान्य होती हैं, जो यहाँ के जीवन को प्रभावित करती हैं।

पहाड़ी जनजीवन के ये पहलू दर्शाते हैं कि यह कितना विविध और चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन इसकी अपनी एक अनूठी खूबसूरती और आत्मीयता होती है।

➢रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक (तकनीकी)

समय की कीमत

एक बार की बात है, एक गांव में एक बुजूर्ग व्यक्ति रहता था। वह बुजूर्ग व्यक्ति अपने बेटे से बहुत पेरशान था, क्यांकि उसका बेटा बहुत नालायक और कामचोर था और बस गांव में इधर–उधर घूमा करता था। एक दिन उस बुजूर्ग व्यक्ति ने अपने बेटे को सबक सिखाने की सोची। उसने अपने बेटे को अपने पास बुलाया और उससे कहा कि घर के अंदर अलमारी में एक घड़ी रखी हुई है तुम उसे निकालकर लाओ। लड़का घर के अंदर गया और घड़ी को बाहर निकाल लाया, फिर उसके पिताजी ने कहा अब तुम एक काम करो, इस घड़ी को अपने साथ बाजार में लेकर जाओ, और जो लोग भी तुम्हें मिले उनसे इस घड़ी की कीमत पूछना । अब वह लड़का उस घड़ी को लेकर बाजार में चला गया, उसने बाजार में सभी से उस घड़ी की कीमत पूछी। किसी ने उस घड़ी की कीमत पांच सौ कहा, किसी ने हजार, तो किसी ने आठ सौ। सभी ने उस लड़के को उस घड़ी की कीमत अलग–अलग बताई। वह लड़का अपने पिता के पास वापस आया और उसने अपने पिता से कहा, पिताजी सभी लोगों ने इस घड़ी की कीमत अपने हिसाब से अलग–अलग बताई। अब उस बुजूर्ग व्यक्ति ने अपने बेटे से कहा ठीक है । घड़ी को तुम वापस अलमारी में रख दो और जाओ। अब अगले दिन फिर से उसे बुजूर्ग व्यक्ति ने अपने बेटे को अपने पास बुलाया और उसे अलमारी से वो घड़ी लाने को कहा, लड़का फिर जाता है, और अलमारी से घड़ी निकाल कर लाता है। अब उस बुजूर्ग व्यक्ति ने अपने बेटे से कहा कि बेटा जाओ और आज तू इस घड़ी के अंदर जो समय चल रहा है उसकी कीमत पूछ कर आओ। लड़के को समझ नहीं आ रहा था, कि उसके पिताजी उससे क्या करवाना चाह रहे हैं! वह दुखी मन से फिर से घड़ी को बाजार लेकर चला जाता है और लोगो से उस घड़ी के अंदर चल रहे समय की कीमत पूछता है। लोगों को लगता है कि इस लड़के की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। कल यह घड़ी की कीमत पूछने आया और आज समय की! अब लड़का पेरशान हो जाता है और सोचने लगता है कि यह मेरे साथ क्या हो रहा है! तभी वह आखिरी बार एक बूढे आदमी की दुकान पर जाता है। वह बूढा आदमी बहुत व्यस्त था। वह लड़के का सवाल सुनकर समझ गया कि लड़का उससे क्या पूछना चाहता है। उस बूढे आदमी ने समय निकालकर उस लड़के से कहा बेटा यह जो समय है ना जिसकी तुम कीमत पूछ रहे हो, इसकी कोई कीमत नहीं लगा सकता है। तुम करोड़ों रूपये देकर भी अपनी जिंदगी का एक सैकेंड वापस नहीं ला सकते। इसलिए इस समय का सही उपयोग करो। समय की एक अच्छी बात यह है कि तुम अपना समय किस चीज में गुजारते हो। यह तुम्हारे हाथ में होता है, सभी के पास पूरे दिन में चौबीस घंटे होते है। बस यह तुम्हारे हाथ में है कि तुम उस समय में क्या नया और अच्छा कर सकते हो। इसलिए अपने हर पल का हिसाब रखो कि तुम अपना समय कहां खर्च कर रहे हो। उस बूढे आदमी की बात सुनकर उस लड़के की आंखे खुल गई और फिर वह उस घड़ी को लेकर अपने पिताजी के पास गया और उन्हें सारी बात बताई। उस दिन के बाद उस लड़के को समय की सही कीमत का अहसास हो गया और उसकी जिंदगी बदल गई।

शिक्षाः समय अमूल्य है और तुम उसका सदपयोग कर सकते हो, और अपनी मेहनत से बुरे समय को भी अच्छे समय में बदल सकते हो। बस समय की कीमत पहचानना सीखो।

➢**चौधरी ललित मोहन**
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

भक्त और भगवान

एक छोटे से कस्बे में एक ब्राहाण रहता था, जो बहुत संतोषी था। वह संध्या वंदन और पूजा पाठ तथा जाप नियमित रूप से करता था, कभी किसी से कुछ याचना नहीं करता था। उसके पास भगवान श्री कृष्णजी की एक मूर्ति थी । उसे भोग लगाकर ही वह भोजन किया करता था । ब्राह्मण को अपने आप इतना सा ही प्राप्त होता था कि वह रूखी सूखी रोटी खा ले। घी दूध के उसने कभी दर्शन नहीं किये थे और नही इसके लिए उसने कभी चाह की थी । ऐसा करते करते कई वर्ष बीत गये । तब एक दिन भगवान श्री कृष्ण ने उसे स्वप्न में दर्शन दिये और कहा, ब्राह्मण तुम्हारी भक्ति देखकर तो मैं बहुत प्रसन्न हूँ, लेकिन नित्य रूखी सूखी रोटी खाते खाते मेरे पेट में दर्द होने लगा है । अतः कल तुम मुझे चुपडी रोटी देना ।

ब्राह्मण की आँख खुली तो उसने सोचा कि मैंनें आज तक तो अपनी जिन्दगी में किसी से याचना की नहीं । अब घी का प्रबंध कहां से करूं, अंततः उसने सोचा कि जब महाराज ने अपने आप ही मुंह खोलकर कह दिया है तो चलो, एक दिन उनकी बात रखने को अपना ब्रत तोड़ना ही सही । सामने वाले सेठ की हवेली से थोडा सा घी मांग कर ले आता हूँ और आज –आज चुपडी रोटी का भोग लगा दूंगा । उस ब्राह्मण ने कभी किसी चीज के लिए याचना नहीं की थी। इसलिए जब वह घी मांगने गया तो हवेली की मालकिन ने बहुत आदर के साथ उसे घी दिया और अपने आप को धन्य माना। ब्राह्मण ने चुपडी रोटी का भोग लगाया और संतोष माना । रात को फिर भगवान ने स्वप्न में दर्शन दिये और बोले, ब्राह्मण तेरी चुपडी रोटी से मैं प्रसन्न हूँ। लेकिन कल भोग के समय मुझे रोटी के साथ थोड़ा ज्यादा सा ताजा माखन अलग से भी दे तो मैं अधिक प्रसन्न हो जाउंगा।

ब्राह्मण हँसा और बोला, महाराज द्वापर युग को बीते कई हजार वर्ष हो चुके है । कहते है, उन दिनों नन्द

बाबा के यहां हजारों गाएं थी तो भी दूध माखन से आपकी तृप्ति नहीं होती थी। अपने ही घर में यशोदा मैया से लुक छिपकर, चुराकर आप माखन खाया करते थे और इसीलिए आपका नाम माखनचोर पड गया था। इसके अलावा आप अहीर की छोहरियों से भी माखन मांगा करते थे, और वे छोहरिया आपको मनचाहा नाच नचाया करती थी बहुत बार आप लूट –खसोट कर भी माखन खा जाया करते थे। जिसके फलस्वरूप आए दिन यशोदा मैया को ग्वालिनों से उलाहना सुनना पडता था । यशोदा मैया ने तंग आकर आपको एक बार उखल से भी बांध दिया था। लेकिन मालूम होता है कि इतना सब होने पर भी इतने वर्षों के बाद भी आपकी माखन खाने की वह निगोडी आदत गई नहीं । जो हो, मैं आपसे साफ कह देता हूँ कि अगर आपको दूध , दही माखन और घी के मटके चाहिए तो सामने सेठ की यह बडी सी हवेली खडी है, वहां चले जाईए। रूखी सूखी रोटी से संतोष होता हो तो, मेरी कुटिया तैयार है। रोज–रोज आपके लिए घी–माखन मांगकर लाने का काम मुझसे नहीं होगा।

भगवान ने ब्राह्माण के सिर पर हाथ रखा और कहा। तुम्हारी भक्ति से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। रूखी–सूखी रोटी में जितना स्वाद है, वह दूसरे के घी, दूध में कहाँ। तुम्हारी रोटी तो मेरे लिए शबरी के बेर और सुदामा के तन्दुल के बराबर है। तुम निश्चित रहों। मैं ना तो तुम्हारा घर छोडकर जाने वाला हूँ और न ही तुम्हारा हृदय । मैं तो तुम्हारे प्रेम से ऐसा बंध गया हूँ कि चाहूं तो भी न जा सकूं। 'दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घर खायोजी! विदुर की पत्नी द्वारा दिये गये केले के छिलकों के सामने विदुर जी के दिये हुए केले मुझे फीके लगे थे और मैनें विदुर से कहा भी था, वह स्वाद नहीं आवणां।

सारांश – तभी तो कहते है कि भगवान हमेशा भक्त के वश में रहते है सदैव उनके हृदय में वास करते हैं!

➤पवन
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

संघर्ष

घड़ी सुबह के 09 बजा रही थी। हाथ में जल्दी–जल्दी ब्रेड का पीस लिए अनीता ऑफिस जाने के लिए बस स्टाप की तरफ तेज कदमों से चल पडी। उफ्फ, आज भी लेट हो गई तो बॉस की डांट खानी पड़ेगी। बस यही मन में सोचते हुए अनीता बस स्टाप पर खड़ी बस का इंतजार करने लगी। मध्यम वर्ग परिवार मे पली बढी अनीता ने बचपन से ही बहुत मेहनत की थी, मगर उस हालत में भी जैसे स्वाभिमान उसमें कूट–कूट कर भरा था। बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई थी और उसने अपनी पढाई छोटे मोटे काम करके पूरी की। अनीता का सपना तो और पढने का था पर छोटे भाई और बहन की जिम्मेदारी का बोझ अब उसके कंधो पर था। जीवन की चुनौतीयों का सामना करते हुए अनीता ने एक ऑफिस में अच्छी सी नौकरी पा ली । अब वह आत्मनिर्भर थी पर आगे पढ़ने और बढ़ने की ललक कहीं न कहीं उसके मन में हमेशा रहती थी। रोज की तरह एक सुबह अनीता बस स्टाप पर खड़ी थी कि अचानक सड़क पर तेज रफ्तार बस ने कार को अपनी चपेट में ले लिया । कार में बैठें अधेड उम्र के व्यक्ति को काफी चोट आई । लोगों की मदद से उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया । अनीता ने उस व्यक्ति के घर का पता और नंबर लेकर उस व्यक्ति के परिवार से सम्पर्क किया और उन्हें जानकारी दी । शाम को कार्यालय से आते हुए अनीता उस व्यक्ति से मिलने अस्पताल चली गई । कैसी तबियत है आपकी अंकल ?अनीता ने पूछा । अनीता के अपनेपन और अच्छे स्वभाव से वह व्यक्ति बहुत खुश हुआ और उसे ढेर सारा आशीर्वाद दिया । एक–एक करके दिन बीतते जा रहे थे और अनीता की माँ को उसकी शादी की चिंता सता रही थी, पर अनीता ने जैसे मन ही मन अपने भविष्य के साथ समझौता कर लिया था और अपनी इच्छा मार दी थी ।

अनीता ने मेहनत करके भाई को अच्छे मेडीकल कॉलेज में दाखिला करवाया और छोटी बहन की शादी भी कर दी । अनीता के जीवन में संघर्ष जैसे खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था । एक दिन उसे नौकरी से निकाल दिया गया । अब एक बार फिर से उसे उसके सामने जिन्दगी परेशानियां लेकर खडी थी । अपनी बूढी माँ और अपने भविष्य की चिंता उसे फिर सताने लगी । इतना होते हुए भी उसने हिम्मत नहीं हारी । क्योंकि अब उसका भाई डॉक्टर बन चुका था । दोनों माँ बेटी अब अपना सामान पैक करके अपने भाई के घर की ओर चली गई । जैसे ही अनीता ने घंटी बजाई तो किसी महिला ने दरवाजा खोला। ओह, शायद हम लोग गलत पते पर आ गये । यह कहते हुए जैसे ही अनीता और उसकी माँ मुडने लगे तो अंदर से रोहित की आवाज उसकी माँ के कानों में पडी अरे नहीं माँ आप लोग बिल्कुल सहीं पते पर आए हो। ये मेरी पत्नी चारू है । रोहित की पत्नी चारू को देखकर अनीता और उसकी माँ हैरान रह गए । बेटा तूने तो चारू के बारे में कभी कुछ नहीं बताया । अरे माँ बस चारू के पिताजी के कारण जल्दी शादी करनी पड़ी। मैं तो आप लोगों को सब कुछ बताने ही वाला था, कहते हुए रोहित ने अपनी गलती पर पर्दा डाला । अनीता और उसकी माँ के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था, उन्होंने चुप रहना ही सही समझा । कुछ ही दिन बीते थे कि चारू के व्यवहार में बदलाव आना शुरू हो गया । उसे अनीता और उसकी मां एक बोझ लगने लगे थे । एक दिन ऐसा भी आया कि अनीता और उसकी माँ को वापस अपने शहर लौटना पडा । एक बार फिर अनीता के सामने कभी न खत्म होने वाला संघर्ष मुँह खोले खडा था । उसने घर वापस आकर फिर से समाचार पत्र में नौकरी के विज्ञापन देखने शुरू कर दिये । एक दिन विज्ञापन देखकर अनीता किसी कार्यालय में साक्षात्कार देने गई और प्रतीक्षा करने लगी। बैठे बैठे अनीता बस अपनी बारी अपने का इंजतार करते हुए मन ही मन भगवान से अपने चयन के लिए प्रार्थना कर रही थी। अपनी बारी आने पर अनीता अपने दस्तावेजों की फाईल लेकर जैसे ही अंदर गई तो वहां बैठे व्यक्ति को देखकर हैरान रह गई । अरे आप तो वही है ना ? कहते कहते अनीता झिझक कर रुक गई । हाँ बेटी मैं वहीं हूँ । उस दिन अगर तुमने समय पर मुझे अस्पताल न पहुंचाया होता तो शायद मेरी जान ना बच पाती। मैंने तुम्हारा धन्यवाद करने के लिए कई बार तुम्हे ढूंढा पर असफल रहा । परन्तु आज भगवान ने मुझे तुम्हारा ऋण उतारने के लिए तुम्हे मुझसे मिलवा दिया । आज से तुम्हारी नौकरी पक्की कहते हुए उस व्यक्ति ने अनीता के सर पर आशीर्वाद का हाथ रख दिया। अनीता बहुत खुश थी। उसे कार्यालय की तरफ से आने जाने के लिए कार और अच्छा वेतन मिल गया। अनीता ने अपनी माँ को सारी बताई और दोनों बहुत खुश थी । अब अनीता के जीवन में खुशियां फिर से आ गई थी । अनीता को अपने पिता की याद आ रही थी जो हमेशा कहते थे कि परिस्थितियां चाहे जैसी भी हो उनसे नहीं घबराना चाहिए । क्योंकि जीवन मे संघर्ष करना पड़ता है । तभी हमें सफलता मिलती है ।

संघर्ष ही जीवन है और जीवन ही संघर्ष है ।

➢नितिन कुमार
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

बड़प्पन

मायके आयी उमा, माँ को हैरानी से देख रही थी। माँ बड़े ध्यान से जमीन पर अखबार बिछाकर खाना सजा रही थी। दाल, रोटी, सब्जी और रायता। फिर झट से फोटो खींचकर बेटे को व्हाट्सप्प करने लगीं।

"माँ ये खाना खाने से पहले फोटो लेने का क्या शौक हो गया है आपको " "अरे वो जतिन बेचारा, इतनी दूर रह हॉस्टल का खाना ही खा रहा है। कह रहा था की आप रोज लंच और डिनर के वक्त अपने खाने की तस्वीर भेज दिया करो । उसे देख कर हॉस्टल का खाना खाने में आसानी रहती है।"

"क्या माँ लाड–प्यार में बिगाड़ रखा है तुमने उसे। वो कभी बड़ा भी होगा या बस ऐसी फालतू की जिद करने वाला बच्चा ही बना रहेगा !" उमा ने शिकायत की।

फिर उमा ने खाना खाते ही झट से जतिन भाई को फोन लगाया।

"जतिन माँ की ये क्या ड्यूटी लगा रखी है? इतनी दूर से भी माँ को तकलीफ दिए बिना तेरा दिन पूरा नहीं होता क्या ?""अरे नहीं दीदी ऐसा क्यों कह रही हो। मैं क्यों करूंगा माँ को परेशान ?""तो प्यारे भाई ये लंच और डिनर की रोज फोटो क्यों मंगवाते हो ?"बहन की शिकायत सुन जतिन हँस पड़ा। फिर कुछ गंभीर स्वर में बोल पड़ा :"दीदी पापा की मौत , तुम्हारी शादी और मेरे हॉस्टल जाने के बाद अब माँ अकेली ही तो रह गयी हैं। पिछली बार छुट्टियों में घर आया तो कामवाली आंटी ने बताया की वो किसी– किसी दिन कुछ भी नहीं बनाती। चाय के साथ ब्रेड खा लेती हैं या बस खिचड़ी। पूरे दिन अकेले उदास बैठी रहती हैं। तब उन्हें रोज ढंग का खाना खिलवाने का यही तरीका सूझा। मुझे फोटो भेजने के चक्कर में दो टाइम अच्छा खाना बनाती हैं। फिर खा भी लेती हैं और इस व्यस्तता के चलते ज्यादा उदास भी नहीं होती।"जवाब सुन उमा की आँखें छलक आयी। रूँधे गले से बस इतना बोल पायी भाई तू सच में बड़ा हो गया यह तेरा बड़प्पन है।

➤लवली सूदन
कार्यकारी सहायक(पी ।।।)

अंगदान, कार्य महान !

जीवन रक्षक है बड़े, सब हमारे अंग,
दुनिया से रूख्सत होने से पहले तुम।
कर दान तुम इनका, कर जाओ कार्य महान,
ताकि मरने के बाद आये,
यह और किसी के, काम ।
लाखों ऐसे मानव हैं दुनिया में,
नेत्रहीन है, लगाये बैठे आस,
मिल जाये इनको नेत्र दान तो !
हो जाये इनका कल्याण!!
हमारे अंगों का जीवन में !
बहुत ज्यादा महत्व है!!
संख्यक बिन अंगो के !
देखे तड़पते प्राणी हैं!!
अंगदान अहसास बड़ा
अंगदान, कार्य महान !
मानवता के मिसाल की बड़ी ही सुन्दर कहानी है!! बाद मरने के सदा वो जीवित रहते हैं!
अंग प्रत्यारोपण जिनके हो जाते हैं!!
दिल धड़कता है उनका, दूजे के दिल में!
नैन किसी और को उजाला देते हैं!!
करके मानवता का यह कार्य महान !
एक जीव, बचाया और पचास !!
ऐसा पुण्य दान कोई, और जग में नहीं होना!
अपना सब कुछ देके दान,
जीवन और किसी को देना!!

➤दीपांकर कुमरा
कार्यकारी सहायक (पी–।।।)

"आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु हैं"

एक प्रतापी गुरु थे जो अपने सभी शिष्यों से बहुत प्रेम करते थे द्य अपने शिष्यों के हर गुणों और कमियों के बारे में पता कर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करते थे । उनका एक ही मात्र लक्ष्य था कि उनका हर एक शिष्य जीवन के हर पड़ाव पर हिम्मत से आगे बढ़े। उनके सभी शिष्यों में एक शिष्य था जो अत्यंत भोला था । स्वभाव का बड़ा ही कोमल और सरल विचारों वाला था लेकिन वह बहुत ज्यादा आलसी था । आलस के कारण ही उसे कुछ भी पाने का मन नहीं था । वो बिना कर्म के मिलने वाले फल में रूचि रखता था । उसका यह अवगुण गुरु को बहुत परेशान कर रहा था । वे दिन रात अपने उसी शिष्य के विषय में सोच रहे थे ।

एक दिन उन्होंने पारस पत्थर की कहानी अपने सभी शिष्यों को सुनाई । इस पत्थर के बारे में जानने के लिए सबसे अधिक जिज्ञासु वही शिष्य था । यह देख गुरु उसकी मंशा समझ गये । वे समझ गये कि यह आलसी हैं इसलिए उसे इस जादुई पत्थर की लालसा हैं । लेकिन ये मुर्ख यह नहीं जानता कि जो व्यक्ति कर्महीन होता हैं । उसकी सहायता तो स्वयं भगवान् भी नहीं कर सकते और ये तो बस एक साधारण पत्थर हैं । यह सोचते– सोचते गुरु ने सोचा कि यही सही वक्त हैं इस शिष्य को आलसी के अवगुणों से अवगत कराने का । ऐसा सोच गुरु जी ने उस शिष्य को अपनी कुटिया में बुलवाया।

कुछ क्षण बाद, कुटिया के भीतर शिष्य ने प्रवेश किया और गुरु को सिर झुकाकर प्रणाम किया । गुरु ने आशीर्वाद देते हुए कहा –बेटा ! मैंने आज जिस पारस पत्थर की कहानी सुनाई वो पत्थर मेरे पास हैं और तुम मेरे प्रिय शिष्य हो इसलिए मैं वो पत्थर सूर्य उदय से लेकर सूर्यास्त तक के लिए तुम्हे देना चाहता हूँ । तुम उससे जो करना चाहों कर सकते हो । तुम्हे जीतना स्वर्ण चाहिये तुम इस पत्थर से इस दिए गये समय में बना सकते हो । यह सुनकर शिष्य की खुशी का ठिकाना न था । गुरु जी ने उसे प्रातः सूर्योदय होने पर पत्थर देने का कहा । रात भर वह इस पत्थर के बारे में सोचता रहा ।

दुसरे दिन, शिष्य ने गुरु जी से पत्थर लिया और सोचने लगा कि कितना स्वर्ण मेरे जीवन के लिए काफी होगा ?और इसी चिंतन में उसने आधा दिन निकाल दिया । भोजन कर वो अपने कक्ष में आया । उस वक्त भी वह उसी चिंतन में था कि कितना स्वर्ण जीवनव्यापन के लिए पर्याप्त होगा और यह सोचते–सोचते आदतानुसार भोजन के बाद उसकी आँख लग गई और जब खुली तब दिन ढलने को था और गुरूजी के वापस आने का समय हो चूका था । उसे फिर कुछ समझ नहीं आया । इतने में गुरु जी वापस आ गये और उन्होंने पत्थर वापस ले लिया । शिष्य ने बहुत विनती की लेकिन गुरु जी ने एक ना सुनी । तब गुरु जी ने शिष्य को समझाया पुत्र ! आलस्य व्यक्ति की समझ पर लगा ताला हैं । आलसी के कारण तुम इतने महान अवसर का लाभ भी ना उठ सके जो व्यक्ति कर्म से भागता हैं उसकी किस्मत कभी उसका साथ नहीं देती। तुम एक अच्छे शिष्य हो परन्तु तुममे बहुत आलस हैं । जिस दिन तुम इस आलस के चौले को निकाल फेकोगे उस दिन तुम्हारे पास कई पारस के पत्थर होंगे । शिष्य को गुरु की बात समझ आगई और उसने खुद को पूरी तरह बदल दिया । उसे कभी किसी पारस की लालसा नहीं रही ।

"आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु हैं, आलस मनुष्य को खत्म कर देता हैं ।

➢मोहम्मद जावेद
कार्यालय सहायक (पी–।।)

सफलता की कुंजी

सफलता की कुंजी एक ऐसा चिराग है, जिसे हर कोई पाना चाहता है. लेकिन इसके लिए मेहनत, परिश्रम, धैर्य, बल, आत्मविश्वास, जैसी कई चीजें व्यक्ति में होनी चाहिए. सफलता को लेकर कई प्रेरणादायक कहानियां सुनने को मिलती हैं. हमारे आस–पास भी ऐसे कई सफल लोग होते हैं, जिनके संघर्ष की कहानी पढ़कर हम जीवन में सफल बनने के लिए प्रेरित होते हैं।

लेकिन कुछ लोग सफल होने के लिए सही वक्त का इंतजार करते हैं और रुके रह जाते हैं. अगर आप भी ऐसा सोचते हैं तो इस कहानी को जरूर पढ़ें. इस कहानी से यह सीख मिलती है कि सफलता को प्राप्त करने के लिए सही समय या फिर परेशानी के खत्म होने का इंतजार न करें और बुरी परिस्थिति का रोना न रोएं, ऐसा करने से सफलता हाथ से निकल जाएगी और आप वहीं के वहीं रह जाएंगे।

एक व्यक्ति था जिसके जीवन में बचपन से ही समस्याएं हीं समस्याएं थीं। बचपन में ही उसके पिता की मृत्यु हो गई, जिस कारण कम उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारियां उसके ऊपर आ गई। व्यस्क होने के बाद जब उसका विवाह हुआ तब जिम्मेदारियां और परेशानियों दोनों और अधिक बढ़ गई. इसी तरह उसके जीवन में परेशानियां लगी रहती। एक परेशानी के खत्म होते ही दूसरी शुरू हो जाती. इससे परेशान होकर व्यक्ति एक दिन एक प्रसिद्ध संत के पास पहुंचा।

व्यक्ति ने संत से कहा, बाबा मुझे अपना शिष्य बना लें. मैं जीवन से बहुत परेशान हो गया हूं और दुखी हूँ। संत बोले ठीक है, तुम मुझे अपनी परेशानी बताओ। व्यक्ति ने कहा, बाबा मेरे जीवन में बहुत परेशानी है। एक समस्या खत्म नहीं होती और दूसरी शुरू हो जाती है। इस कारण में तनाव और दुखी रहता है और किसी काम में सफलता नहीं मिल पाती है।

बाबा ने कहा कि ठीक है, मैं तुम्हारी परेशानियों का हल बताता हूँ। तुम मेरे साथ चलो। संत व्यक्ति को लेकर एक नदी के पास पहुंचे। संत ने व्यक्ति को नदी के किनारे खड़ा कर दिया और बोले हमें ये नदी पार करनी है। यह कहकर संत वहीं खड़े हो गए व्यक्ति भी संत के साथ वहीं खड़ा हो गया।

थोड़ी देर बाद उसने कहा, बाबा हमें नदी पार करनी है तो हम यहां क्यों खड़े हैं? संत ने कहा हम नदी के सूखने का इंतजार कर रहे हैं। जब नदी सूख जाएगी तो हम इसे आसानी से पार कर सकते है। व्यक्ति बहुत आश्चर्य होकर बोला, बाबा आप ये कैसी बात कर रहे हैं, नदी का पानी कैसे और न जाने कब सूखेगा. हमें नदी को इसी समय पार करना चाहिए।

संत ने कहा, मैं भी तुम्हें यही समझाने के लिए यहां लाया हूं, कि जीवन में समस्याएं तो आती ही रहेंगी. हमें रुकना नहीं चाहिए बल्कि लगातार आगे बढ़ते रहना चाहिए, तभी हम उसे हल कर पाएंगे और आगे बढ़ पाएंगे. व्यक्ति को संत की बात समझ आ गई। उसने अपनी सोच बदली और उसी दिन निश्चय कर लिया कि परिस्थिति कैसी भी हो, समस्या कोई भी हो उसका हल करते हुए सफलता की ओर आगे बढ़ना है।

➢दीपिका दीवान
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (पी–III)

मेरी माँ

आँखों में आँसू, होंठों पर दुआ,
दरवाजे पर इन्तजार करती मेरी माँ,
देखती है स्कूल जाते नन्हें बच्चों में मुझे अब भी।

जानती हूँ कि बहुत दूर हूँ उससे, मैं
फिर भी, घर वापस आते बच्चों में,
ढूँढ़ती हैं उसकी आँखें मुझे, अभी भी, हर रोज

सँवारती है मेरी एक–एक चीज
करती हुई पिता जी से मेरे बचपन की बातें
दरवाजे पर इन्तजार करती मेरी माँ।

सो जाने पर प्यार से सहलाती मेरे सिर को,
छुपाती है अपने हर गम, मुझे देख मुस्कराती
दरवाजे पर इन्तजार करती मेरी माँ।

पत्थर के देवताओं से
कई–कई दिन भूखी–प्यासी रहकर भी
माँगती है मेरी लम्बी उम्र के लिए दुआ मेरी माँ।

आसमान से भी ज्यादा अपनी बाहें फैलाए
करती है मुझे प्यार,
सागर से भी प्यारी आँसू छलकाती
दरवाजें पर इन्तजार करती मेरी माँ।

➢सेंटी एंटोनी
सहायक प्रबंधक (पी–।।।)

क्यूँ होता है, ऐसा.....?

जाते जाते वो अपने जाने का गम दे गये...
सब खुशी ले गये रोने का मौसम दे गये...
ढूंढती है निगाहें पर अब वो कहीं दिखते नहीं...
अपने होने का वो मुझे कैसा भ्रम सा दे गये...
मुझे मेरे पापा की सूरत याद आती है...
वो तो ना रहे अपनी यादों का सितम दे गये...
एक अजीब सा सन्नाटा है आज कल मेरे घर में...
घर की चारों दिवार को उदासी का पेगाम दे गये...
बदल गयी है अब तासीर, जिन्दगी की...
तुम क्या गये आंखो में आंसुओं का सैलाब दे गए।

➢तन्वी सक्सेना
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

श्री जगन्नाथ पुरी यात्रा वृत्तांत

हाल में श्री जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा शुरू हुई है । हिंदू धर्म में जगन्नाथ रथ यात्रा का विशेष महत्व है। उड़ीसा के पुरी में जगन्नाथ मंदिर से यह रथ यात्रा की शुरुआत होती है। हर साल आषाढ़ महीने की शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को रथ यात्रा शुरू की जाती है। इस तिथि को भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन देवी सुभद्रा के साथ 9 दिनों की रथ यात्रा पर निकलते हैं और सोभाग्य से मुझे श्री जगन्नाथ पुरी जाने का मौका प्राप्त हुआ । हमारी पुरी जाने की योजना करीब महीना भर पहले से ही तय थी। जिसे सब लोगों ने इतना पसंद किया कि हमारे इस कारवां में मेरे रेश्तेदार भी शामिल हो गए । मैं और मेरा परिवार भगवान श्री जगन्नाथ जी की धरती जगन्नाथ पुरी जाने के लिए काफी रोमांचित थे । हिन्दू धर्मग्रंथों में जिस चार धाम की चर्चा हुई है, उसमें बद्रीनाथ, द्वारिकाधीश, रामेश्वरम् के अलावे एक धाम जगन्नाथ पुरी भी है।

पुरी का सबसे पहले उल्लेख महाभारत के वनपर्व में मिलता है। इसके बाद कूर्म पुराण, नारद पुराण, पद्मम् पुराण में भी इस जगह की चर्चा हुई है। लोगों का ऐसा मानना है कि भगवान विष्णु जब अपने चारों धाम की यात्रा पर निकलते हैं तो हिमालय पर बने बद्रीनाथ धाम में स्नान करते हैं। पश्चिम स्थित गुजरात में वस्त्र धारण करते हैं, ओड़िसा के पुरी में भोजन करते हैं और फिर दक्षिण में रामेश्वरम में जाकर सो जाते हैं ।

दिल्ली से पुरी जाने के लिए हमारा रिजर्वेशन पुर्सोतम एक्सप्रेस में था। ट्रेन दिल्ली से रात 9.40 में चली और तीसरे दिन सुबह 5 बजे हम लोग पुरी में थे । पुरी स्टेशन पर उतरते ही सबसे पहले संस्कृत मठ में गए जो मंदिर परिसर से केवल एक कि.मी. की दूरी पर ही था। जहां स्नान कर हम लोग भगवान श्री जगन्नाथ जी के मंदिर की ओर निकल पड़े ।

इस मंदिर के निर्माण के संदर्भ में कहा जाता है कि इसे मालवा नरेश इन्द्रद्युम्न ने बनवाया था । भगवान जगन्नाथ ने सपने में आकर उन्हें दर्शन दिया और कहा कि पुरी में दारु पेड़ से मूर्ति का निर्माण करें. लकड़ी से भगवान की प्रतिमा बनाने के लिए खुद भगवन विष्णु और विश्वकर्मा मूर्तिकार की वेश में आये थे। दोनों ने राजा के सामने ये शर्त रखी कि जब तक मूर्ति बन नहीं जाता तब तक उन्हें कमरे से बाहर रहना होगा. शर्त के अनुसार राजा कमरे के बाहर ही रहे। इस दौरान करीब एक महीना बीत गया पर मूर्ति बनने की कोई खबर अन्दर से उन्हें नहीं मिली, जिसके बाद राजा अपना वादा तोड़ कर कमरे के अन्दर चले गए। लेकिन उस वक्त तक मूर्ति के हाथ का निर्माण नहीं हुआ था. मूर्तिकार ने उन्हें बिना हाथ वाली मूर्ति देते हुए उसकी पूजा करने को कहा. जिसके बाद उसी अवस्था में राजा ने भगवान जगन्नाथ, बलराम और सुभद्रा की मूर्तियों की स्थापना मंदिर में की।

करीब 192 फुट ऊंचे शिखर वाले इस मंदिर का निर्माण बारहवीं सदी में हुआ था। इस भव्य मंदिर के शिखर पर भगवन विष्णु के सुदर्शन चक्र के प्रतीक के रूप में अष्टधातु से निर्मित एक चक्र लगा है। हर दिन चक्र के पास बने खंभे में अलग अलग तरह का ध्वज लगाया जाता है। यह मंदिर चारों ओर से 20 मी ऊंची दीवार से घिरा है, जिसके अन्दर मुख्य मंदिर के अलावा कई छोटे बड़े मंदिर भी बने है। हालांकि हर मंदिर की तरह यहां भी भगवान जगन्नाथ अपने भाई बलराम और बहन सुभद्रा के साथ में हैं। मन्दिर में बहुत भीड़ थी इसलिए मठ वाले ने हम लोगों के साथ एक पंडा को नियुक्त कर दिया जिसने हमे मंदिर में दर्शन करवाए। हमें पुरी जाने के बाद एक और आश्चर्यजनक बात पता चली कि, हिन्दू मान्यता के अनुसार एकादशी पर चावल का उपयोग वर्जित है परन्तु यहाँ पर प्रतिदिन चावल का उपयोग भोग में किया जाता है। चाहे एकादशी भी तो भी चावल के उपयोग पर कोई प्रतिबन्ध नही है । कहा जाता है कि श्री जगन्नाथ पुरी में एकादशी माता को कैदी बना रखा है । कहा जाता है कि एकादशी माता ने महाप्रसाद का निरादर कर दिया था। जिसके दंड स्वरूप भगवान विष्णु जी ने उन्हे बंधक बनाकर उल्टा लटका रखा है । भगवान विष्णु ने कहा था कि मेरा प्रसाद मुझसे भी बड़ा है, जो भी व्यक्ति यहां आकर मेरे दर्शन करेगा उसे,

महाप्रसाद ग्रहण करना आवश्यक है । इस मंदिर के दक्षिण पूर्व में स्थित रसोई भी काफी प्रसिद्ध है। हमारे साथ जो पंडे थे परिसर में स्थित सभी भगवानों के दर्शन करवा कर वो हमलोगों को उस रसोई की ओर ले गए। रसोई के बाहर दीवारों में बने कई छोटे छोटे सुराख से अन्दर का दृश्य देखा। इस रसोई में लकड़ी के इस्तेमाल से मिटटी के बर्तन में भगवान के लिए 56 प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं. जिसे महाप्रसाद कहते है. वहीं मंदिर में गंगा–यमुना नाम के दो कुएं हैं, ।इसके पानी से ही महाप्रसाद तैयार किया जाता है। अंदर मिटटी की हांडी एक पर एक चढ़ी थी और सैकड़ों लोग पसीने से लथपथ अपने अपने काम में व्यस्त थे। मंदिर में प्रतिदिन एक लाख लोगों के लिए भोजन बनाया जा सकता है। हमें बताया गया कि यहां जो भोग तैयार हो रहा वो पूरी तरह शाकाहारी होता है, इसमें प्याज–लहसुन का भी प्रयोग नहीं होता।

आश्चर्य यह देख कर हुआ कि दोपहर में जब भगवान को भोग लग गया उसके बाद रसोई में पके भोजन की मंदिर परिसर में ही बोली लगनी शुरू हो गयी थी। लोग मिट्टी के छोटे बड़े हांडियों में चावल, दाल, सब्जी रख कर जोर जोर से चिल्ला कर उसे बेच रहे थे। जिसे खरीदने के लिए लोगों की भीड़ लगी थी । मंदिर में केले के पत्तों पर महाप्रसाद का भोग ग्रहण कर हमलोग मंदिर से बाहर निकल ही रहे थे तो हमें बताया गया कि वहां दो रंग के पत्थर मंदिर परिसर में लगे हुए है एक काला एवं भूरा । उन पथ्थरों की मान्यता यह है कि वे दोनों स्वर्ग एवम नरक के प्रतीक हैं भूरे को स्वर्ग तथा काले को नरक का प्रतीक माना गया है ।

इसके बाद हम गुंडिचा माता मंदिर के दर्शन करने गए, जिन्हें श्री जगन्नाथ भगवान की मौसी कहा जाता हैं, मान्यता है कि जगन्नाथ रथ यात्रा के दौरान भगवान यहां सात दिनों तक ठहरते है । साथ ही मान्यता यह भी है कि रथ यात्रा में जगन्नाथ बलभद्र एवं सुभद्रा गुंडिचा मंदिर आते जहां उनकी मौसी उन्हें पीठादो, रसगुल्ला खिला के स्वागत करती है । मंदिर से लौटने के बाद हमलोगों ने कुछ देर मठ में वातानुकूलित कमरे में बिताया, फिर तैयार होकर पैदल ही निकल पड़े समुंद्री लहरों में गोते लगाने। मठ से श्री जगन्नाथ मंदिर और पुरी बीच दोनों ही नजदीक थे। यहाँ जगन्नाथ मंदिर के नजदीक सड़क के दोनों तरफ एक कतार में कई दुकानें सजी थी। जहां तरह तरह की चीजें बिक रही थी। पुरी के हस्त निर्मित वस्तु दुनिया भर में प्रसिद्ध है। इनमें भगवान जगन्नाथ की मूर्ति, लकड़ी पर नक्काशी, पत्थर से निर्मित वस्तुएं और सीप के इस्तेमाल से एक से बढ़कर एक कलात्मक चीजें शामिल है। साथ ही बाजारों में हर डिजाईन के शंख भी मिल रहे थे। बाजार में सामानों की खरीदारी करते वक्त अन्य चीजों के अलावा हम लोगों ने भी एक–एक शंख खरीदा।

खरीदारी समाप्त कर जब वापस मठ जाने के लिए मुड़े तो देखा चौराहे पर मंदिर के सामने भगवान जगन्नाथ भगवान का रथ खड़ा था। जाते–जाते एक बार फिर हमने बाहर से ही भगवान को प्रणाम किया और फिर कई फोटो लेकर पुरी के इन लम्हों को यादगार बनाया ।

➢शिपी गुप्ता
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

शब्दावली

1.	Abrasion	अपघर्षण
2.	Additive	योजक
3.	Adhesion	आसंजन
4.	Axle Loading	धुरी भारण
5.	Base Pavement	आधार कुट्टिम
6.	Binder	बंधक, योजक
7.	Boulders	गोलाश्म, उपल
8.	Calibration	अंशांकन, अंशशोधन
9.	Catchment area	जलग्राही/आवाह क्षेत्र
10.	Cement Grout	सीमेंट का पतला मसाला
11.	Clinker	अपशिष्ट राख, क्लिंकर
12.	Clay	मृत्तिका, चिकनी मिट्टी
13.	Coefficient of Consolidation	संपिंडन गुणांक
14.	Compaction	संहनन
15.	Congestion	जमाव, संकुलता
16.	Deflection	विक्षेप
17.	Denuded Slop	अनाच्छादित ढाल
18.	Digital	अंकीय
19.	Direct Shear Test	प्रत्यक्ष अपरूपण परीक्षण
20.	Drainage	अपवाहिका,
21.	Embankment	तटबंध
22.	Epicentre	अधिकेन्द्र
23.	Expressway	द्रुतमार्ग
24.	Filler	पूरक
25.	Fine Grained	सूक्ष्म कण
26.	Feasibility	व्यवहार्यता
27.	Geophysical Test	भूभौतिक परीक्षण
28.	Girder	धरण, गर्डर
29.	Gradient	प्रवणता, ढाल
30.	Hot Mix	गर्म मिश्रण
31.	Hydrometer	उत्प्लन, घनमापी
32.	Hinge Joint	हिन्ज संधि
33.	Hydrated Lime	जलयोजित चूना
34.	Intersections	चौराह
35.	Infrastructure	अवसंरचना
36.	Indirect Tensile Strength	अप्रत्यक्ष तनन सामर्थ्य
37.	Joint	संधि
38.	Kerb	उपांत, कर्ब
39.	Landlide	भूस्खलन
40.	Lateral	पार्श्व, पार्श्विक
41.	Layout	अभिन्यास
42	Load Test	भार परीक्षण
43.	Moisture	आर्द्रता, नमी
44.	Monitoring	अनुवीक्षण
45.	Natural Rock Asphalt	प्राकृतिक शैल एस्फाल्ट
46.	Overpass	उपरिपारक
47.	Overtaking	अभिलंगन
48.	Parameter	प्राचल
49.	Plastic Clay	सुघटय, मृत्तिका
50.	Pore Water Pressure	रंध्र जल दाब
51.	Prestressed	पूर्व प्रतिबलित कंक्रीट
52.	Rigid Pavement	दृढ़ कुट्टिटूम
53.	Sub&Grade	अधःस्तर
54.	Super Structures	अधिसंरचना
55.	Sustainable Transport	वहनीय परिवहन
56.	Tri-Axial Tes	त्रिअक्षीय परीक्षण
57.	Weathering	अपक्षय, अपक्षयण
58.	Wearing Course	निघर्षण स्तर
59.	Widening	विस्तारण
60.	Sorkability	कार्य व्यवहार्यता

➢भूपाल सिंह बिष्ट
सहायक प्रबंधक (वित्त एवं प्रशा.)
➢हिशांत कुमार गोयल
कार्यालय सहायक (वित्त एवं प्रशा.)

समय की महत्ता

एक गांव में एक किसान रहता था। उसके दो पुत्र थे। एक का नाम मनोहर और दूसरे का नाम गणेश था। किसान खेतों में काम करके अपना तथा अपने परिवार का भरण–पोषण करता था। मनोहर अपने पिता की हर काम में मदद करता था और समय पर प्रत्येक काम कर लेता था। लेकिन गणेश को काम को टालने की आदत थी। इसकी इस आदत से किसान परेशान हो गया था क्योकि इसकी वजह से बहुत नुकसान हो रहा था। बाद में किसान को खुद ही भोगना पड़ता था। एक दिन किसान ने गणेश को समझाते हुए कहा – अपनी आदतों को सुधार लो बेटा नहीं तो एक दिन पछताना पड़ेगा। लेकिन गणेश पर अपने पिता की बातों का कोई असर नहीं पड़ा। किसान ने इसकी आदत सुधारने के लिए एक तरकीब निकाली। एक दिन किसान ने अपनी सारी जमीन और घर दोनों लड़को में बाट दिया और कहा – अब से दोनों अलग–अलग रहो और अपना–अपना काम खुद करके कमाओ और खाओ। इस पर मनोहर ने कहा?

पिता जी इसकी क्या जरुरत थी? पिता – तुम चुप रहो। जाओ अपना–अपना काम करो। कोई किसी की मदद नहीं करेगा चाहे कोई कितना ही परेशान क्यों न हो। उस दिन के बाद, दोनों अलग–अलग रहने लगे। कुछ अनाज भी दोनों में बाँट दिया गया था। इसलिए गणेश सोचा कि अभी तीन चार माह चल जायेगा कुछ समय बाद काम करना शुरू करुंगा। इधर मनोहर अगले फसल को लगाने के लिए खेतों को तैयार करने लगा। लेकिन गणेश ने कल पे टाल दिया। ऐसा करते–करते मनोहर नया फसल उपजा के अनाज जमा कर लिया। उधर गणेश कल शुरू करुंगा ऐसा करते–करते टालता रहा। कुछ समय बाद बहुत जोरो की बारिश होने लगी जो दो तीन दिन तक होती रही। इतनी बारिश होने के कारण सब खेतों में पानी भर चुका था। गणेश का अनाज अब खत्म हो चुका था। अब गणेश खेतो में कुछ भी उगा नहीं सकता था। अब गणेश को चिंता होने लगी कि मैं क्या खाऊंगा? अनाज अपने भाई से मांग भी नहीं सकता था। क्योंकि पिता ने मना किया था। गांव वाले इसके इस व्यवहार के लिए कोई मदद करेंगे भी या नहीं।गणेश अब भारी मुसीबत में पड़ चुका था। उसको अपने पिता की बात याद आने लगी। उसे बहुत पछतावा होने लगा कि अगर पिता जी कि बात मान लेता तो आज मुझे भूखा नहीं रहना पड़ता। उसे दो–तीन दिन तक भूखा रहना पड़ा। तीसरे दिन गणेश अपने पिता से मिलने आया और कहा – मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई, जो आपकी बात नहीं मानी। आज के बाद कभी भी कोई काम कल पे नहीं छोड़ूंगा। पिता की समझ में आ गया कि इसको अपने गलती का एहसास हो गया है। इसलिए उस दिन के बाद सब साथ में रहने लगे। अब गणेश ने भी शिकायत का मौका नहीं दिया।

(सुनील कुमार)
आईटी

उत्तराखंड की एक खास झलक

भारत माँ की गोद में है एक राज्य उत्तराखंड,
हिमालय की खूबसूरती व गंगा यमुना का आंचल है उत्तराखंड,
भारत देश में देवभूमि के नाम से प्रसिद्ध है उत्तराखंड,
मेरी जन्म भूमि व मातृ भूमि दोनों ही है उत्तराखंड।

कोई झंगोरा चीणा, कोंणी उत्तराखंड के खाद्यान है,
ये थाती है वीर जवानों की आंदोलनकारी की जननी है,
ढोल, लगाडे, दमुआ, हुडका उत्तराखंड के है सुरताल,
रासों, तांदी, झुमैलो, छपेली से झूमता है सारा संसार ।

बसंत फुलदेई, कुंभा हरेला, उत्तराखंड के हैं ये त्यौहार,
दूर–दूर से आते हैं, लोग नंदा जात व हरि के हरिद्वार,
सुमन केसरी, जीतू माधो वीरों की थात है उत्तराखंड,
जिया रानी, तीलू रौतेली और गौरा पर गर्वित है उत्तराखंड।

ठंडी–ठंडी बर्फीली हवाओं से झूता है उत्तराखंड,
फथोली, बुरांश व फूलों की घाटी से महकता है उत्तराखंड,
हरियाली और शांति का प्रतीक है उत्तराखंड,
खूबसूरती के नजारों से प्राकृतिक
सौंदर्य से सुशोभित है उत्तराखंड।

चार धाम, पंच केदार, पंच प्रयाग से प्रसिद्ध है उत्तराखंड,
ऋषिकेश, हरिद्वार , श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमाण है उत्तराखंड,
लोक आचार की भावना को प्रकट करता है उत्तराखंड।

लोगों की सादगी और भोलेपन में साफ झलकता है उत्तराखंड,
मुसाफिरों के दिलों में बस जाता है हमारा उत्तराखंड,
यहाँ पर रहने वाले लोगों के दिलों में राज करता है उत्तराखंड,
सीधे–साधे लोग यहां के, सीधी सरल इनकी भाषा है,
पहचान न हो चाहे, फिर भी रखते सबसे नाता है,
यह है हमारा अपना उत्तराखण्ड।

➢प्रदीप सिंह
ऑफिस बॉय (पी–।।)

परिवार की एकता

एक बार एक सुनार से लक्ष्मी जी रूठ गई । उन्होंने जाते वक्त सुनार से बोला मैं जा रही हूँ और मेरी जगह नुकसान (हानि) आ रहा है, तैयार हो जाओ। लेकिन मै तुम्हे अंतिम भेट जरूर देना चाहती हूँ। मांगो जो भी इच्छा हो। सुनार बहुत समझदार था। उसने विनती की कि नुकसान आए तो आने दो लेकिन वह मेरे परिवार में आपसी प्रेम बना रहे बस मेरी यही इच्छा है। लक्ष्मी जी ने तथास्तु कहा और चली गई। कुछ दिन के बाद सुनार की सबसे छोटी बहू खिचड़ी बना रही थी। उसने नमक आदि डाला दिया और अन्य काम करने लगी। इसके बाद दूसरी बहू आई और उसने भी बिना चखे नमक डाला दिया और चली गई। इसी प्रकार तीसरी, चौथी बहुएं आई और नमक डालकर चली गई । फिर उनकी सास ने भी ऐसा ही किया। शाम को सबसे पहले सुनार आया। जैसे ही पहला निवाला मुँह में लिया,पता चला कि खिचड़ी में बहुत ज्यादा नमक है। लेकिन इससे वह समझ गया कि नुकसान आ चुका है। चुपचाप खिचड़ी खाई और चला गया। इसके बाद बड़ा बेटा का नम्बर आया। पहला निवाला मुँह में लिया। पूछा पिता जी ने खाना खा लिया क्या कहा उन्होंने ?
सभी ने उत्तर दिया– "हाँ खा लिया, कुछ नही बोले।"
अब लड़के ने सोचा जब पिता जी ने ही कुछ नही बोला तो मै भी चुपचाप खा लेता हूँ।
इस प्रकार घर के अन्य सदस्य एक –एक आए। पहले वालों के बारे में पूछा और चुपचाप खाना खा कर चले गए। रात को नुकसान (हानि) हाथ जोड़कर सुनार से कहने लगा – "मै जा रहा हूँ।"
सुनार ने पूछा – क्यों ? तब नुकसान (हानि) कहता है, "आप लोग एक किलो तो नमक खा गए" लेकिन बिलकुल भी झगड़ा नही हुआ। मेरा यहाँ कोई काम नहीं।"

सीख

झगड़ा कमजोरी, हानि, नुकसान की पहचान है।
इसलिए रामचरित मानस में भी एक प्रसंग में कहा है :

जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निदाना।।
जहाँ प्रेम है, वहाँ लक्ष्मी का वास है।
सदा प्यार, प्रेम बांटते रहे। छोटे –बड़े का सम्मान करें।
जो बड़े हैं, वो बड़े ही रहेंगे।
चाहे आपकी कमाई उसकी कमाई से ज्यादा हो।

परिवार की एकता और प्यार ही खुशी की सबसे बड़ी पूंजी है।मिल– जुल कर रहे । एक दूसरे के प्रति प्रेम सौहार्द बनाए रखें।

➢संजय चौहान
संदेशवाहक

अनमोल वचन

राजा विजयभान एक बड़े सम्राज्य का राजा था। राजा को बड़ी मन्नतो के बाद अपनी रानी से एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी। राजा अपने राजकुमार से अत्यधिक प्रेम करते थे। उसकी हर जिद और इच्छा की पूर्ति करते थे। राजकुमार को घुड़सवारी में बड़ा आनंद आता था। लेकिन राजा को यह पता नहीं था की उनके जीवन में ऐसा कुछ होने वाला है, उनका एकलौता 10 वर्षीय पुत्र, घुड़सवारी करते वक्त अपने प्राण गवां बैठा। एक दिन घुड़सवारी करते वक्त एक दुर्घटना में उसके प्राण चले गये। ढलान पर फिसलन वाली जगह पर घोड़ा अपना संतुलन खो बैठा उस पर बैठा नन्हा राजकुमार गिर कर एक पत्थर से टकारा गया, और जीवन लीला समाप्त हो गई। राजा को इस घटना से गहरा आघात और क्रोध आया, राजा इस घड़ी में जैसे राजधर्म भूल गया। उसने उस घोड़े और उसके प्रशिक्षक को भी नहीं छोड़ा दोनों को मृत्यु दंड दे दिया। राजा यहाँ तक भी नहीं रुका इसके बाद राजा को सभी चार पैर वाले पशुओं से घृणा हो गई। उसने राज्य में सभी चार पैर वाले पशुओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसके राज्य में अब भी बैल, गाय, घोड़ा, गधा इत्यादि कुछ भी नहीं रख सकते थे। जो भी इनका प्रयोग करते पाया गया उसे भी मृत्यु दी जायेगी। राजा अपनी एकलौती संतान के जानें से बहुत निराश था उसने खुद को राजमहल में कैद कर लिया था। राज्य में प्रतिबन्ध के कारण प्रजा का बुरा हाल था। दूध दही का अभाव हो गया बैल गाड़ी घोड़ा और गधा गाड़ी कीं जगह मनुष्य गाड़ी का प्रयोग हो रहा था। पशुओ के ना होने से कई लोगों की जीविका चली गई थी। आमदनी का साधन खत्म हो गया था। देखते ही देखते 9 माह बीत गये लेकिन राजा उस संताप में था। प्रजा दुखी कई निर्धन हो गये भूख से कई जानें चली गई। राज्य की प्रजा चिंता में ही डूबी रहती । उन्हें कोई रास्ता दिखाई ही नहीं दे रहा था। तभी एक साधु राज्य से गुजरते हुए आये तो लोगों नें उनके आगे विनती कीं और उन्हें इस समस्या से निकालने का अनुरोध किया। उन्हें लोगों कीं पीड़ा दिखाई दी, इसके पीछे प्रतिबन्ध का कारण भी पता चला। साधु नें राजा से मिलने का निर्णय किया। वे राजमहल गये और राजा से मिलने को कहा. राजा किसी से भेट नहीं कर रहें थे। इसलिये राजा मिलने से इन्कार कर दिया। राज अभी दुखी है। उस साधु नें कहा की में उनके पुत्र के विषय में ही उनसे कुछ चर्चा करने आया हूँ। राजा यह सुनकर उनके सामने उपस्थित हुआ। राजा नें उन्हें प्रमाण कर कहा कि आप क्या बात करना चाहते है। उन्होंने कहा कि, हे राजन आपनें गलत ही पशुओ पर प्रतिबन्ध लगा दिया। आपके पुत्र कीं मृत्यु का कुछ और कारण है। राजा को लगा ये पहुँचे हुऐ लगते है उसने विचार किया और कहा हमें बताइए ऐसा क्या है जो आप जानते है और मैं नहीं। उन्होंने कहा जल..। आप जल पर प्रतिबन्ध लगाइये आपके राज्य में कोई जल का प्रयोग नहीं करेगा और ना ही वर्षा होंगी ऐसा प्रतिबन्ध लगाना सही है। राजा बोला आप क्या बोल है आप संन्यासी होकर एक बाप कीं पीड़ा के साथ खेल रहें है। साधु बोलें में सच बोल रहा हूँ। घोड़ा अपने आप नहीं फिसला वहाँ फिसलन थी, वहाँ आप भी जाकर भागेंगे तो गिरेंगे, फिर घोड़े का क्या दोष। राजा सोच में पड़ गया। तुमने उस घोड़े के और उसके प्रशिक्षण के प्राण ले लिये। पर तुमने अपने प्राण नहीं लिये जबकि घोड़ा और उसके प्रशिक्षण देने वाले को तुम ही यहाँ लाये थे। वो बहुत गहराई से देखा जाये तो असली दोषी तो तुम हो। ना तुम उन्हें यहाँ लाते ना तुम्हारा पुत्र प्राण गवाता। राजा तुम्हे सबसे पहले अपने आप को दंड देना था। क्या वर्षा पर प्रतिबंध लगा सकते हो। अगर उस घटना की जड़ में जाओगे तो कुछ ओर ही कारण तुम्हारे समक्ष आयेंगे। तुम राजा हो और राजा का पहला धर्म प्रजा पालन है। तुम्हारी संतान का तुम्हे इतना दुख है। जन्म और मरण तो प्रकृति का नियम है तुम्हारे पुत्र के साथ हुआ वो एक दुर्घटना थी। लेकिन तुम जो कर रहें हो वो पाप है। राजा, साधु के वचन सुनकर फूट फूट कर रोया। साधु नें उसे सांत्वना दी और कहा उठो हम सब एक उस परमात्मा कीं व्यवस्था है। इसे उसी तरह रहने दो। पेड़ पर एक पत्ता भी हरा रहता है फिर सूख कर गिर जाता है।बहुत हुआ राजन अब विलम्ब मत करो अपनी प्रजा का पालन करो अपना धर्म निभाओ । एक बाप अपने पुत्र को ना बचा सका लेकिन एक राजा ना जानें कितने दूसरों पुत्रो को खुश रख सकता है। व्यक्ति को वो जहाँ परमात्मा का नाम लेकर प्रसन्न मन से अपना कर्म करते रहना ही उसका धर्म है। अपना धर्म निभाना है ओर उसके दिये इस अमूल्य जीवन को जीना है। राजा की आँखे खुल गई। अपने इस कृतय के कारण उसके राज्य में जो हानि हुई थी। उसे पूरा करने में लग गया।

➢अनिल कुमार
(प्रेषक)

महाभारत चक्रव्यूह

विश्व का सबसे बड़ा युद्ध था, महाभारत कुरुक्षेत्र का युद्ध। इतिहास में इतना भयंकर युद्ध केवल एक ही बार हुआ । अनुमान है कि इस युद्ध में परमाणु हथियारों का भी उपयोग किया गया था। (महाभारत काल में भी 'परमाणु बम' का इस्तेमाल किया गया था और वैज्ञानिकों को इस बात का प्रमाण भी मिल चुका है। परमाणु बम का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिक जूलियस रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने अपनी रिसर्च में इस बात का खुलासा किया है कि परमाणु बम जैसे विनाशकारी हथियारों का इस्तेमाल महाभारत काल में भी हो चुका है। दरअसल, रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने गीता और महाभारत का गहराई से अध्ययन किया था। रॉबर्ट ओपेनहाइमर ने महाभारत में बताए गए ब्रह्मास्त्र की मारक क्षमता पर रिसर्च किया था। उनके इस रिसर्च मिशन का नाम था ट्रिनिटी यानी त्रिदेव। वर्ष 1939 से 1945 के बीच रॉबर्ट ओपेनहाइमर और अन्य वैज्ञानिकों की एक टीम ने रिसर्च किया था। इस रिसर्च के बाद ही वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर निकले थे कि महाभारत में जिस ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया गया था, वो आज के परमाणु हथियार के समान ही शक्तिशाली था।

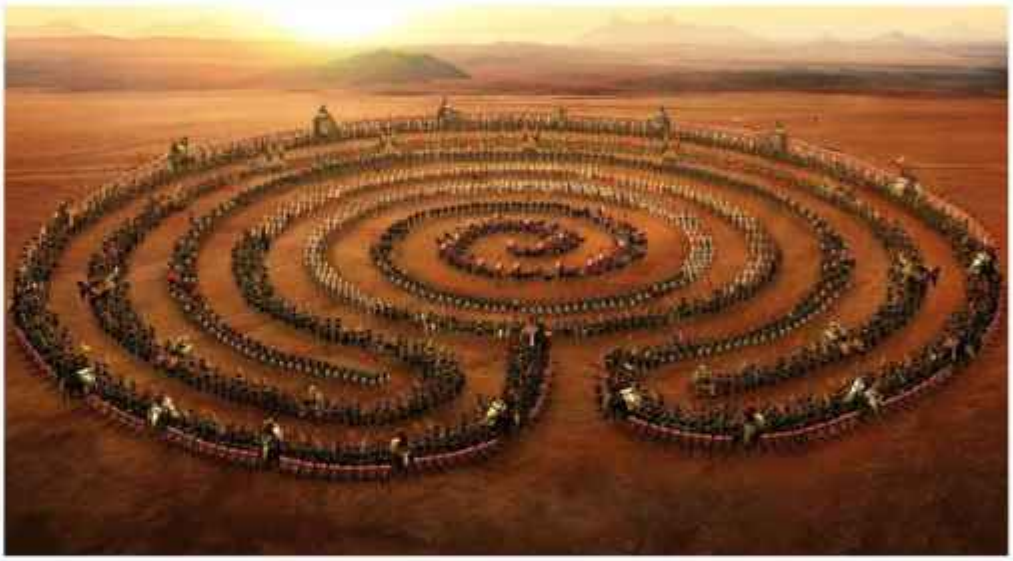

पुणे के एक डॉक्टर व लेखक पद्माकर विष्णु वर्तक ने भी अपनी रिसर्च में माना है कि महाभारत काल में जिस ब्रह्मास्त्र का इस्तेमाल किया गया था, वह परमाणु बम के समान ही था।

डॉ. वर्तक ने एक किताब लिखी है 'स्वयंभू', जिसमें इस बात का जिक्र किया गया है। दरअसल, रामायण और महाभारत काल में ब्रह्मास्त्र सबसे खतरनाक हथियार माना जाता था। उस काल में कई योद्धाओं के पास ब्रह्मास्त्र थे। कहा जाता है कि जो व्यक्ति ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करता था, उसके पास इसे वापस लेने की भी क्षमता होती थी, लेकिन द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को ब्रह्मास्त्र वापस लेने का तरीका याद नहीं था। इसलिए ब्रह्मास्त्र के छूटने के बाद भारी तबाही मची थी। सिंधु घाटी सभ्यता पर हुई रिसर्च के मुताबिक, 5000 से 7000 ईसापूर्व हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो में ऐसे कई नरकंकाल मिले हैं, जिससे पता चलता है कि उन्हें किसी भयंकर अस्त्र से मारा गया था। इसके अलावा यहां ऐसे कई सबूत मिले हैं, जिससे ये पता चलता है कि किसी काल में यहां अत्यधिक मात्रा में रेडिएशन पैदा हुआ था, जितना किसी परमाणु बम के विस्फोट के बाद होता है।)

महाभारत युद्ध का सबसे खतरनाक रणतंत्र था –चक्रव्यूह ।

चक्र – पहिया, व्यूह – गठन । पहिये के जैसे घूमता हुआ व्यूह है चक्रव्यूह। यद्यपि आज का आधुनिक जगत चक्रव्यूह जैसे रणतंत्र से अनभिज्ञ है। चक्रव्यूह को बेधना असंभव था। द्वापर युग में केवल सात लोग ही इसे बेधना जानते थे। भगवान कृष्ण के आलावा अर्जुन, भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, अश्वथामा और प्रदुम्न ही व्यूह को बेध सकते थे। अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह के अंदर प्रवेश करना जानता था।

चक्रव्यूह में कुल सात परत होती थी। सबसे अंदरुनी परत में सबसे शौर्यवान सैनिक तैनात होते थे। ये परत इस प्रकार बनाये जाते थे कि बाहरी परत के सैनिकों से अंदर की परत के सैनिक शारीरिक और मानसिक रूप से ज्यादा बलशाली थे। सबसे बहरी परत में पैदल सैनिक तैनात हुआ करते थे। चक्रव्यूह की रचना एक भूलभुलैया जैसी होती थी, जिसमे शत्रु एक बार फँस गया तो घनचक्कर बनके रह जाता था। इसमें हर परत की सेना घडी की कांटे के जैसे ही हर पल घूमता रहता था, इसमें प्रवेश करने वाला व्यक्ति अंदर ही खो जाता था। महाभारत में चक्रव्यूह की रचना गुरु द्रोणाचार्य ही करते थे। चक्रव्यूह को युग का सबसे सर्वश्रेष्ठ सैन्य दलदल माना जाता था। इस व्यूह का रचना युधिष्ठिर को बंदी बनाने के लिए की गई थी। चक्रव्यूह घूमता हुआ मौत का पहिया भी कहा जाता था। एक बार अंदर जाने वाला बाहर नहीं निकल पाता था। यह पृथ्वी की तरह ही अपने अक्ष पर घूमता था। साथ ही साथ हर परत भी परिक्रमा करती हुई घूमती थी। इसी कारण से बाहर जाने का द्वार हर वक्त अलग दिशा में बदल जाता था, जो शत्रु को भ्रमित करता था।

अद्भुद और अकल्पनीय युद्ध तंत्र था चक्रव्यूह। चक्रव्यूह ठीक उस आंधी की तरह था जो अपने मार्ग में आने वाले हर चीज को तिनके की तरह उड़ा कर नष्ट कर देता था। अभिमन्यु व्यूह के भीतर प्रवेश करना तो जनता था लेकिन बहार निकलना नहीं जनता था। इसी कारण से कौरवों ने छल से अभिमन्यु की हत्या कर दी थी। चक्रव्यूह की रचना शत्रु को मानसिक रूप से इतना कमजोर बना देती थी कि एक ही पल में हजारों शत्रु प्राण त्याग देते थे। संगीत या शंखनाद के अनुसार ही व्यूह के सैनिक स्थिति को बदल सकते थे। कोई भी सेनापति या सैनिक अपने मर्जी से अपनी स्थिति को नहीं बदल सकता था। सदियों पूर्व इतने वैज्ञानिक रीति से इतने अनुशासित रण नीति को अपनाना करना सामान्य विषय नहीं है। महाभारत के युद्ध में केवल तीन बार ही इस व्यूह की रचना की गई थी। जिनमे से एक में अभिमन्यु की मृत्यु हो गई थी। केवल अर्जुन ने श्री कृष्ण की कृपा से चक्रव्यूह को बेधकर जयद्रथ का वध किया था।

हमें गर्व होना चाहिए कि हम उस देश के निवासी हैं जिस देश में सदियों पूर्व के विज्ञान और तकनीक का अद्भुद निदर्शन देखने को मिलता है।

निस्संदेह चक्रव्यूह 'न भूतो न भविष्यति' युद्ध तकनीक था ।

➤ भवानी मिश्र
(एमटीएस)

पारिवारिक मतभेद को जग जाहिर ना करे

महाभारत काल में जब पांडव वनवास काल में थे तो अपना जीवन एक कुटियाँ में रहकर बिता रहे थे जिसके बारे में जब दुर्योधन को पता चला तो उसने पांडवों को नीचा दिखाने के लिए पूर्ण ऐशवर्य के साथ वन में जाने की सोची ताकि वो पांडवो को इर्शा से जलता देख सके । जब दुर्योधन वन के लिए निकला । तब उसकी रास्ते में गंधर्वराज से मुलाकात हुई । उसी वक्त दुर्योधन ने सोचा कि गंधर्वकुमार को हराकर पांडवो को अपनी ताकत का प्रमाण देना का अच्छा मौका हैं । ऐसा सोच उन्होंने गंधर्व राज पर आक्रमण कर दिया लेकिन गन्धर्व राज अत्यंत शक्तिशाली थे । उन्होंने दुर्योधन को हरा दिया और उसे बंदी बना दिया । जब इसकी सुचना पांडवो को मिली तब युधिष्ठिर ने भाईयों को आदेश दिया कि वे जाकर दुर्योधन को वापस लायें। यह सुनकर भीम ने कहा – भ्राता ! यूँ तो दुर्योधन हमारा भाई हैं लेकिन वो सदैव हमारा अहित सोचता हैं तो ऐसे में उसकी मदद क्यूँ की जाये । तब युधिष्ठिर ने उत्तर दिया – भले ! हमारा और हमारे भाईयों का बैर हैं लेकिन वो एक घर की बात हैं जिसे जग जाहिर करना गलत हैं । पारिवारिक झगड़े परिवार में ही रहे उसी में परिवार की इज्जत हैं । इसे यूँ प्रदर्शित करना पूर्वजो का अपमान हैं । बड़े भाई की आज्ञा मान पांडव गंधर्वराज से युद्ध करते हैं और दुर्योधन को छुड़ा लाते हैं । आज कल परिवार में झगड़े बढ़ते ही जा रहे हैं लेकिन ये आम बात हैं परन्तु इनका बखान अन्य के सामने करना गलत हैं द्य इससे जग हँसाई होती हैं और आपके परिवार की कमजोरी सभी के सामने उजागर होती हैं । परिवार में कितना ही बैर क्यूँ ना हो लेकिन विपत्ति में हमेशा अपनों का साथ देना चाहिये ।

आजकल आम बात में परिवार में मनमुटाव होना लेकिन अगर इसकी भनक दूसरों को लगती हैं तो वे आपका मजाक उड़ाते हैं । साथ ही इसका फायदा उठाकर आपको नुकसान भी पहुँचा सकते हैं । जिस तरह से अंग्रेजों ने आपसी मत भेद का फायदा उठाकर कई सालों तक हमारे देश पर राज किया । अगर आप परिवार के झगड़ों की बाते अन्य के सामने करते हैं तो आपके बुजुर्गों एवम उनके संस्कारों पर लोग प्रश्नचिन्ह लगाते हैं जिससे परिवार की साख मिट्टी में मिल जाती हैं । अतः जहाँ तक कोशिश करें पारिवारिक मनमुटाव को परिवार में ही रहने दे उसका बखान कर परिवार की नींव कमजोर ना करें ।

महाभारत में ऐसी कई घटनायें हैं जो हमें ज्ञान का पाठ एवम जीवन व्यवहार का ज्ञान देती हैं । जिन्हें पढ़कर एवं सुनकर सीख सकते हैं । कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं करती अपितु छोटे में बड़ा ज्ञान दे जाती हैं ।

➢आसिफ
ऑफिस (वित्त एवं प्रशा.)

डर है यदि अगर गिर जाने का तो शिखर तुम्हारे लिए नहीं है।

मिट्टी की परतों से
पथरीले रास्तों से
यदि जड़े तुम्हारी घबराती
हो हिम्मत नहीं जुटा पाती
हो तो मेरे नव पल्लव साथी,
यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है,
डर है यदि अगर गिर जाने का तो
शिखर तुम्हारे लिए नहीं है।
मन को सुलझाने में ध्येय नया पाने में
यदि भटकल लगती हो,यदि अड़चन लगती
हो तो छोड़ो ये जाने दो,
यह डगर तुम्हारे लिए नहीं है।
डर है यदि अगर गिर जाने का तो
शिखर तुम्हारे लिए नहीं है।
बार बार की बिखरन और उलझा उलझा
जीवन यदि बेचौनी लाता हो
मन सोच सहम जाता हो,तो छोड़ो यह जाने
दो, ये दुर्ग तुम्हारे लिए नहीं है।
डर है यदि अगर गिर जाने का तो
शिखर तुम्हारे लिए नहीं है।
पाव लगे घावों से,पथ के बहकावों से
यदि पीड़ा पाता हो, आंखों में आँसू लाते हो
तो रास्ता कोई और चुनो
यह शिला तुम्हारे लिए नहीं है ।
डर है यदि अगर गिर जाने का तो शिखर
तुम्हारे लिए नहीं है।
मिट्टी की परतों से पथरीले रास्तो से
यदि जड़े तुम्हारी घबराती हो
हिम्मत नहीं जुटा पाती हो
तो मेरा नव पल्लव साथी
यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है।
डर है यदि अगर गिर जाने का तो
शिखर तुम्हारे लिए नहीं है।

➢ शाहिद
स्टोर स्टेशनरी इंचार्ज

शापित हवेली

यह कहानी है एक प्राचीन और भयानक हवेली की, जो एक छोटे से ग्रामीण क्षेत्र में स्थित थी। गाँव का नाम था "मृत्यु नगरी", और इस गाँव की पहचान उस खतरनाक हवेली से होती थी। इस हवेली का निर्माण सैकड़ों साल पहले एक अत्यंत धनी जमींदार ने किया था। वह अपने समय का एक निर्मम व्यक्ति था। हवेली के निर्माण के दौरान कई निर्दोष मजदूरों की जान जाने की घटनाएँ सामने आईं। कहा जाता है कि उसने हवेली में दबी खजाने की खोज में कई बलिदान दिए थे। इन घटनाओं के बाद हवेली में अजीब और डरावनी घटनाएं घटित होने लगीं और धीरे–धीरे वह दोबारा कभी न खुलने वाली जगह बन गई। सालों बाद एक युवा शोधकर्ता "वीरेंद्र" ने यह तय किया कि वह इस हवेली के रहस्यों का पता लगाएगा। वीरेंद्र का मानना था कि इन घटनाओं के पीछे कुछ न कुछ सच्चाई जरूर है। उसके साथ उसके चार दोस्त, आर्यन, सिमा, रोहित और नेहा भी जाने के लिए तैयार हो गए। एक दिन, सभी मित्र पूरी तयारी के साथ हवेली की ओर निकल पड़े। हवेली पहुँचते ही, उनकी आँखों के सामने एक विचित्र दृश्य था, टूटे–फूटे दरवाजे, खिड़कियों पर जाले, बड़ी–बड़ी दीवारें और चारों तरफ सन्नाटा। हवेली के दरवाजे पर पहुंचकर, वीरेंद्र ने अपनी मशाल जलाई और सब अंदर की ओर बढ़ गए। जैसे ही उन्होंने हवेली में कदम रखा, चारों ओर सन्नाटा बढ़ गया और हल्की हल्की ठंडी हवा चलने लगी। उन्होंने हवेली के विभिन्न हिस्सों की जांच शुरू कर दी। हर कक्ष में अजीब और डरावनी चीजें थीं–टूटे हुए फर्नीचर, जमीन पर खून के धब्बे और दीवारों पर अजीब से निशान। जाँच करते–करते, वे हवेली के एक बड़े हॉल में पहुँच गए, जहाँ एक राजसी सिंहासन पड़ा था। सिंहासन देखकर उन्हें महसूस हुआ कि यहाँ कुछ रहस्यमय है। जैसे ही उन्होंने सिंहासन को छुआ, पूरा कक्ष अँधेरे में डूब गया और हवा में ठंडक बढ़ गई। अगले ही पल, एक भूतिया आकृति उनके सामने प्रकट हुई। वह आकृति उस जमींदार की आत्मा थी। आत्मा ने क्रोधित आवाज में कहा, "इस हवेली में तुम्हारा स्वागत है। लेकिन जो भी मेरे रहस्यों को जानने का प्रयास करेगा, उसे मुझसे सामना करना होगा।" वीरेंद्र और उसके दोस्त डर गए, लेकिन उन्होंने साहस दिखाया। वीरेंद्र ने आत्मा से पूछा, "हम यहां सच जानने आए हैं। तुम्हें किसी विशेष कारण से शापित किया गया है। हम कैसे मदद कर सकते हैं?" आत्मा ने बताया, "मुझे मेरे कुकर्मों की सजा मिली है। मैंने कई निर्दोषों की बलि दी थी। अगर तुम मेरे हाथों मारे गए निर्दुषों की आत्माओं को शांति दिला सकते हो, तो मैं भी इस शाप से मुक्त हो सकता हूँ।" वीरेंद्र और उसके दोस्तों ने आत्मा की बात मानी और ठान लिया कि वे निर्दोषों की आत्माओं को शांति दिलाने के लिए कुछ भी करेंगे। उन्होंने हवेली के तहखानों की ओर कदम बढ़ाए, जहाँ कहा जाता था कि उन निर्दोषों की आत्माएं बंद थीं। तहखाने में प्रवेश करते ही, एक भारी दरवाजा उनके सामने आया, जिसे खोलने के लिए उन्हें ऊपरी मंजिल से चाबी लानी पड़ी। ऊपरी मंजिल पर पहुंचते ही, उन्होंने एक पुराने संदूक में वह चाबी पाई। चाबी लेकर वे तहखाने में वापस आए और दरवाजा खोला। जैसे ही दरवाजा खुला, उनके सामने भयानक दृश्य प्रकट हुआ। तहखाने के अंदर खून के धब्बों से सनी दीवारें, भूमि और जगह–जगह हवेली के निर्माण के दौरान मारे गए मजदूरों की आत्माएँ घूम रही थीं। आत्माएँ बहुत दुखी थीं और उनके चेहरों पर दर्द झलक रहा था। वीरेंद्र ने आत्माओं से बात की और उन्हें शांति दिलाने का आश्वासन दिया। वीरेंद्र और उसके दोस्तों ने आसपास के मंदिर से पवित्र जल और मंत्र लेकर आत्माओं की शांति के लिए पूजा की। पूजा के बाद, आत्माओं के चेहरे पर शांति झलकने लगी और वे धीरे–धीरे अदृश्य हो गईं। आत्माओं के शांति प्राप्त करने के बाद, जमींदार की आत्मा फिर से प्रकट हुई और कहा, "तुम्हारे इस नेक काम से मुझे भी शांति मिली है। मेरी आत्मा अब मुक्त हो रही है।" राजेश ठाकुर की आत्मा ने वीरेंद्र और उसके दोस्तों को धन्यवाद कहा और हमेशा के लिए अदृश्य हो गई। हवेली से भूतिया गतिविधियाँ समाप्त हो गईं और गाँव में फिर से शांति का माहौल लौट आया। वीरेंद्र और उसके दोस्तों की साहसिकता और निष्ठा ने हवेली के रहस्य को उजागर किया और वहां की आत्माओं को शांति दिलाई। इस घटना के बाद 'शापित हवेली' अब 'शांति हवेली' के नाम से जानी जाने लगी और वीरेंद्र और उसके दोस्तों की कहानी हमेशा के लिए यादगार बन गई।

➢राघवेंद्र कुमार सिंह
एमटीएस

देव भूमि उत्तराखंड का रहस्य

उत्तराखंड, जिसे 'देव भूमि' के नाम से जाना जाता है, रहस्यों और अद्भुत सुन्दी दृश्यों का केंद्र है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता के साथ–साथ कई ऐतिहासिक, धार्मिक, और पौराणिक रहस्य जुड़े हुए हैं। हम उत्तराखंड के कुछ प्रमुख स्थल जो इस इस प्रकार हैं :

रूपकुंड झीलः रूपकुंड झील, जिसे 'कंकाल झील' भी कहा जाता है, हिमालय की ऊँचाई पर स्थित है। यह झील अपने आप में एक रहस्य है, क्योंकि यहाँ बर्फ पिघलने पर सैकड़ों मानव कंकाल दिखते हैं। यह कंकाल कब और कैसे यहाँ पहुँचे, इस पर कई कहानियाँ और शोध हुए हैं, लेकिन आज भी यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाया है। माना जाता है कि ये कंकाल नौवीं सदी के लोगों के हैं, जो अचानक आए ओलों के तूफान से मारे गए थे।

जटिंग महलः उत्तरकाशी जिले के किंगरी–बंगरी गाँव में स्थित जटिंग महल भी रहस्य और कथाओं से घिरा है। माना जाता है कि यह महल राजा जटिंग का निवास स्थान था, और यहाँ पर कई अद्भुत और असामान्य घटनाएँ घटित होती थीं। स्थानीय लोग मानते हैं कि इस महल में आज भी राजा जटिंग की आत्मा निवास करती है।

तुंगनाथ मंदिरः तुंगनाथ मंदिर विश्व का सबसे ऊँचाई पर स्थित शिव मंदिर है। यह मंदिर पंच केदार में से एक है और इसे पांडवों द्वारा बनाया गया माना जाता है। यहाँ की एक और रहस्यमयी कहानी है कि यहाँ भगवान शिव का रुद्र रूप स्थित है, जिसे देख पाना कठिन है।

हेमकुंड साहिबः हेमकुंड साहिब, जो सिख धर्म का प्रमुख तीर्थस्थल है, भी एक रहस्यमयी जगह है। यहाँ का वातावरण और यहाँ का जल अपने आप में अद्वितीय हैं। कहा जाता है कि यहाँ गुरु गोविंद सिंह जी ने तपस्या की थी और यहाँ का जल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जाता है।

वैली ऑफ फ्लावर्स (फूलों की घाटी): यह घाटी एक रहस्यमयी और अद्भुत स्थान है, जहाँ विभिन्न प्रकार के रंग–बिरंगे फूल खिलते हैं। यह घाटी मानसून के दौरान खिलती है और इसे देखने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं। इस घाटी का सौंदर्य और यहाँ के फूलों की दुर्लभता एक रहस्य के रूप में मानी जाती है।

मसूरी का लाल टिब्बाः मसूरी का लाल टिब्बा एक रहस्यमयी स्थान है। यहाँ से आप हिमालय की चोटियों का अद्भुत दृश्य देख सकते हैं। यहाँ के स्थानीय लोग मानते हैं कि इस स्थान पर कई रहस्यमयी घटनाएँ होती हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

उत्तराखंड का हर कोना अपनी प्राकृतिक सुंदरता और रहस्यमयी कहानियों के साथ अद्वितीय है। यहाँ के रहस्य, यहाँ के तीर्थस्थल, और यहाँ के अद्भुत प्राकृतिक दृश्य इसे 'देव भूमि' के नाम से सही साबित करते हैं।

➤उमेश सिंह
एमटीएस

दोस्ती

दोस्ती की राह में बिछे हैं ये प्यारे पल,
जीवन के सफर में बनती है यह खास तल,
हर दिन नए रंग, हर बात नयी कहानी,
दोस्ती का साथ है, हर दर्द की दवाई।

मुस्कानों की झील में खो जाते हैं हम,
दोस्तों के साथ जिन्दगी की खुशियों का जाम,
चाहे गम की गहराई हो, या राहों का विश्राम,
दोस्ती की दौरियाँ बस यादों में होती हैं कम।

जीवन की हर मुश्किल में साथ देती ये यारी,
दोस्ती का नाम है, सच्ची और अनमोल प्यारी,
जब साथ हो दोस्तों का, तो हर रास्ता बन जाता सहारा, खुशियाँ बनती हैं अनजाने में, दोस्ती की बात बन जाती है प्यारा।

दोस्ती के बंधन में बसी है खुशियों की बहार,
हर दिन नए रंग देती है, ख्वाबों की उड़ान लेती है बार बार। दोस्ती की मिठास, दोस्ती का संग,
ये रिश्ता है अनमोल, दोस्ती का यही संगीत, हर दिल को भाता है रंग।

➢संजय कुमार
ऑफिस बॉय(परि.–III)

घमंडी का सिर नीचा

नारियल के पेड़ बड़े ही ऊँचे होते हैं और देखने में बहुत सुंदर होते हैं । एक बार एक नदी के किनारे नारियल का पेड़ लगा हुआ था । उस पर लगे नारियल को अपने पेड़ के सुंदर होने पर बहुत गर्व था । सबसे ऊँचाई पर बैठने का भी उसे बहुत मान था । इस कारण घमंड में चूर नारियल हमेशा ही नदी के पत्थर को तुच्छ पड़ा हुआ कहकर उसका अपमान करता रहता । एक बार, एक शिल्प कार उस पत्थर को लेकर बैठ गया और उसे तराशने के लिए उस पर तरह–तरह से प्रहार करने लगा । यह देख नारियल को और अधिक आनंद आ गया उसने कहा – ऐ पत्थर ! तेरी भी क्या जिन्दगी हैं पहले उस नदी में पड़ा रहकर इधर– उधर टकराया करता था और बाहर आने पर मनुष्य के पैरों तले रौंदा जाता थां आज तो हद ही हो गई, यह शिल्पी तुझे हर तरफ से चोट मार रहा हैं और तू पड़ा देख रहा हैं । अरे ! अपमान की भी सीमा होती हैं । कैसी तुच्छ जिन्दगी जी रहा हैं । मुझे देख कितने शान से इस ऊँचे वृक्ष पर बैठता हूँ । पत्थर ने उसकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया । नारियल रोज इसी तरह पत्थर को अपमानित करता रहता । कुछ दिनों बाद, उस शिल्पकार ने पत्थर को तराश कर शालिग्राम बनाया और पूर्ण आदर के साथ उसकी स्थापना मंदिर में की गई । पूजा के लिए नारियल को पत्थर के बने उन शालिग्राम के चरणों में चढ़ाया गया । इस पर पत्थर ने नारियल से कहा, नारियल भाई ! कष्ट सहकर मुझे जो जीवन मिला उसे ईश्वर की प्रतिमा का मान मिला । मैं तराशने पर आज ईश्वर के समतुल्य माना गया । जो सदैव अपने कर्म करते हैं वे आदर के पात्र बनते हैं । लेकिन जो अहंकार/ घमंड का भार लिए घूमते हैं वे नीचे आ गिरते हैं । ईश्वर के लिए समर्पण का महत्व हैं घमंड का नहीं । इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती हैं कि हम घमंड करके स्वयं अपनी छवि का अपमान करते हैं । घमंड मनुष्य जीवन के लिए एक शत्रु की तरह हैं जो हमेशा उसके लिए विनाश का मार्ग बनाता हैं । कहते हैं न, सफलता मिल जाती हैं लेकिन जो इस सफलता पर घमंड नहीं करते वास्तव में वही सफल होते हैं। घमंडी व्यक्ति कितना भी उपर उठ जाए एक दिन वो नीचे आकार गिरता हैं और उस वक्त जो उसका अपमान होता हैं उससे बड़ा श्राप उसके लिए कुछ नहीं होता । घमंड एक ऐसा भाव हैं जिसमे मनुष्य कब फँस जाता हैं उसे इसका भान तक नहीं रहता । इसलिए सदैव अपने जीवन का अवलोकन करना चाहिये । अपने आप को कटघरे में खड़ा कर खुद अपनी करनी, अपने बोले हुए शब्दों का निष्पक्ष न्याय करना चाहिये । और अगर आप खुद को दोषी पाते हैं तो गलती को स्वीकार करे और समय रहते उस गलती के लिए क्षमा मांगे ।

➢मो. आदिल
ऑफिस बॉय (वित्त एवं प्रशा.)

खुद को ज्ञानी मानने वाला सबसे बड़ा अज्ञानी हैं

पुराने वक्त में कबूतर झाड़ियों में अंडे देते थे । लेकिन वे अंडे सुरक्षित नहीं थे। उन्हें अन्य प्राणी खा जाते थे । तब कबूतरों ने चिड़ियों से परामर्श लिया और उन्हें घोंसला बनाने की सलाह दी । कबूतरों ने चिड़ियों से आग्रह किया कि वे ही उन्हें घोंसला बनाना सिखाएं ।अगले दिन चिड़ियाँ कबूतरों को घोंसला बनाना सिखाने आई उन्होंने घोंसला बनाना शुरु किया थोड़ी देर में ही कबूतर बोले – अरे यह काम तो बहुत आसान हैं अब हम बना लेंगे । चिड़ियों को वापस जाने को कहा। फिर कबूतरों ने घोंसला बनाना शुरु किया परन्तु वे नहीं कर पाए । कबूतरों ने फिर से चिड़ियों को बुलावा भेजा । चिड़ियों ने आकर फिर से घोंसला बनाना सिखाया पर आधा ही बनाया थी कि उन्हें फिर रोक दिया और कहा कि इतना तो वह जानते ही हैं अब बना लेंगे । चिड़ियाँ फिर वापस चली गई । कबूतरों ने फिर कोशिश की पर घोंसला नहीं बना पाए। कबूतर फिर से चिड़ियों के पास गए पर इस बार चिड़ियों ने आने को मना कर दिया और कहा "जिसे यह लगता हैं कि उसे सब कुछ आता हैं उसे कोई कुछ नहीं सिखा सकताद्य" घमंडी कबूतर आज तक घोसला बनाना नहीं सीख पाए।

किसी से कुछ भी सीखने के लिए अपने अन्दर के घमंड को मिटाना जरुरी है। अगर पहले से ज्ञानी बनकर ज्ञान प्राप्त करने जायेंगे तब कुछ सीख नहीं पाएंगे। "घड़े में पानी भरने के लिए उसमें पर्याप्त जगह का होना जरुरी हैं, भरे हुए घड़े में पानी डालेंगे तो वह बाहर ही गिरेगा।"

➤अर्जुन
सुरक्षा गार्ड

गलती से सीखकर, सुधारना ही सुखद जीवन का आधार हैं

गलती से सीखकर, सुधरना ही सुखद जीवन का आधार है। एक संत यात्रा पर निकले कई दिनों तक चलने के बाद एक गाँव आया, जहाँ उन्होंने विश्राम करने का सोचा उन्होंने अपने शिष्य से गाँव में खबर भिजवाई कि वे किसी सज्जन परिवार के घर भोजन करेंगे। संत को छुआछूत में विश्वास था । शिष्य यह संदेशा लेकर गाँव के हर एक घर के दरवाजे को खटखटाता हैं और कहता हैं। सज्जन मेरे गुरुवर आज इसी गाँव में ठहरे हैं और उनका यह व्रत हैं कि वे किसी सज्जन शुद्ध आचरण वाले व्यक्ति के घर का ही भोजन ग्रहण करेंगे। क्या आप उन्हें भोजन करवाएंगे ? इस पर उस गाँववासी ने विनम्रता से हाथ जोड़कर कहा, हे बंधु मैं नराधम हूँ। मेरे आलावा इस गाँव में सभी वैष्णव हैं फिर भी अगर आपके गुरु मेरे घर आश्रय ले तो मैं खुद को भाग्यशाली मानूंगा । शिष्य गाँव के हर एक घर गया पर सभी ने खुद को अधम और दूसरों को सज्जन कहा । शिष्य ने गुरु के पास जाकर पूर्ण विस्तार से पूरी घटना सुनाई । यह सुन गुरु गाँव में आये और उन्होंने सभी से क्षमा मांगी कहा – आप सभी सज्जन हैं अधम तो मैं खुद हूँ जो ईश्वर के बनाये इंसानों में भेद कर रहा हूँ – आज आप सभी के साथ रुकना मेरे लिए सौभाग्य होगा इससे मेरा अंतःकरण शुद्ध होगा।

कहानी की शिक्षा :

इन्सान भगवान के बनाये हैं। इन में कोई भेद नहीं होता । यह भेद देखने वाले की दृष्टि में होता हैं । यह संसार भगवान की देन हैं । इसमें ऊँचा नीचा देखने वाले ही छोटी सोच के लोग हैं। अपने आपको को इस तरह के अज्ञान से दूर करे जब भी अपनी गलती का अहसास हो उसे सुधारे। गलती सभी से होती है । उसे स्वीकार कर ठीक करने वाला महान होता है।

➤सुन्दर
सुरक्षा गार्ड

आन की बात

किसी गांव में एक ठाकुर रहता था। वह अपनी आन और शान पर मिटने वाला आदमी था। अपनी आन की खातिर वह रूपये पैसों को धीरे–धीरे पानी के समान बहा देता था। पैसे को पानी के समान बाहने के कारण ठाकुर का सारा पैसा समाप्त हो गया। अंत में लाचार होकर वह नगर के सेठ के पास पहुंचा। सेठ से बोला आपको गिरवी रखने को मेरे पास कुछ भी नहीं है। खेती की जमीन गिरवी रखकर में अपनी नाक नहीं कटवा सकता। हम ठाकुर अपनी आन के लिए प्राण भी दे सकते हैं। सेठ बोला अच्छा तो आप अपनी मूँछ का एक बाल ही गिरवी रख दीजिए। ठाकुर ने अपनी मूँछ का एक बाल सेठ को दे दिया। सेठ ने उस बाल को चांदी की एक डिबिया में बंद कर दिया। सेठ ने ठाकुर को एक हजार रूपये दिये । ठाकुर ने अपनी मूँछ के बाल में अपनी आन गिरवी रखकर गया था और उसे छुड़ाने के लिए वह कड़ी मेहनत करने लगा। अंत में उसे अपनी आन के साथ सम्मान भी मिला।

➢निजूम बोरा
सुरक्षा गार्ड

उत्तराखंड

जब भी उत्तराखंड क जिक्र होता है,

जिक्र होता है तो पहाड़ का खूबसूरत वादियों का, गंगोत्री, यमनोत्री, बद्री–केदार का साथ ही, गोमुख, उदगय माँ गंगा का।

बागेश्वर के बागनाथ धाम तो, अल्मोड़ा में बसी नंदा देवी का, चमोली को शोभित करता बद्रीनाथ वहीं, हरिद्वार में माँ गंगा की धार का।

नैना देवी की नगरी नैनीताल की छटा, सैलानियों का मानो सपना है, हजारों त्यौहार दे अपनेपन का मिसाल हाँ मेरा उत्तराखंड सबका अपना है।

कर्म प्रधान भूमि में महके हैं वीर जवानों की, स्वर्ग का रास्ता, महादेव का वास्ता जिससे, बादलों के पार, माँ गंगा की धार, देवों का वास जहाँ उत्तराखंड में हमारा निवास वहाँ।

ऋषि मुनियों की तपोभूमि, देवों की पंक्ति धरा, माँ का आंचल है, हाँ यही तो मेरा उत्तराखंड है,

सुंदर हिमालय जिसका ताज है,

यह ही हमारा उत्तराखंड है।

➢बिशन सिंह
केंटिन इंचार्ज

कुछ काम करो

आओ हम कुछ काम करें,
जीवन देश के नाम करें।
इस मिट्टी में जन्म लिया है,
जीवन इसने हमें दिया है,
अब इस ऋण को दूर करें,
आओ हम कुछ काम करें।

भोजन हमको मिले यहाँ से,
वायु प्राण भी मिला यहाँ से,
मातृभूमि के ऋणी बने हैं,
अब हम न आराम करें।
आओ हम कुछ काम करें।

जो जहाँ है वहीं काम करो,
अपने देश का नाम करो,
दिन–प्रतिदिन उन्नति हो इसकी,
ऐसा हम प्रण आज करें,
आओ हम कुछ काम करें।

➤मनीष कुमार
सफाई कर्मचारी

मेहनत

मेहनतकश इंसान करेगा मेहनत हरदम,
कामचोर इंसान भरे चोरी में दमखम।
मेहनत करने एक मेहनती पालता है परिवार,
मेहनत करे जा कहीं भी देखे ना घर द्वार।
चीटी को देखो मेहनत कर के भोजन भंडार बनाती है,
आवश्यकता होने पर फिर अपना काम चलाती है।
जीव–जंतु या पौधे हों, या पाया हो मानव जीवन
मेहनत करने से ही सबका, चलता अपना जीवन ।
हक छीनो यदि किसी और का, उस पर सच्चा अधिकार नहीं है,
बिन मेहनत कुछ मिले समझ लो, उससे कोई सरोकार नहीं है।
सबके लिए उदाहरण बन, आओ, सौगंध उठाएँ,
आगे से अब बिन मेहनत के, हम कुछ भी ना खाएँ।

➤रवि
सफाई कर्मचारी

शेर और हिरण

एक जंगल में एक हिरण बचपन से ही अपने माँ बाप से बिछुड़ जाता है। वह एक पेड़ के पास हरी घास खा रहा था। तभी उसे एक शेर दिखाई देता है । वह डर जाता है शेर उससे कहता है। तेरे बाकी साथी कहाँ है और तू तो बहुत बहादूर लगता है तो मुझे देखकर भी नहीं भागा। हिरण उससे कहता है मैं अपने झुंड से बिछुड़ गया हूँ। आप मुझे खा लोगे तो आपका पेट नहीं भर पायेगा आप मुझे अपने बुढ़ापे के लिए अपने साथ रख लो जब आप बुढ़े हो जाओगे तो आप शिकार नहीं कर पाओगे। तब आप मुझे खा लेना। मैं जब तक इतना बड़ा हो जाऊंगा कि आपकी काफी दिनों की भूख मिटा पाऊंगा। तब शेर कहता है, लेकिन तब तो तू आसानी से भाग जायेगा। हिरण कहता है, आप मुझ पर विश्वास करें मैं कभी झूठ नहीं बोलता। शेर को उसकी बात समझ आ जाती है। वह उसे अपने घर ले आता है। उसके लिए हरी घास का इंतजाम करता है। वहां रहते–रहते वह शेर की सेवा करने लगता है।

धीरे–धीरे शेर बूढा हो जाता है । हिरण खा पीकर दोगुना हो जाता है। शेर एक दिन शिकार पर नहीं जाता है तो हिरण कहता है कि मुझे खा लिजिए। यह बात सुनकर शेर कहता है कि मैं तुझे नहीं खा सकता। क्योंकि तुने मेरी इतनी सेवा की की है, इतना तो अपना बेटा भी नहीं करता। मैंने तुझे अपना बेटा मान लिया है। वह हिरण शेर को दूसरे जानवरों का बचा हुआ मांस लाकर देता है जिससे उसका गुजारा होता था और दोनों मजे से रहने लगते हैं।

शिक्षाः सच्चाई और ईमानदारी का फल अवश्य मिलता है।

➤रंजीत कुमार
माली

श्री रामधारी सिंह "दिनकर"

सुप्रसिद्ध साहित्यकारः राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर" के जन्मदिवस – 23, सितम्बर के शुभअवसर पर उनकी स्मृति में प्रस्तुत उनके व्यक्तित्व की झलक

स्वतंत्रता पूर्व के विद्रोही कवि रामधारी सिंह "दिनकर" आजादी के बाद राष्ट्रकवि के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी कविताओं में ही नहीं, बल्कि उनके निबंधों में भी राष्ट्र–चिंतन की झलक मिलती है। 23 सितम्बर, 1908 को सिमरिया ग्राम, मुंगेर, बिहार में जन्में दिनकर छायावादोत्तर–कवियों की पहली पीढ़ी में से एक थे। मैट्रिक के बाद 1928 में दिनकर पटना आ गए और इतिहास में ऑनर्स के साथ 1932 में बी.ए. किया। अगले ही वर्श एक नए खुले स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। वर्श 1934 में उन्होंने बिहार सरकार के अधीन सब–रजिस्ट्रार के पद पर कार्य किया। वर्ष 1947 में वे बिहार सरकार में प्रचार विभाग के उपनिदेशक और वर्ष 1950 में मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिंदी विभागाध्यक्ष हुए। वर्ष 1952 में वे राज्य सभा के सदस्य बने। वे 12 वर्षों तक सांसद रहे। फिर वे भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने। वे भारत सरकार के हिंदी सलाहकार भी रहे।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, दिनकर जी गैर–हिंदी भाषियों के बीच हिंदी के सभी कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय थे और अपनी मातृभाषा से प्रेम करने वालों के प्रतीक थे। हरिवंशराय बच्चन ने एक बार दिनकर जी के बारे में कहा था कि उन्हें एक नहीं, चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें गदय, पदय भाषा और हिंदी भाषा की सेवा के लिए अलग–अलग ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाना चाहिए।

रचनाएं :

अलोचनात्मक ग्रंथ – मिट्टी की ओर, पंत–प्रसाद और मैथिलीशरण, काव्य की भूमिका।
सांस्कृतिक ग्रंथ – संस्कृति के चार अध्याय, हमारी सांस्कृतिक एकता, भारतीय एकता, राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रीय एकता
निबंध साहित्य – अर्धनारीश्वर, वट पीपल, साहित्य मुखी, राष्ट्र भाषा आंदोलन और गांधी जी, विवाह की मुसीबतें, आधुनिक बोध।
यात्रा साहित्य – देश विदेश, मेरी यात्राएं
डायरी साहित्य – दिनकर की डायरी
कथा और गदय काव्य – उजली आग
उनकी रचनाओं की विशेषताओं की झलक : –

1. रचनाओं में राष्ट्रपिता की प्रेरणा
2. रचनाएँ साहित्य की धरोहर जैसी है
3. गद्य लेखन में उत्कृष्टता है
4. लेखन में निर्भीकता है
5. अभिव्यक्ति बेवाक तरीके से की गई है
6. लेखन में प्रासंगिकता है।

पुरस्कार एवं सम्मान – **कुरुक्षेत्र** पर साहित्यकार संसद (इलाहाबाद) पुरस्स्कार (1948), नागरी प्रचारिणी सभा का दविवेदी पदक (दो बार), उर्वशी पर उत्तर प्रदेश सरकार का पुरस्कार, नागरी प्रचारिणी सभा का **रत्नाकर पुरस्कार, बलदेव दास** पदक, संस्कृति के चार आध्याय पर **साहित्य अकादमी पुरस्कार** (1960), **पद्मभूषण** (1959), काव्य नाटक **उर्वशी** पर वर्ष 1972 में ज्ञानपीठ पुरस्कार ।

➢प्रस्तुतिः राजभाषा अनुभाग

हिन्दी दिवस समारोह के छाया चित्र

हिन्दी दिवस के समापन समारोह में महानिदेशक महोदय द्वारा दीप प्रज्ज्वलन करते हुए

हिन्दी दिवस के समापन समारोह में सरस्वती वंदना प्रस्तुति

हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय

हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय

हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए महानिदेशक महोदय

21 जून, 2024 को आयोजित 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दीवस की कुछ झलकियां

हिन्दी कार्यशालाओं की झलकियां

1 से 2 अक्तूबर 2023 के दौरान आयोजित स्वच्छता अभियान कार्यक्रम की झलकियां

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

15 एनबीसीसी टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली–110066
दूरभाष सं.011–26716930,35 वेबसाइट: www.pmgsy.nic.in ईमेल: nrrda@nic.in, nrrda@pmgsy.in